गीतांजलि

संकलनकर्त्ता, संपादक एवं प्रकाशक

धर्मपाल कपूर

बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

संस्करण : 2017
प्रतियाँ :

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

टंकण एवं संयोजन : **अभिनव इंटरप्राइजिज, मो. +91-94683 40497**
मुद्रक :

भूमिका

प्रस्तुत संकलन में हिन्दी, पंजाबी तथा उर्दू के विभिन्न कवियों की रचनाओं के गंभीर अध्ययन के उपरांत चुनिंदा गीतों, भजनों, कविताओं आदि का संकलन मैंने कई वर्षों की कड़ी मेहनत एवं सच्ची लगन के पश्चात् किया है ताकि आधुनिक कालीन हिन्दी भाषा के प्रेमी एवं भजनोपदेशक इसका अध्ययन करके आनंद-विभोर हो जाये। यदि इस संग्रह को प्रभुभक्ति, राष्ट्रप्रेम के तमाम फूलों का इत्र कहा जाये तो इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति न होगी। वस्तुतः इसकी ध्वनि मात्र के श्रवण से प्रायः प्रत्येक व्यक्ति की हृदय-वीणा झंकृत हो उठती है और होठों पर स्वर स्वतः थिरकने लगते हैं। इन गीतों के शब्दों का ताल, मेल, लय और भाव इतने प्रभावशाली एवं आकर्षक हैं कि ये अन्तरात्मा को छू जाते हैं और अंतर में रहे हुए मानवीय सद्‌गुणों को उघाड़ने की पूर्ण क्षमता रखते हैं।

वस्तुतः संगीत की अपनी ही एक अलौकिक विशेषता है कि इस पर न केवल मानव ही अपितु पशु, पक्षी, यहाँ तक कि भयानक जीव जन्तु भी मोहित हो जाते हैं। विषधर सांप भी वीणा की मधुर लय पर मोहित होकर स्वयं को समर्पित कर देता है और जितनी देर वीणा बजती रहती है, वह अपनी क्रुद्धवृत्ति को भूल जाता है। यदि भयंकर विषधर सांप पर मधुर लय का इतना प्रभाव हो सकता है, तो मानव तो मानव है, जोकि सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उस पर तो अवश्य ही मन से सीधा सम्पर्क उत्पन्न करने वाले एवं अंतर की गहराइयों में उतरने वाले भावनात्मक शब्द भी उसकी अंतरात्मा को छू जाते हैं, झंझोरते एवं जागृत भी करते हैं।

गीतकार साम्प्रदायिक भावों का एकाकार करके वास्तविक धर्मधारा का प्रकटीकरण कर देता है जिसमें प्रत्येक मानव समानतः डुबकियां लगा कर अपना तन-मन शुद्ध करके उस पावन परमस्वरूप को पाता है जिसकी प्राप्ति के लिये 84 लाख योनियों में भटकता चला आ रहा है।

शास्त्राध्ययन के लिये शिक्षित होना अनिवार्य है। परन्तु सरस गीतों के लिये जिनके एक-एक स्वर में मानवता के मोती मणके जड़े हुए हैं और ज्ञानगंगा का अटूट भण्डार भी निहित है। पाण्डित्य की कोई आवश्यकता नहीं है। इन गीतों की भाषा सर्वसाधारण लोक

भाषा है । अतः ये अनपढ़ व्यक्ति को भी कंठस्थ हो जाते हैं । इनके भाव स्वतः अंतर में उतर कर मानवता की भीनी-भीनी महक फैलाते हैं जोकि सारे धर्म-ग्रंथों का सार एवं लक्ष्य है। मिट्टी के तेल का परिमार्जन करने पर उसकी कई अवस्थाएं बदलती रहती हैं और क्षमतानुसार काम में लाया जा सकता है। पैट्रोल इसकी पूर्ण शुद्धावस्था है जोकि वायुयान की उड़ान में ले जा सकती है । ठीक इसी प्रकार ये गीत भी शास्त्रों का सारामृत है । जिनके आचरण में ये गीत चरितार्थ होते हैं । वे डीजल पर चलने वाली गाड़ियों की भाँति पृथ्वी पर न रंग कर वायुयान की भाँति उड़ान भर कर आवागमन से सदा के लिये मुक्त हो जाते हैं । मैं उन सभी लेखकों एवं कृतिकर्ताओं का भी अत्यन्त धन्यवादी हूँ जिनकी कृतियों से संदर्भ उद्धृत किये गये हैं ।

अतः प्रस्तुत संकलन के कुछ फूल आप भी देखिए और झूम-झूम कर आनंद विभोर हो जाइये । प्रस्तुत संग्रह का संकलन बड़ी सावधानी से किया गया है । परन्तु संसार का प्रत्येक व्यक्ति अल्पज्ञ एवं अल्पशक्तिमान है । अतः यदि कोई भी त्रुटि रह गई हो तो मैं पाठकगण से क्षमा चाहूँगा ।

प्रस्तुतः पुस्तक के लिखने में मुझे सर्वश्री लाल चन्द चौहान, नरेन्द्र आहूजा 'विवेक', सत्यपाल मोदी, रोशनलाल अग्रवाल, नरेश बंसल, जयकिशन आदि ने सहयोग प्रदान किया है । अतः इन मित्रों का स्तवन न करना मेरी कृतघ्नता होगी । विशेषतः श्री लाल चन्द चौहान ने इस पुस्तक के सम्पादन में विशेष योगदान दिया है । जिस अचिंत्य शक्ति प्रभु की असीम अनुकम्पा से मैं अपने संकल्प को मूर्तरूप दे सका उसका भी कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ ।

धर्म पाल कपूर

(धर्मपाल कपूर)

बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.

कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,

पंचकूला-134112 (हरियाणा)

फोन : 0172-2567845

मोबाइल : 0-9356301618

तिथि : 31-3-2016

प्रस्तावना

श्री धर्मपाल कपूर बड़े ही स्वाध्यायशील एवं लेखक कार्य में अत्यन्त रुचि रखते हें। धार्मिक पुस्तकें एवं ऐतिहासिक पुस्तकों का स्वाध्याय व मनन करके महत्वपूर्ण लाभप्रद प्रसंगों का संकलन करके पुस्तक के रूप में उनको प्रकाशित कर निःशुल्क (बिना कोई मूल्य वसूल किये) लगभग 14 पुस्तकों का प्रकाशन कर चुका है। इसके अतिरिक्त लगभग 26 पुस्तकों को प्रकाशन के तैयार किया जा रहा है, जिनमें गीतांजलि भी सम्मिलित है। गीतांजलि पुस्तक लगभग 130 पृष्ठों में विभिन्न कवियों द्वारा लिखे गये गीत एवं भजनों का संकलन किया गया है। श्री नत्थासिंह 'निदोष' के चुने हुए 12 गीत हैं, इन गीतों में ईश्वर भक्ति, देशभक्ति, महर्षि दयानन्द के समाज सुधार के कार्यों एवं मानवता के कार्यों आचार व्यवहार का उल्लेख बड़े ही काव्य ढंग से किया गया है।

पंडित प्रकाशचन्द्र कविरत्न के 10 भजन शामिल हैं। पंडित चमूपमति जी एम.ए. की ग़ज़लें, पंडित सत्यपाल पथिक की काव्य रचनायें जो वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत हैं। जिनमें ईश्वर प्रार्थना, ईश्वर के सत्यस्वरूप, गुण, कर्म, स्वभाव का बड़े सुनिश्चित ढ़ग से प्रतिपादित किया गया है। जो आर्य जगत् के जाने माने विद्वान हैं। इन गीत, भजनों के माध्यम से वेद में ईश्वर के नियमों की पालना, ईश्वर सृष्टिकर्ता, सबका पालनहार, एक ईश्वर जो सारे ब्रह्माण्ड का स्वामी है उसके सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के समाज सुधार, वेद विद्या प्रचार, पाखण्ड का पर्दाफाश बड़े ही सरल शब्दों में किया गया है। उनकी ज्ञानप्रद 45 रचनाओं को उस लघु पुस्तक में स्थान दिया गया है। कवि विद्यानन्द विदेह जी की भी सात रचनाएँ हैं।

कवि नन्दलाल जी जो आर्यसमाज के उपदेशक व भजनीक हैं, उनके भी सात भजन बड़े ही ज्ञानवर्धक हैं। भजनों के माध्यम से वैदिक विचारधारा पर प्रकाश डालने का बड़े ही खूबसूरत ढंग से प्रयास किया गया है। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी जो आर्यसमाज के बड़े ही विख्यात् विद्वान् हैं, उनकी स्मृति का सब लोहा मानते हैं, यदि आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द जी के परोपकारों की गाथा सुननी हो तो उनसे सुनें। उनके गीत भी पुस्तक की सूची में सम्मिलित हैं। श्री धर्मपाल कपूर जी ने भी रामचरितमानस के

सम्बन्ध में व गीता पर कविता के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य कविताएं एवं भजन अनेक विद्वानों एवं विचारकों के जो बड़े ही ज्ञानवर्धक हैं। उनको भी पाठकों की ज्ञानवृद्धि के लिए शामिल किया है। अन्य विद्वानों के लगभग 56 गीत 'गीतांजति' पुस्तक में उद्धृत हैं। श्री नरेन्द्र आहूजा विवेक जी के 55 दोहे सम्मिलित हैं जो मानव के चरित्र निर्माण में सहायक हैं। हनुमान चालीसा को भी लेखक ने अपनी कृति में स्थान दिया है। कुछ गीत वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत हैं तथा कुछ वैदिक विचारधारा के प्रतिकूल हैं। यह लेखक के ऊपर निर्भर करता है कि उनकी रुचि किस प्रकार की विचारधारा में है। पुस्तक पाठकों के ज्ञानवर्धन में बड़ी ही लाभदायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक में मानव सुधार, समाज सुधार, राष्ट्र सुधार, आचरण सुधार, ईश्वर का सत्य स्वरूप, गुण-कर्म-स्वभाव, ईश्वर आज्ञा पालन, माता-पिता के प्रति कर्तव्य आदि पर गीत एवं भजनों के द्वारा ज्ञान का प्रकाश किया गया है। जो वेद शास्त्र में अधिक रुचि रखते हैं उनके लिए यह पुस्तक विशेष लाभकारी सिद्ध होगी।

मैं श्री धर्मपाल कपूर जी के प्रयास की सराहना करता हूँ। वह पुस्तकों के माध्यम से वेद शास्त्र एवं ऋषि प्रणीत ग्रंथों के सार का संकलन एवं लेखन करके बड़ा ही उपकारी कार्य कर रहे हैं। यह बड़े ही परिश्रम एवं लगन का कार्य है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वर इन्हें लम्बी आयु व स्वस्थ शरीर प्रदान करे, ताकि वे अधिक समय तक समाज को अपना साहित्य प्रदान कर सकें जिससे समाज की ज्ञान में वृद्धि हो सके और इसी प्रकार उदार भावना से मानवता की सेवा करते रहें।

तिथि : 17-7-2016

लालचन्द चौहान
कोठी नं. 591, सैक्टर 12,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2563079
मोबाइल : 0-9814881501

विशेष सूचना

1. स्वाध्याय, मनन और आत्मसात्।
2. पाठकगण पुस्तक पढ़ने के पश्चात् किसी भी स्वाध्यायशील मित्र को इसे देने की कृपा करें।
3. कोई भी जिज्ञासु अपनी इच्छानुसार इसकी प्रतियाँ फोटोस्टेट करवा कर स्वाध्यायशील मित्रों में प्रचार-प्रसार के लिये बाँट सकता है।
4. पुस्तक केवल प्रचारार्थ लिखी गई है और इसका मूल्य सदुपयोग है।
5. सर्वाधिकार लेखकाधीन।

धर्मपाल कपूर
बी.ए. ऑनर्स, एम.ए.
कोठी नं. 1135, सैक्टर 11,
पंचकूला-134112 (हरियाणा)
फोन : 0172-2567845
मोबाइल : 0-9356301618

विषयसूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	नत्थासिंह 'निर्दोष'	1
2.	पंडित प्रकाशचन्द्र कविरत्न	13
3.	पंडित चमूपति जी एम.ए.	28
4.	पंडित सत्यपाल 'पथिक'	33
5.	सेवक	72
6.	विद्यानंद 'विदेह'	77
7.	नंद लाल	81
8.	प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	86
9.	धर्मपाल कपूर	88
10.	फुटकर	89

1. नत्थासिंह 'निर्दोष'

(1) भक्ति

ज़र्रे ज़र्रे में है झांकी भगवान् की
किसी सूझ वाली आँख ने पहचान की ।
नामदेव ने पकाई रोटी, कुत्ते ने उठाई
पीछे घी का कटोरा लीये जा रहे ।
बोले रूखी तो न खाओ, स्वामी घी तो लेते जावो,
रूप अपना क्यों मुझ से छुपा रहे ।
तेरा मेरा एक नूर, फिर काहे को हुजूर
तूने शक्ल बनाई यह श्वान[1] की,
मुझे औढ़नी[2] उड़ादी इन्सार की । ज़र्रे ज़र्रे.....
निगाह मीरा की निराली, पीके ज़हर की प्याली,
ऐसा गिरधर बसाया हर स्वांस में ।
आया जब काला नाग, बोली धन्य मेरे भाग,
प्रभु आये आज सांप के लिबास[3] में ।
आओ आओ बलिहार, काले कृष्ण मुरार,
बड़ी कृपा है, कृपा निधान की ।
धन्यवादी हूँ मैं आपके एहसान की । ज़र्रे ज़र्रे
इसी तरह सूरदास, निगाह जिन की थी खास,
ऐसा नयनों में था नशा हरि नाम का ।
नयन हुए जब बंद, तब मिला वह आनन्द,
आया नज़र नज़ारा घनश्याम का ।
हर जगह वह समाया, सारे जग को दिखाया,
आई आँखों में वह रोशनी ज्ञान की,
देखी झूम झूम झलकियाँ जहान की । ज़र्रे ज़र्रे

---

1. कुत्ता, 2. चुनरी, 3. चोला

गुरुनानक कबीर नहीं जिन की नज़ीर[1],
देखा पत्ते पत्ते में निरंकार को ।
नज़दीक और दूर वहीं हाजर हजूर[2],
यही सार समझाया संसार को ।
'नत्थासिंह' यह जहान, शहर गाँव बियाबान,
मेहरबानियां हैं उसी मेहरबान की ।
सारी चीजें हैं यह एक ही दुकान की । ज़र्रे ज़र्रे

(2) गीत

किसी दिन देख लेना तुझको ऐसी नींद आएगी,
तू सोया फिर न जागेगा, तुझे दुनियाँ जगाएगी ।
तुझे संसार के खूंटे से, जिसने बांध रखा है,
तेरे सोते ही वो ममता की रस्सी टूट जाएगी । तू सोया फिर.... ।1 ।
तेरे घर वाले जिस सूरत से, इतना प्यार करते हैं,
यह सूरत उन्हें फिर भूत बन करके डराएगी । तू सोया फिर .... ।2 ।
तेरी हस्ती को जिस ख़लकत[3] ने पस्ती[4] में मिलाया हैं,
वो ही बेकदर दुनियाँ, तुझको कन्धों पे बिठाएगी । तू सोया फिर.. ।3 ।
तू आँखें फेरेगा तो दुनियाँ भी मुंह फेर जाएगी,
जो आँखों पे बिठाती थी वही आँखें दिखाएगी । तू सोया फिर... ।4 ।
जो कहते थे मरेंगे साथ, तो थोड़े कदम चलकर,
वो मोह मटकी भी तिनके तोड़ते ही टूट जाएगी । तू सोया फिर.. ।5 ।
जिन्हें समझा है 'नत्था सिंह' तू अपने वो तो लौटेंगे,
तेरी नेकी बदी ही अन्त तेरे साथ जाएगी । तू सोया फिर.... ।6 ।

---

1. उदाहरण, 2. परमात्मा, 3. प्रजा, 4. कमी

(३) गीत

कैसी प्रभु ने कयानात बांधी ।
एक दिन के पीछे एक रात बांधी साथ-साथ बांधी । कैसी
कभी थकते नहीं है यह घोड़े जो कि सूर्य के रथ में हैं जोड़े,
ब्याहने रजनी चली चांद दूल्हा सजा,
साथ चन्द्रमा के तारों की बारात बांधी । कैसी०
जल के सीने पे धरती बिछाई जैसे ही दूध ऊपर मलाई,
उस पे सबज़ा बिछा, सब को ऐसा लगा,
जैसे फ़र्श ने हरी हरी बानात बांधी । कैसी०
कैसी खूबी से बाँधे यह मौसम,
सर्दी गर्मी हेमन्त या ग्रीष्म,
यह बहार का समां और यह पतझड़ ख़िजां,
हवा बादलों के बीच बरसात बाँधी । कैसी०
पंछी जलचर या जन्तु चौपाये तूने सब के हैं जोड़े बनाये,
नाग और नागनी राग और रागनी,
साथ पुरुष के यूं स्त्री की जात बांधी । कैसी०
तू है सब का पिता तू ही मात है,
जो समझ में न आये तू वह बात है,
सौ की इक बात है, तेरी क्या बात है,
तू ने हर बात में है कोई बात बाँधी । प्रभु तूने०
'नत्थासिंह' है बेअन्त तेरी माया,
जग के कण-कण में तू है समाया ।
जग से बार नहीं फिर भी ज़ाहिर नहीं,
अपने दामन से ऐसी करामात बांधी । प्रभु तूने०

(4) ग़लतफ़ैहमी

सब से हूँ बढ़ा चढ़ा सुन्दर स्वरूप बढ़ा,
ग़लतफ़ैहमी बन्दे के यह मन में समा गई ।
हिरण के जो नैन देखे ऐसा नशा हरण हुआ,
नैन हुये नीचे नींद लज्जा की आ गई ।
तोते की जो नाक देखी कट गई नाक ऐसी,
अपनी ही नाक खुद पे नाक भौं चढ़ा गई ।
बगुले की गर्दन ने लटका दिखाया ऐसा,
सुन्दरी की गर्दन को वह नीचे लटका गई ।
हाथी मस्ताने ने दिखाई चाल मस्त ऐसी,
चाल पहलवान की भी देख लड़खड़ा गई ।
वीरता पर इतराया[1] बन्दा पर शेर देखा,
बन्दे की बहादुरी पसीने में नहा गई ।
मोर की पोशाक जब कुदरती रंगीन देखी,
पहनी हुई रेशमी शनील शर्मा गई ।
गज मणी नाग मणी देखी अनमोल जब,
पेटी धनवानों की लपेटी सकुचा गई ।
मोतियों की हंस को खुराक जब खाते देखा,
राजों की रसोई पे वह चौंका ही फिरा गई ।
बुलबुलों व कोयलों की मधुर जो आवाज़ सुनी,
बैठी राग बाग़ में लता मुर्झा गई ।
चतुर चालाक बन्दे ने जो काग घाग देखा,
थका यह दिमाग़ झाग मुंह के आगे आ गई ।
मूर्खता व हठ पे इतराया जब यों गधा बोला,
यह तो मेरी चीज़ थी यह तुझे कैसे भा गई ।
हर चीज में ही इंसान से हैवान[2] बड़ा,
आदमी की जात पशुओं से मात[3] खा गई ।

---

1. गर्व करना, 2. राक्षस, 3. हार गई ।

एक खूबी थी कि नेकी बदी को बिचारे गा यह,
वह भी खूबी राम जाने कौन डाइन खा गई ।
'नत्थासिंह' यश न कमाया न ध्याया नाम,
तूझे पैदा होते फिर मौत क्यों न आ गई ।

(5) गीत

आज खुदगर्ज़ी[1] के सब प्यार नज़र आते हैं,
आदमी सौ में से चार नज़र आते हैं ।
जो देखने को नर्म दिल हैं भोले भाले है,
जो फूल हृदय के कोमल सुगन्धि वाले हैं ।
उनके भी पहलू में खार[2] नज़र आते है.... ।1 ।
जो सिक्के खनकते हैं उनमें खरा कोई नहीं,
कहते हैं तुझ पे मैं मरता हूँ मरा कोई नहीं ।
वैसे सब मरने को तैयार नज़र आते हैं.... । ।2 । ।
थैले में क्या है तो बोले, क़ुरान है इस में,
या इसमें गीता है वेद और पुरान है इसमें ।
खोलकर देखो तो अखबार नज़र आते हैं.... । ।3 । ।
दिल में कुछ और अमल और कुछ चुबां पर और,
घर में कुछ और बाहर और कुछ दुकां पर और ।
हर समय हर घड़ी होशियार नज़र आते हैं... । ।4 । ।
लहू ग़रीब का चूसा खरीदी कार अगर,
नहीं कमाई पसीने की ऐ सरकार अगर ।
तो कार में बैठें भी बेकार नज़र आते हैं.... । ।5 । ।

---

1. स्वार्थ, 2. कांटे ।

वैरायटी शो में टिकट सौ का हो सबसे आगे,
नाच मुजरे में भी चुस्ती में रात भर जागे ।
कथा में जाने को बीमार नज़र आते है.... । ।6 । ।
उमर की नैय्या में पापों का भर रहा पानी,
'नत्थासिंह' करता है भव सिन्धु में जो मनमानी,
तो डूब जाने के आसाार नज़र आते है... । ।7 । ।

(6) गीत

न भस्मी रमाने से, न रेशमी दुशालों से,
बन्दा पहचाना जाता है, सिर्फ आमालों[1] से ।
देखने को कोई सुन्दर है या बदसूरत है,
आज नज़रों में दो-दो रंगों की एक मूरत है ।
कैसे हम जाने कौन नेक कौन धूर्त है,
पता नहीं लगता काली गोरी चपड़ी वालों से । बन्दा... । ।1 । ।
शायद ग़रीब दास के पल्ले धन माल ही हो,
नाम का धनमतमल घर से शायद कंगाल ही हो ।
शायद फकीरचंद की गुदड़ी में लाल ही हो,
निर्धन बेहतर हैं, धनवाले दिल के कंगालों से । बंदा... । ।2 । ।
देखने को कोई पागल है, पर अन्दर से विवेक है ।
खरबूजा ऊपर से है जुदा, अन्दर से एक है ।
संगतरा बाहर से है एक, अन्दर से अनेक है ।
कैसे अंदाजा हो ऊपर की छीलों छालों से । बन्दा .... । ।3 । ।
देखने को कई भोले हैं, चुभन को भाले हैं,
मुंह के कई मीठे है, और दिल लुभाने वाले हैं ।

---

1. कर्मो

डसने के बाद जाना यह तो नाग काले हैं,
आई आवाज़ डंक वाले दिल के छालों से । बन्दा... ।। 4 ।।
देखने को जो थे कमजोर, वह शहजोर निकले,
जाहरा जो शेर थे, वह वक्त पर कमजोर निकले ।
बरदी पुलिस की पहने हुए कई चोर निकले,
मरा तो मन्शा[1] सिर्फ यह है इन मिसालों[2] से । बन्दा... ।।5 ।।
लाल अंगार मिल सकता नहीं है लालों से,
कौवा नहीं हंस बन सकता, हंस की चालों से ।
आप भी सहमत होंगे शायद इन ख़्यालों से,
'नत्थासिंह' का तो यह तज़ुर्बा हैं कई सालों से ।। बन्दा... ।।6 ।।

(7) गीत

जीवन खत्म हुआ तो जीने का ढंग आया,
जब शमां बुझ गई तो महफ़िल पै रंग आया ।
मन की मशीनरी ने तब ठीक चलना सीखा,
जब बूढ़े तन के हर एक पुर्जे पै जंग आया । जीवन... ।।1 ।।
गाड़ी निकल गई तो घर से चला मुसाफिर,
मायूस हाथ मलता वापिस बैरंग आया । जीवन.... ।।2 ।।
फुरसत के वक्त में न सिमरण का वक्त निकला,
उस वक्त, वक्त मांगा जब वक्त तंग आया । जीवन... ।।3 ।।
आयु ने 'नत्थासिंह' जब हथियार फेंक डाले ।
यमराज फौज लेकर करने को जंगा आया । जीवन... ।।4 ।।

(8) गीत

पैसा कोई खास तो सहारा नहीं,
जीवन का लक्ष्य यह हमारा नहीं ।
लेकिन इंसान का, सारे जहान का,
पैसे बगैर भी गुज़ारा नहीं ।

---

1. इच्छा, 2. उदाहरणों ।

पैसा गर आप ना कमाएं,
तो कहाँ से पहने और खाएं।
रस्मो-रिवाज का, चारे अनाज का,
गरज़े कि ओर कोई चारा नहीं।
गृहस्थी हो या कोई त्यागी,
रोगी हो या कोई वैरागी।
कलियुग के दौर में, किसी भी तौर में,
धन का विछौड़ा गवारा नहीं।।
इल्मों अदालत या दवाई,
निर्धन की कहीं न रसाई।
अपने हैं गैर तो पैसे बगैर तो,
बेटा भी बाप को प्यार नहीं।।
पर पापों से इसे न कमावो,
ज़हर न कुटुम्ब को पिलावो।
क्योंकि भलाई बिन, धर्म की कमाई बिन,
कोई भी साथी तुम्हारा नहीं।।
'नत्थासिंह' यह है मजबूरी, जीवन निर्वाह है जरूरी,
लेकिन विचार कर, हीरा जन्म धार कर।
जन्मों का कर्ज़ क्यों उतारा नहीं।

(9) गीत

कभी इनसान तूफानों से घबराया नहीं करते,
वह बन्दे क्या मुसीबत में जो मुस्काया नहीं करते।
गिराये जायें वह गिरि से या गिरि भी आ गिरे उन पर,
भयानक मौत भी आये तो भय खाया नहीं करते।
सदाक़ात[1] के लहू से खींचकर पाले हों जो गुनचे[2],
खिज़ा[3] में भी कभी वह फूल मुर्झाया नहीं करते।

1. सच्चाई, 2. फूल, 3. पतझड़।

भरोसा है जिन्हें अपने सिदक़[1] पर और ईश्वर पर,
तमन्नाओं में दामन मन का उलझाया नहीं करते।
जो दुःख-सुख सर्दी और गर्मी को हंसकर सहन करते हैं,
बिना पानी के भी वह कमल कुमलाया नहीं करते।
जो आकर राज़ आने का समझ जाते हैं 'नत्थासिंह',
वह जग में इस दफा आकर के फिर आया नहीं करते।

(10) गीत

सदियों से जीव भटकता है चैन अभी न आया,
कई बार मरा जी जी कर फिर भी न जीना आया।
वृक्षों पशुओं में घूमा पर, पर-उपकार न सीखा,
नित नया पाप करने को ढूंढा नित नया तरीका,
पशु पुरुष में क्या अन्तर है इसको तो यही न आया।
तह कर के ताक पे धर दी मस्ती की सभी किताबें,
या खून पीया निर्धन का या विस्की ज़हर शराबें,
हरि नाम के अमृत रस का इस जाम न पीना आया।
हाय मोर पपीहा बन कर पी पी न कभी पुकारा,
सत्संग की वर्षा ऋतु में तन धोकर नहीं निखारा,
कई बार तेरे जीवन में सावन का महीना आया।
ज़ख्मी ग़रीब तड़पा भी पर दया तेरी पिघली ना,
पत्थर का हुआ कलेजा सीमेंट बन गया सीना,
सीने से सी न निकली और ज़ख्म न सीना आया।

1. सच्चाई।

चौरासी लाख के हिन्दसे ने वह चक्कर में डाला,
इस जीवन की तख्ती पर सौ बार सवाल निकाला,
हर बार गलत ही निकला इक बार सही न आया।
जब पुण्य पाप का खाता यमराज ने देखा भाला,
'नत्थासिंह' सिर से पैरों तक जीवन निकला काला,
सब पुण्य पड़ गये ठंडे पापों को पसीना आया।
सदियों से जीव भटकता है चैन अभी न आया।

(11) गीत

आज दुनिया बड़ी सयानी है।
जिससे पूछो वह ब्रह्मज्ञानी है।
आज इन्सान कम ही तोलता है।
हाथ के साथ मन न डोलता है।
वजह पूछो तो यही बोलता है।
बड़ी खूबी से राज खोलता है।
कि हर तराजू की डंडी कानी है।। आज...
कल कहा मैंने एक शराबी से।
बाज आ जाओ इस खराबी से।
बोला किस मुंह से तुम हटाते हो।
तुम जो अंगूर रोज खाते हो।
उन्हीं अंगूरों का यह पानी है।। आज...
जब कहा मैंने इक जुआरी से।
तुम रहो दूर इस बीमारी से।
बोला गर खेल लिया तो क्या हुआ।

नल युधिष्ठिर ने भी खेला था जुआ।
बड़ों की यह रीत पुरानी है।। आज...
चोर से पूछो वो भी कहता है।
जेल जाने में मजा रहता है।
चोरी करता हूँ जेल जाता हूँ।
कभी जाता हूँ कभी आता हूँ।
क्योंकि दुनियाँ ही आनी जानी है।। आज...
मांसखोरे ने भी यह फरमाया।
मैंने तीतर जो मार कर खाया।
''नत्थासिंह'' नींव नई घर डाली।
युक्ति से मुक्ति उसकी कर डाली।

(12) गीत

आसां कदे बन्दे दियां हुंदियां ना पूरियां,
कलपदा बथेरा फिर वी रैंहदियां अधूरियां।
आखदे सयाने माया माया नूं है जोड़दी,
लक्खां वालयां नूं रहन्दी कल्पना करोड़ दी।
होवे जे करोड़ ताँवी पैंदियां ना पूरियाँ
कलपदा बथेरा फिर वी रैंहदियां अधूरियां।
ताँगे वाला कैहन्दा रब्बा मेरे हेठ कार होवे,
कार वाला सोचे मेरी हवा च उडार होवे।
तकदा जहाज नूं ते वटदा ए घूरियां,
कलपदा बथेरा फिर वी रैंहदियां अधूरियां।
कैहन्दा रब्बा मेरे कारखाने क्यों नहीं चल दे,
छपरी च बैठा लवे स्वपने महल दे।

छड बैठा दिल दियां सबर सबूरियां,
कलपदा बथेरा फिर वी रैंहदियां अधूरियां।
देख के अमीर नूं ग़रीब पया सोचदा,
बन जावां बादशाह अमीर एहो सोचदा।
हुकमां दे नशे दियां रहन मगरूरियां,
कलपदा बथेरा फिर वी रैंहदियां अधूरियां।
ऐनी खुल दित्ती इहने हर इक खाहिश नूं,
बस लगे बन्दे दा ते चढ़ जाये आकाश नूं।
खम्ब नहीं मिले कैहन्दा हाये मजबूरियां,
कलपदा बथेरा फिर वी रैंहदियां अधूरियां।
'नत्थासिंह' सब्र संतोष नाल जी लै तूं,
रूखी मिसी खाके ते ठण्डा पानी पे लै तूं।
तकदा गुवांढी दे क्यों हलवा ते पूरियां,
कलपदा बथेरा फिर वी रैंहदियां अधूरियां।

2. पंडित प्रकाशचन्द्र कविरत्न

(1) गुरुदेव दयानंद

वही पूज्य गुरु है दयानन्द मेरा।
असत् शम्भु[1] की पूजा जिसने बिसारी।
बना सच्चे शंकर का जो था पुजारी।
धरा धाम सुख साज पर लात मारी।
बना लोक हित पूर्ण जो ब्रह्मचारी।।
दशा जिसने भारत की बिगड़ी सुधारी।
किये एक जिसने शिखा-सूत्र-धारी।
धर्मवीर सेवा व्रती क्रान्तिकारी।
बनाये थे जिसने बहुत नर व नारी।
किया जिसने फिर जागृति का सवेरा। वही.... 1।।
नया पंथ जिसने न कोई चलाया।
पुरातन जो वेदों का सन्देश लाया।
अविद्या का जिसने विकट दुर्ग ढाया।
अनार्यों को फिर आर्य जिसने बनाया।।
प्रथम जिसने नारी-जगत् को जगाया।
अनाथ और विधवा को धीरज बंधाया।
छूआ-छूत का भूत जिसने भगाया।
गऊ-रक्षा का प्रश्न जिसने उठाया।।
कृपा-हस्त जिसने दलित जन पे फेरा।। वही... 2।।
चलाने को फिर वेद-शिक्षा प्रणाली।
यहाँ नींव गुरुकुल की जिसने थी डाली।
पुनः आर्य जाति सु-साँचे में डाली।
बहा जिसने दो गंगा सद्ज्ञान वाली।।

---

1. झूठे शिव।

बना जो कि भारत के उपवन का माली।
हृदय-रक्त से सींची हर डाली डाली।।
की हरियाली चहुँदिशि विपद जिसने टाली।
नई जान डाली, शिथिलता निकाली।।
उखाड़ा था भ्रम-भूत का जिसने डेरा।। वही.... 3।।
मेरी शिक्षा पै आर्यो ध्यान धरना।
मेरे बाद ऐसी न तुम भूल करना।
समाधि न मेरी कहीं तुम बनाना।
न चद्दर न तुम फूल माला चढ़ाना।।
न पुष्कर, गया, अस्थियाँ लेके जाना।
न गंगा में तुम मेरी अस्थि बहाना।
ये झंझट न तुम व्यर्थ के मोल लेना।
मेरी अस्थियाँ खेत में डाल देना।
कि जिससे मेरी अस्थियाँ[1] खाद बनके।
कभी काम आयें कृषक दीन-जन के।
यूँ कह जिसने टाला अविद्या का घेरा। वही... 4।।
परम लक्ष्य था जिसका जग की भलाई।
बराबर थी जिसको प्रशंसा बुराई।।
क्षमा-शीलता खूब जिसने दिखाई।
दिया जिसने विष, जान उसकी बचाई।।
न थे पास मठ, धाम चेली न चेला।
न सोना न चाँदी न पैसा न धेला।
'प्रकाशार्य' संकट विकट जिसने झेला।
करोड़ों के आगे डटा जो अकेला।
गया काँप जिससे प्रपंची[2] लुटेरा। वही.... 5।।

1. हड्डियाँ, 2. पाखण्डी।

(2) महर्षिमहिमा

यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनियाँ में
कोई गुरु देव दयानंद-सा देखा न सुना।
छोड़ माता-पिता, घर-द्वार, धन-खजाने को
चल दिया धार के व्रत ब्रह्मचर्य-बाने को
लगी दिल में थी लगन ऐसी ही दीवाने को
होती दीपक से जैसे प्रीति है परवाने को
भटका जग में वो खोज सत्य की लगाने को
न मिला आह! उसे कितने दिनों खाने को
कभी मरुथल किया तै, बन कभी कांटों वाला
कभी बरफानी पहाड़ी कभी नदी नाला
हुआ लथपथ लहू से तन, पड़े पाँवों छाले
फैंके पत्थर किसी ने साँप विषैले काले
खड्ग चमकाया किसी ने तो किसी ने भाला
दिया नादानों ने कितनी ही बार विष-प्याला
फिर भी पीछे न हटा सत्य का वो मतवाला
आज यूँ मुँह से कह रहा है हर अदना, आला[1]
यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनियाँ में
कोई गुरुदेव दयानंद-सा देखा न सुना।।
पाला हनुमान पवन सुत ने ब्रह्मचर्य था बस
अपने स्वामी श्री रामचन्द्र के रिझाने को
सुना है पाला ब्रह्मचर्य परशुराम ने था
पृथ्वी से नाम क्षत्रि-वंश के मिटाने को
पाला था ब्रह्मचर्य भीष्म पितामह ने भी
अपने शान्तनु श्री पिता को सुखी बनाने को
किन्तु गुरुदेव दयानन्द ब्रह्मचारी ने
पाला था ब्रह्मचर्य जग के दुःख मिटाने को

---

1. छोटा-बड़ा।

दीन दुःखियों की दशा देख दुःखी होता था
सारा जग चैन से सोता था तब वो रोता था।।
विश्व-कल्याण के साधन सभी संजोता था
एक पल भी वो कभी व्यर्थ को न खोता था
योगी जो आठ पहर ध्यान-मग्न रहते हैं
देख स्वामी की तपस्या वे यही कहते हैं
यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनियाँ में
कोई गुरुदेव दयानंद-सा देखा न सुना।।
किया जब ऋषि ने सत्य वेद धर्म का मण्डन
तर्क-प्रतिभा से किया मिथ्या मतों का खण्डन
कहते खुद को थे जो गौतम कणाद से आला
हुए चुप मानो लगा मुँह पै सभी के ताला
था अजब हाल पड़ा बुद्धि पै मानो पाला
सोचते थे महा विद्वान् से पड़ा पाला
बैठे बिठलाए हाय! कैसा ये झंझट पाला
लाखों के आगे अकेले ने ही जीता पाला
पास स्वामी के ले जिज्ञासा जो विद्वान् गए
पूर्ण पाण्डित्य व प्रतिभा का लोहा मान गए
धर्म वैदिक है एकमात्र सही जान गए
कौन हीरा है, कौन काँच ये पहचान गए
बौद्ध, जैनी, सनातनी, व पादरी, मुल्ला
छोड़कर पक्षपात बोले यूँ खुल्लम-खुल्ला
यूँ तो कितने महापुरुष हुए दुनियाँ में
कोई गुरुदेव दयानन्द-सा देखा न सुना।
देह दीपक 'प्रकाश' जब कि बुझनेवाला था
कहने को थी दीवाली सच तो ये दीवाला था
आर्य जनता के हृदय बेतरह थी घबराहट
किन्तु ऋषिराज के मुख पर थी मंजु मुसकाहट

शान्त मन हो महर्षि जी वचन ये उच्चारे।
तेरी इच्छा हो पूर्ण हे परम पिता प्यारे!
देख के दृश्य ये गुरुदत्त को हुई हैरानी
जो कि नास्तिक थे परम हो गए आस्तिक ज्ञानी
स्वामी महाराज की प्रतिभा प्रकाण्ड पहचानी
झुक के चरणों में बोले प्रेमभरी ये वाणी
यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में
कोई गुरुदेव दयानन्द-सा देखा न सुना।।
मारते मान रहे मिथ्याचार मण्डी के
वेद अनुयायी थे रक्षक थे, ओ३म् झण्डी के
पूर्ण प्रतिद्वन्द्वी रहे पातकी पाखण्डी के
शिष्य बेजोड़ थे गुरु विरजानन्द दण्डी के
जैसे कवि अपने मधुर छन्द पर निछावर है
जैसे प्रेमी चकोर चन्द पर निछावर है
भृंग, अरविन्द के मकरन्द पर निछावर है
तैसे दिल मेरा दयानन्द पर निछावर है
जिसके मृत आर्य जाति को पुनः जिलाया है
खुद ज़हर खाके वेद-अमृत हमें पिलाया है
धैर्य विधवा अनाथ, दलितों को दिलाया है
जिसने बिछुड़े हुओं को हम से फिर मिलाया है
उस दयानन्द पै बलिहार क्यों न जाएँ हम
क्यों न उसके लिए सर्वस्व भी चढ़ाएँ हम
आर्य बन सच्चे क्यों न उसका ऋण चुकाएँ हम
क्यों न श्रद्धा से गीत ये 'प्रकाश' गाएँ हम
यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनियाँ में
कोई गुरुदेव दयानन्द-सा देखा न सुना।।

(3) बोलो वह कौन है?

सूर्य की लाली में, चन्द्र की उजियाली में,
बोलो वह कौन है, बोलो वह कौन है?
जो है हरियाली में, वृक्षों की डाली-डाली में,
बोलो वह कौन है, बोलो वह कौन है? ।1।
शिशु की बोली में, कोकिल की मधुर कूकों में,
प्रेमी पपीहा की पी-पी में, मयूर की हूकों में,
शैल शिखरों में गगन के विशाल आँगन में,
सिन्धु सरिता में सरोवर में नगर में वन में,
नम्र शरमीले नयन में पवित्र यौवन में,
धीर प्रणवीर में दुःखिया मजूर निर्धन में,
समा रहा है और मुस्करा रहा है जो,
सभी को नाच नए नित नचा रहा है जो। सूर्य.... ।2।
जिसने पानी से भरा है रुई-सी बदली को,
दे दी जिसने है चपलता व चमक बिजली को,
ईख को दी मिठास और खटास इमली को,
रंग दिया जिसने है फूलों को और तितली को,
पत्ते-पत्ते की न्यारी-न्यारी है कतरन कैसी,
हाथ में अपने जिसने ला कभी नहीं कैंची,
रीछ के तन पर किया फिट क्या बालों का चोगा,
उम्र भर जो न फटेगा न छोटा होगा,
सर पै कुक्कुट के रखा लाल है मुकुट किसने?
किया लघु बीज से पैदा विशाल वट किसने? सूर्य... ।3।
किस सफाई से मानुष का चोला जिसने सिया,
और अचरज तो ये सुई धागा नहीं हाथ लिया,
सीप की भी चमकती आँख बनाई कैसी,
और तबले सी रख दी बीच में स्याही कैसी?

मसाला कौन सा इसमें अजब लगाया है,
नमूना आज तलक ऐसा न बन पाया है,
साथ ही इसको वो प्रकाश भी प्रदान किया,
छोटे-से तिल में ही दिखलाई आसमान दिया,
जान भी डाल दी इस पंचतत्व पुतले में,
एक कौड़ी भी न ली इस दया के बदले में,
नाम को भी जिसने जलाया ना मसाल दीया,
अंधेरे घर में बैठ वाह! क्या कमाल किया?
जन्म से पहले ये कौतुक भी बेमिसाल किया,
दूध बच्चे की माँ के उरमें जिसने डाल दिया। सूर्य.... ।4।
सबको करनी का यथा-योग्य जो फल देता है,
एक कौड़ी भी न रिश्वत किसी से लेता है,
एक रस है जो जन्मता ना मरा करता है,
सदा कल्याण का झरना जो झरा करता है,
सूखी खेती को पल भर में हरा करता है,
कीड़ी कुंजर सभी का पेट भरा करता है,
विश्व का चक्र ये किसके नियम में चलता है,
भोर उगता है सूर्य शाम समय ढलता है।
पवन बहता है पावक प्रचण्ड जलता है,
सिन्धु भी देख लो मर्यादा से न टलता है,
जिसकी इच्छा के बिना फूल भी न खिलता है,
जिसकी सत्ता के बिना पत्ता तक न हिलता है। सूर्य... ।5।
सारे ब्रह्माण्ड को जो आप किये धारण है,
जो कि त्रय ताप हरण और तरण तारण है,
जिसके सुमरन से होता विघ्न भय निवारण है,
भूल जाना ही उसको सब दुःखों का कारण है,
जिसके पाने से स्वर्ग की बहार कुछ भी नहीं,

चक्रवर्ती स्वराज्य में है सार कुछ भी नहीं,
जिसके सम्मुख कुबेर का धन अपार कुछ भी नहीं,
जिसके आगे किसी सुन्दरी का प्यार कुछ भी नहीं,
आग चकमक में है, जैसे हवा गगन में है,
लाली मेंहदी के पात में, महक सुमन में है,
जैसे मक्खन दही में पुतली ज्यों नयन में है,
वैसे बसा वो 'प्रकाश' प्राणियों के मन में है। सूर्य.... ।6।

(4) उनको सुंदर मैं न कहूँगा

तन के उजले मन के काले, उनको सुंदर मैं न कहूँगा।
पड़े बुद्धि पर जिनके ताले, पशु हैं वे, नर मैं न कहूँगा।
निराकार प्रभु अजर अमर है, चर्म चक्षु से दृष्टि न आये।
है यह मनुज एक देशी जो जन-धारी जन्मे मर जाये।।
वह जड़ प्रतिमा जिसको मानव, गढ़ कर मन्दिर में बिठलाये।
चोर चुरा ले जाये रक्षा, अपनी आप न जो कर पाये।
नाशवान् उस नर को अथवा, जड़ का कहूँगा। तन के....
वृक्षों में जामुन पतली बेलों में है तरबूज लगाता।
हँसी उड़ाता है नास्तिक देखो कैसा है मूढ़ विधाता?
बड़े वृक्ष में कहीं बड़े तरबूज लगा देता निर्माता।
गिरता कहीं नाक पर तेरे हुलिया सब चौपट हो जाता।
कार्य सभी विधिवत् विधि के हैं, भूत भयंकर मैं न कहूँगा। तन.
रहा अखण्ड ब्रह्मचारी जो स्वामी, रामचंद्र के कारण।
रावण का अभिमान मिटाया किये राम के विघ्न निवारण।
हाथ गदा, यज्ञोपवीत कांधे पर किये हुए था धारण।
हुए राम थे परम मुग्ध सुनकर जिसका संस्कृतोच्चारण।
उस हनुमान् वीर ज्ञानी द्विजवर को बन्दर मैं न कहूँगा। तन.....

जिसने दे उपदेश समर में सकल मोह अर्जुन का टाला।
रुकमणि सहित बारह वर्ष लौं ब्रह्मचर्य हिमगिरि में पाला।
फिर गृह आश्रम में जन्माया, प्रद्युम्न सा सुत सद्गुण वाला।
था वह कृष्ण असुर संहारक योगेश्वर नीतिज्ञ निराला।
चोर, जार, गोपी-बल्लभ उसको, राधावर मैं न कहूँगा। तन.....
कहते चेले गुरुजी आशीष देकर सुत जन्मा देते हैं।
जितना दे कोई सोना, उससे दश गुना थमा देते हैं।
सोना साथ लिये नर नारी, चरणों शीश नमा देते हैं।
खिसके वे चुपचाप गिरह की, भी सम्पत्ति गंवा देते हैं।
यूँ धन धर्म गंवाओं उनके, पास पहुँचकर मैं न कहूँगा। तन.....
मरता है कोई तो व्याकुल घर के आँसू ढरकाते हैं।
तेरहवें में प्रियजन पाण्डे, लड्डू खाकर हरषाते हैं।
कहते हैं सारा भोजन ये, हम पितरों तक पहुंचाते हैं।
है करतूत अविद्या की यह, कहीं मरे भी कुछ खाते हैं।
बुद्धि-विरोधी मृतक श्राद्ध तुम, करो मित्रवर! मैं न कहूँगा। तन..
लिप्त विषय भोगों में फिर भी बड़ा भक्ति का दम भरता है।
दान पुण्य में धन न लगाता जोड़ खाकर हरषाते हैं।
नारियल रुपया सवा चढ़ाकर मांग लाख की जो करता है।
भगवत को रिश्वत देता यह पूजा नहीं स्वार्थपरता है।
ऐसे बगुला भक्त धूर्त को, भक्त धुरन्धर मैं न कहूँगा। तन...
संकट में निज युक्ति-शक्ति से नाव राष्ट्र की जो खेता है।
जन-कल्याण हेतु जो सब कुछ अर्पण करता वह नेता है।
पर कुर्सी के हित झांसे दे चुनाव में जो मत लेता है।
अपना काम निकल जाने पर, सबको सींग बना देता है।
ऐसे चंटों को प्रकाश नेता, या लीडर मैं न कहूँगा। तन ......

(5) प्रेरणा

यह मत कहो कि जग में कर सकता क्या अकेला?
लाखों में वीर करता है शूरमा अकेला।। 1।।
आकाश में करोड़ों तारे हैं टिमटिमाते।
अंधकार जग का दूर करता है चंद्रमा अकेला।।2।।
लाखों ही जन्तुओं पर बिठला के धाक अपनी।
स्वाधीन सिंह वन में है घूमता अकेला।।3।।
होते हैं ओखली में अनगिनत धान के कण।
लेकिन सभी को मूसल दल डालता अकेला।।4।।
लोहे की पटरियों पर होते अनेक डिब्बे।
लेकिन सभी को इंजन है खींचता अकेला।।5।।
लंकापुरी जला के असुरों का मद मिटाके।
हनुमान राम दल में फिर आ गया अकेला।।6।।
जापान में सजा कर आजाद हिंद सेना।
जौहर सुभाष नेता दिखला गया अकेला।।7।।
था कुल जगत् विरोधी जिस पर ऋषि दयानंद।
ध्वज आर्य-संस्कृति का फहरा गया अकेला।।8।।

(6) आनन्द स्रोत बह रहा

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है।
अचरज ये, जल में रह के भी मछली को प्यास है।
फूलों में ज्यूं सुबास ईख में मिठास है।
भगवान का त्यों विश्व के कण-कण में वास है।
टुक ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही।
जिसको तू ढूँझता वो सदा तेरे पास है।

कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य ना केवल विलास है।।
आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक।
तू जब तलक 'प्रकाश' इन्द्रियों का दास है।।

(7) वेद महिमा गान

वर वन्दनीय वेद की महिमा महान् है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान् है।।
है ज्ञान, कर्म, भक्ति का उत्कृष्ट समन्वय
रहते हैं सर्वकाल ये, हो सृष्टि वा प्रलय।
निःश्रेयसाभ्युदय का है साधन ये असंशय
फल चार का दाता है यही वेद-चतुष्टय।
यह तर्क-युक्ति-पूर्ण विज्ञानानुकूल है
सब काल सभी को ये सौख्य-शान्ति-मूल है।
साहित्य सर्वमान्य वेद का पुनीत है
कल्पित कहानी ये न गडरिये का गीत है।
हीरा है सच्चा वो, तू काँच समझा है जिसे
रे! देख वेद को तू वेद की ही दृष्टि से।
मत-द्वीपों में कहीं जो चमकते हैं दिव्य कण
ज्योतित उन्हें हैं कर रही ये वेद-रवि-किरण।
नत-पंथ अन्य जितने भी प्रचलित हैं ये नूतन
हाँ! वेद सर्वश्रेष्ठ सभी से है पुरातन।
प्रत्यक्ष यहाँ सृष्टि का सम्वत् प्रमाण है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान् है।।
वेदों को मिटा दे ये भला किसकी ताव है
है ज्ञान ये अक्षय, न कोई ये किताब है।

पानी में वेदज्ञान कभी गल नहीं सकता
यह वेद आग में भी कभी जल नहीं सकता
वेदों के ग्रंथ हाँ, विधर्मियों ने जलाए
हम्माम अपने गर्म कई साल कराए
पर, मूढ़ पक्षपातियों ने ये भी न जाना
ग्रंथों का जलाना नहीं वेदों का जलाना।
वेदों की ऋख लता-लता, पात-पात, वृक्षों पर
फलों पे फलों पर है वो चोटी पै जड़ों पर।
मानव समाज पशु व पक्षियों के गात पर
सागर, तरंग, सरिता-तटों, जल प्रपात पर।
पर्वत व पर्वतों के गगन-चुम्बी शिखर पर
ब्रह्माण्ड के कण-कण पै भी हैं वेद के अक्षर।
जिस काल ने मिटाए हैं यूँ लोक बृहतर
अक्षर अशुद्ध को ज्यों मिटा देता है रबर,
वेदों को मिटा सकता न वो काल भयंकर
अंकित हैं वेद-वाक्य काल के भी भाल पर।
हाँ! अमर ईश का ये अमर वेद-ज्ञान है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान् है।
आर्यों ने वेद के लिए बलिदान किए हैं।
हँसते हुए कराल गरल पान किए हैं।
फाँसी पै चढ़ गए प्रचण्ड अग्नि में जले
कुचले गए वो हाथियों के पाँव के तले।
लोहे के गर्म चिमटों से तन खाल खिंचाई
जिह्वा कटाई, आँख सलाखों से फुहाई।
भालों कृपाणों बाणों से छिदवाए अंग-अंग
जीवन के अन्त क्षण भी ये मन में रही उमंग,
फिर जन्म लेंगे वेद का उद्धार करेंगे
अभिशाप, पाप, ताप अखिल जग के हरेंगे।

हम आर्यों को वेद ही प्राणों का प्राण है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान् है।
है वेद की शिक्षा 'जियो, औरों को जीने दो'
सुख-शान्ति का प्याला पियो, औरों को पीने दो
है ओत-प्रोत सारे ही ब्रह्माण्ड में ईश्वर
उसके हैं सब पदार्थ ये न भूल कभी नर।
हाँ! त्याग-भाव से सदा इनका प्रयोग कर
लालच के वशीभूत हो पर धन कभी न हर।
मुख से भला कहो, भला देखो, भला सुनो
हाँ! साध्य भले के लिए साधन भले सुनो।
सबके विचार एक हों, आचार एक हो।
होवे न परस्पर घृणा, व्यवहार नेक हो
जीवन में ओत-प्रोत ये वैदिक विचार हो
निश्चय मनुष्यता का चतुर्दिक प्रसार हो।
प्राणीी समस्त विश्व के होंगे सुखी अभय
बोलेंगे सभी प्रेम से वैदिक धरम की जय!
शिव, सत्य, सुन्दरम् 'प्रकाश' का ये गान है।
वर वन्दनीय वेद की महिमा महान् है।।

(8) बेड़ा बस उसका

बेड़ा बस उसका ही पार हो गया।
जिसका प्रभु से सच्चा प्यार हो गया।।
सभी अपने हैं यहाँ कोई नहीं गैर है।
ना किसी से ईर्ष्या है ना किसी से बैर है।।
दूर सब मन का विकार हो गया।
जिसका प्रभु से सच्चा प्यार हो गया।।
दुनियाँ में उसको किसी का भी न डर है।
अमृत समान उसके लिए ज़हर है।।

फूल सम उसको अंगार हो गया।
जिसका प्रभु से सच्चा प्यार हो गया।।
गुरु-दया से 'प्रकाश' खुले नेत्र ज्ञान के।
घट ही में दरशन हुए भगवान् के।।
मिटे दुःख आनन्द अपार हो गया।
जिसका प्रभु से सच्चा प्यार हो गया।।

(9) मन हारे हार

मन हारे हार, मन के ही जीते जीत है।
मन ही है शत्रु और मन ही तो मीत है।।
हाथ पर हाथ धरे बैठा क्यों उदास है।
ऊँचा उठने का नहीं करता प्रयास है।।
वैभव से पूरित साम्राज्य तेरे पास है।
मलिन विचारों से औरों का बना दास है।।
कैसे हो उद्धार मूढ़ता से जब प्रीत है।
मन हारे हार, मन के जी जीते जीत है।।
आप करता है नर पुण्य आप पाप है।
आप भोगता है सुख आप परिताप है।।
आप वरदान पाता आप अभिशाप है।
बन्धन वा मोक्ष का कारण नर आप है।।
आप अनुकूल और आप विपरीत है।
मन हारे हार, मन के ही जीते जीत है।।
वन न नादान अपने को पहचान रे।
अपने को दीन पराधीन मत मान रे।।
तू है अनुपम शक्तिमान् तू महान् रे!
तू है नित्य अमर विभूति सत्य जान रे।।
वैदिक शिक्षानुकूल ये 'प्रकाश' गीत है।
मन हारे हार, मन के ही जीते जीत है।।

(10) पाँच कर रहे हैं .....

पाँच कर रहे हैं इस प्यारे भारत का चौपट्टा।
भ्रष्टाचार, शराब, सिनेमा, दहेज और यह सट्टा।।
भ्रष्टाचारी लोग कर रहे चोरी, सीनाजोरी।
जन भूखे मर रहे, नोट से ये भर रहे तिजोरी।।
पर-धन पर ये मार रहे है।, चील समान झपट्टा।
पाँच कर रहे हैं, इस प्यारे भारत का चौपट्टा।।
'शराब' ने कितने ही घर बरबाद आह! कर डाले।
कीचड़ नाली में गिरते हैं इसके पीने वाले।।
है साक्षात् मौत का अट्टा यह शराब का भट्टा।
पाँच कर रहे हैं इस प्यारे भारत का चौपट्टा।।
आज 'सिनेमा' में अति गंदे गीत दृश्य हैं जारी।
दुश्चरित्र हो रहे देखकर बच्चे और नर-नारी।।
गाते गीत इन्हीं लोगों ने मेरा लिया दुपट्टा।
पाँच कर रहे हैं इस प्यारे भारत का चौपट्टा।।
दहेज-मँगते लड़की वालों की करते हैं ख्वारी।
तेल छिड़क मरतीं, कितनी रह जातीं कन्या क्वारी।।
लड़के वाले कहें ब्याह में दो धन खूब इकट्ठा।
पाँच कर रहे हैं इस प्यारे भारत का चौपट्टा।।
'सट्टे' की खोटी लत जिन लोगों में पड़ जाती है।
सच तो यह उनकी हालत सब तरह बिगड़ जाती है।।
हाट, हवेली, बरतन-भांडे बिक जाते सिलवट्टा।
पाँच कर रहे हैं इस प्यारे भारत का चौपट्टा।।
बुरी लतें जब तक, तब तक चरित्र-निर्माण न होगा।
चरित्र के निर्माण बिना भारत-कल्याण न होगा।।
दो 'प्रकाश' इन बुरी लतों की गहन जड़ों में मट्ठा।
पाँच कर रहे हैं इस प्यारे भारत का चौपट्टा।।

3. पंडित चमूपति जी एम०ए०

(1) ग़ज़ल

ऐ दुनियाँ बता इससे बढ़कर फिर और हक़ीक़त[1] क्या होगी?
जाँ दे दी तलाशे हक[2] के लिए फिर और इबादत[3] क्या होगी?
यूँ तो हर रात की तारीकी[4], देती है प्याम[5] उजाले का।
जिससे यह जहाँ पुरनूर[6] हुआ, उस रात की कीमत क्या होगी?
ज़हरें भी पिलाई अपनों ने, खंजर भी चलाए अपनों ने।
अपनों के यह एहसाँ क्या कम हैं, ग़ैरों से शिकायत क्या होगी?
औरों के लिए मरने वाले, मर कर भी हमेशा जीते हैं।
जिस मौत से दुनिया रश्क करे उस मौत की अज़मत[7] क्या होगी?
सदियों की ख़िज़ाँ[8] के बाद खिला, इक फूल उसे भी तोड़ लिया।
कलियों के मसलने वालों से, फूलों की हिफ़ायत क्या होगी?
इस हिम्मतो जुर्रत[9] के सदके, इस जज़्बाए[10] 'सादिक'[11] पै कुर्बां।
हक की ख़ातिर इससे बढ़कर बातिल[12] से बग़ावत क्या होगी?

---

(1) सच्चाई, (2) सत्य की खोज, (3) उपासना, (4) अंधेरा, (5) दिन, (6) शानदार, (7) महिमा, (8) पतझड़, (9) बहादुरी, (10) इच्छा, (11) प्यारी, (12) शत्रु।

(2) काशी की फ़तह[1]

चला जब न स्वामी पै जादू ज़बां का।
न तकरीर का तेग़ ने तोड़ा टांका।।
किया ज़हर ने काम जब शीरो नां का[2]
गया सिक्का जम जोगिये नुक्तास दां का[3]।।
यह सक्ता[4] था छाया हुआ पण्डितों में।
न था फ़र्क कुछ पण्डितों और बुतों में।।
कोई जाके काशी लिखा लाया पतरी।
कि जायज़ है, वेदों में पूजा बुतों की।।
वोह पतरी ऋषि की जब आँखों से गुज़री।
कहा-हम ने काशी की ली देख शेखी[5]।।
गये शेर की तरह फ़ौरण गरज कर[6]।
कि लो एक धावे में यह गढ़ हुआ सर।।
हिले बेख़तर वआज़[7] से काशी वाले।
यकायक उठे कांप सब बूढ़े वाले।।
गये पण्डितों से न आसां सम्भाले[8]।
जहालत ने थे अक़्ल पर पर्दे डाले।।
जिन्हें पूजते थे सभी कह के शंकर।
किया उनको साबत ऋषिवर[9] ने कंकर।।
यह रुदाद[10] राजा के कानों में पहुँची।
कहा आज है नाक काशी की कटती।।
जो त्रिशूल पर शिव के काशी खड़ी थी।
वोह धक्के से है एक साधु के हिलती।
बुला भेजा नगरी के सब पण्डितों को।
कि भूदेवयो[11]! अब तुम बचाना बुतों को।।

---

(1) विजय, (2) दूध व रोटी अर्थात् विष का प्रभाव विफल रहा, (3) शास्त्रमर्मज्ञ योगी दयानन्द की अमिट छाप पड़ी, (4) चकित, मूर्छित, (5) डींग, (6) एकदम सिंह समान गर्जना करते हुए गये, (7) उपदेश, (8) होश ऐसे उड़े कि संभल ही न पाए, (9) मूल में महर्षि हैं। हमें तो ऋषिवर ही जंचा, (10) कहानी, (11) ब्राह्मणो!

कहा पण्डितों ने है मनजूर राजन।
करो जिस तरह हम को मामूर[12] राजन।।
हमें दान दे देना भरपूर राजन।
करें शीशाय कुफ्र[13] हम चूर राजन।।
मगर हम तो हैं और कुछ पढ़ने वाले।
दयानंद वेदों के लेगा हवाले[14]।।
हमें कर अता पन्द्रह दिन की मोहलत[15]।
करें वेद की मिल के ता खूब किरअत[16]।।
वोह सावत करें फिर बुतों की करामत[17]।
दयानन्द की तोड़ दें साफ़ हुज्जत[18]।।
रहा पन्द्रह दिन यह काशी का नकशा।
कोई बात गढ़ता कोई वेद पढ़ता।।
हुआ बहस का वक्त जब, पण्डित आय।
बढ़ा जमघटा साथ चेलों का लाय।।
गुरु पालकी में थे आसन लगाय।
थे नारों से शिश आसमाँ को उठाते[19]।।
इधर पलटी काशी की सजधज थी सारी।
उधर एक साधु था कोपनीधारी।।
है साधु खड़ा पूछता धर्म क्या है?
निशां उसका क्या-क्या मनु ने कहा है।।
ज़बां पर वहाँ सब की ताला लगा है।
है झक झक ही करता जो लब खोलता है[20]।।
जो पूछा, अधर्म आप किस को कहेंगे?
तो निकला न लफ़्ज एक पण्डित के मुंह से।।
चली बुत परस्ती पै तकरीर जब वां।
तो लाया न उस पर कोई सार्फ बुरहा[21]।।

---

(12) नियुक्त (13) अधर्म का दर्पण, (14) प्रमाण, (15) पन्द्रह दिन का समय राजन दीजिए, (16) पाठ-वाचन, (17) महिमा, (18) तर्क, (19) शिष्य लोग गगनभेदी जयकारी गुंजाते, (20) जब मुंह खोलता, (21) युक्ति।

लगे झांकने आसतीने फुका दां[22] ।।
दलायल पै स्वामी की थी बज़्म हैरा[23] ।।
बरक एक टूटा[24] किसी ने दिखाकर।
कहा वेद का देखना स्वामी! मन्तर।।
ऋषि ने नज़र थी अभी उस पै डाली।
वहीं पीट दी उठ के राजा ने ताली।।
यह तरकीब धोके की अच्छी निकाली।
रही बात काशी की सबसे निराली।।
वोह गुण्डे के आय थे रिश्वत उड़ा कर।
लगे फेंकने हर तरफ़ ईंट पत्थर।।
किसी ने शरारत से जूता उछाला।
किसी के कटा कान से साफ़ बाला।।
किसी ने किया मुंह शराफ़त[25] का काला।
लिया गोबर और सर पै जातों के डाला[26] ।।
गरज़ एक अन्धेर बरपा था हर सू[27] ।
खड़ा मस्त कोने में था मौजी साधु।।
थे कुछ बहस में अहले अख़बार आय[28] ।
वोह सच्ची ख़ब रबहस की वां से लाय।।
हवा ने बहुत बर्की घोड़े उड़ाय[29] ।
हक़ीक़त के पैग़ाम आलम ने पाय[30] ।।
दलीलों पै काशी को जिसने उछाला।
दयानन्द स्वामी! तिरा बोल बोला।।

---

(22) पंडित वर्ग बस दायें बायें बस झांकते ही रह गये, (23) ऋषियों की युक्तियां सुनकर सभी चकित थे, (24) जीर्ण शीर्ण पृष्ठ, (25) सज्जनता, शालीनता (26) जाने वालों पर गोबर तक फेंका गया, (27) सब ओर, (28) कई विख्यात पत्र पत्रिकाओं के संवाददाता, (29) तारों से समाचार सर्वत्र फैला, (30) संसार को सत्य का यथार्थ ज्ञान हो गया।

(3) ऋषि का व्रत

(गुरु जी के आदेश के उत्तर में ऋषि यह व्रत लेते हैं)

तुम्हारा हर लफ़्ज मुझ को भगवन्! हज़ार तफ़सीर वेद[1] की है।
वोह पास है इस सुख़न[2] का मुझको जो तुम को तौकीर[3] वेद की है।
जो फूल झड़ते हैं इन लबों से हैं बाग़े अरफां का इतर सारे[4]
बसी ज़बां पर मिरे गुरु की, हमेशा तकरीर वेद की है।
न इबज़ तालीम[5] का है मुमकिन, न भेंट है पास मेरे भगवन्!
यह नज़र लो मिलक[6] है तुम्हारी, जो दिल में नतवीर[7] वेद की है।
जो चाहो हर कंकरी को दे दूं कहो तो मेहर और माह को बख़्शू[8]।
तुम्हारे हांठों का सदका[9], हर ज़र्रा मुझ को तस्वीर वेद की है।
न दिल में यादे वतन का चरका[10], न सर में घर बार का है सौदा[11]
यहाँ तो ख़ाक और खूं से मनजूर अपने तामीर वेद[12] की है
यह पाओ दे ताजे शाह को ठोकर[13] बदल लें मुट्ठी से लाल ओ गोहर[14]
जहाँ में मद्दे नज़र इन आंत्रसों को, आम तसख़ीर[15] वेद की है।
यह सांस है तब से सांस अपना, हुआ है जब वेद विरद[16] इसको।
यह जां हुई तब से जां हमारी, कि इसमें तासीर[17] वेद की है।
कनिशती आतिश कदे[18] को छोड़े, बैरागी धूनी को राख कर दे।
जहाँ में कर दूं वोह आग रोशन कि जिसमें तेनवीर वेद की है।
सिखाऊँ लामा को बुद्ध बनना, सबक अहिंसा का जैन को दें।
धरम के सपनों में सब हैं, उनसे कहूं जो तावीर वेद[19] की है।
हिला दूं जड़ वहम की ज़मीं से उड़ा दूं कुफ्र इनके करके पुर्जे।
न इसको छोड़ूं न उसको रखूं कि इनसे तहकीर[20] वेद की है।
अंधेर आलम में है तो भगवन्! जला के जी लाऊंगा उजाला[21]।
बदन जो दाग़ों से हो चरागां[22], करूँगा जल जल के दीपमाला।

---

(1) वेद भाष्य, (2) आपके वचन का आदर, (3) सम्मान, (4) ब्रह्म विद्या, (5) विद्या का मूल्य नहीं। क्या बदले में दूँ, (6) सम्पदा आपकी आप ही को भेंट है, (7) ज्योति, (8) छोटे-बड़े, कंकरी से लेकर चांद सूर्य तक सभी को यह ज्ञान दे दूं, (9) बलिहारी, (10) घाव, (11) भूत या पागलपन, याद, (12) वेद-प्रचार भाव है, (13) राज ताज तक ठुकरा दें, (14) रत्न, (15) वेद का जय-जयकार, (16) कण्ठस्थ, (17) वेद की रंगत, (18) यहूदी अपना मन्दिर तज दें, (19) वेद का मर्म या भाव, (20) निरादर, (21) जी जलाके करूं उजाला, अधिक अच्छा लगेगा, (22) ऋषि का बलिदान विषपान से हुआ था। सारे शरीर पर विष के कारण छाले फूट पड़े मानों कि घाव दीपक बन गये और वह दिन भी दीपमाला का ही था।

4. पंडित सत्यपाल 'पथिक'

(1) फिर दिवाली आ गई

यह आ गई आ गई लो फिर दीवाली आ गई,
दिल पर ऋषि की याद फिर बनकर घटा सी छा गई।
जिस दिन हुए संसार में दर्शन ऋषि के आख़री,
सुन लो कथा उस दिन की जो पत्थर को भी पिघला गई।
अजमेर की भूमि थी वह और वक्त था वह शाम का,
इक जोत जब बुझने लगी हर ज़िन्दगी घबरा गई।
अब तक पिये कांचो ज़हर पूरा महीना हो गया,
सारा जिसम ज़ख़्मी हुआ नस-नस चुभन तड़पा गई।
अन्दर से जिसकी नाड़ियाँ उस कांच ने थीं काट दीं,
और ज़हर की तासीर भी अपना असर दिखला गई।
वेदों में जितने मंत्र हैं उतने ही छाले देह पर,
प्यारे ऋषि की यह दशा भक्तों के दिल दहला गई।
सारे बदन में दर्द था दुखता था चाहे रोम रोम,
पर मुस्कुराहट अन्त तक चेहरे का साथ निभा गई।
यह तो वही काया है जो रखती थी ताकत शेर की,
पर अब पड़ी मजबूर है गुल की तरह कुम्हला गई।
उसने कहा जब खोल दो दरवाज़े और सब खिड़कियाँ,
यह बात ही अब कूच का बस वक्त है समझा गई।
और फिर कहा आकर मेरे पीछे खड़े होवो सभी,
खुद ली समाधि की दशा जो अपूर्व दृश्य बना गई।
मंत्रों का उच्चारण किया और प्रेम से संध्या करी,
फिर लेटते ही तख़्त पर जिह्वा यह बोल सुना गई।

अच्छी करी लीला प्रभु इच्छा तुम्हारी पूर्ण हो,
यह कह के आँखें मूंद लीं बिजली सी इक लहरा गई।
फिर श्वास खींचा ज़ोर से और तन से बाहर कर दिया,
बस यह हवा जाती हुई परलोक में पहुँचा गई।
लो देखते ही देखते पिंजरे का पंछी उड़ गया,
हर दिल की धड़कन रुक गई हर इक नज़र पथरा गई।
ऐसी लगी इक चोट सी कैसे कहूँ कैसी लगी,
दिल की कली जल कर रही हर आँख जल बरसा गई।
जग से दयानन्द नाम का इक रहनुमा जाता रहा,
यह ख़बर थी सुन कर जिसे सारी ज़मीं थर्रा गई।
रुक जा 'पथिक' लिखते हुए आँखों में आँसू आ गए,
सूखा गला दिल भर गया विरती तेरी चकरा गई।

(2) एहसान श्रद्धानन्द का

वह कौन है जिस पर नहीं एहसान श्रद्धानन्द का।
उस का ऋणी है सकल हिन्दुस्तान श्रद्धानन्द का।
कुर्बान होकर रह गया प्यारे ऋषि की राह पर,
हर कीमती से कीमती सामान श्रद्धानन्द का।
खोला गुरुकुल कांगड़ी जागी पुरानी सभ्यता,
है आज वह फूला फला उद्यान श्रद्धानन्द का।
मजबूर विधवाओं अनाथों का सहारा हर घड़ी,
इन पे ही रहता था हमेशा ध्यान श्रद्धानन्द का।
वह सत्य का प्रेमी अहिंसा का पुजारी था मगर,
हर जुल्म से भिड़ना भी था ऐलान श्रद्धानन्द का।
जब तान कर सीना दिखाया गोलियों के सामने,
दुनियाँ ने देखा हौसला चट्टान श्रद्धानन्द का।

इतिहास के पन्नों पे यह बिल्कुल अकेली है मिसाल,
कि जामा मस्जिद में हुआ व्याख्यान श्रद्धानन्द का।
स्वाधीनता संग्राम में भी वह नहीं पीछे रहे,
अनमोल था हर शब्द नीतिवान श्रद्धानन्द का।
शुद्धि आन्दोलन को कोई ताकत झुका सकती नहीं,
हर तरफ था यह गूंजता फ़रमान श्रद्धानन्द का।
निज देश पर मिटना इसे कहते हैं लोगों देख लो,
करता है दिल से हर कोई सम्मान श्रद्धानन्द का।
इन गोलियों से क्या मिटेगा नाम ऐ अब्दुलरशीद,
जग में चमकता बलिदान श्रद्धानन्द का।
थी वीरता की ज़िन्दगी और वीरता की मौत भी,
कुछ इस कदर था आत्मा बलवान श्रद्धानन्द का।
इस देश के हर वीर से कह दो अभय होकर करे,
नभ चीरती आवाज़ में गुणगान श्रद्धानन्द का।
बलिदान उत्सव मिल के श्रद्धा से मनाएं हम सदा,
कल्याण मार्ग के 'पथिक' सुमहान श्रद्धानन्द का।

(3) घबराना नहीं चाहिए

बुराइयों को कभी जीवन में अपनाना नहीं चाहिए।
यह मीठा ज़हर होता है इसे खाना नहीं चाहिए।
बुरी संगत जहाँ देखो वहाँ जाने से शरमाओ,
कहीं सत्संग होता हो तो शरमाना नहीं चाहिए।
कोई कितना भी क्यों न हो बड़े घर बार धन वाला,
जहाँ स्वागत नहीं होता वहाँ जाना नहीं चाहिए।

लगें पेड़ों पे फल ज्यों ही झुकें सब डालियां उनकी,
यहाँ ऐश्वर्य को पाकर के इतराना नहीं चाहिए।
अगर कुछ दे नहीं सकते तो कहदो माफ़ कर बाबा,
मगर दुत्कार कर याचक को लौटाना नहीं चाहिए।
निरादर से मिले दौलत ज़माने की तो मत छूना,
मिले जो प्रेम से तिल भी तो ठुकराना नहीं चाहिए।
पड़ा भट्टी में जब सोना ''पथिक'' वह बन गया कुन्दन,
प्रभु जब कष्ट देता है तो घबराना नहीं चाहिए।

(4) गीत

ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है।
मानव तू परिवर्तन से काहे को डरता है।
जब से दुनियाँ बनी है तब से रोज बदलती है,
जो शै आज यहाँ है कल वो आगे चलती है,
देख के अदला बदली तू आहें क्यों भरता है,
मानव तू परिवर्तन से.......
दुःख सुख आते-जाते रहते सब के जीवन में,
पतझड़ और बहारें दोनों जैसे गुलशन में,
चढ़ता है तूफान कभी और कभी उतरता है,
मानव तू परिवर्तन से......
कितनी लम्बी रात हो फिर भी दिन तो आएगा,
जल में कमल खिलेगा फिर से वो मुस्कराएगा,
देता है जो कष्ट वही कष्टों को हरता है,
मानव तू परिवर्तन से....

वो ही दाना फलता है जो खाक में मिल जाए,
सहे 'पथिक' जो कांटे वो ही मंजिल अपनी पाए,
भट्टी में पड़ कर सोने का रंग निखरता है,
मानव तू परिवर्तन से......

(5) उसे इन्सान कहते हैं

किसी के काम जो आए उसे इंसान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाए उसे इंसान कहते हैं।। किसी..... ।1।
कभी धनवान है कितना, कभी इंसान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दुःख है, इसी का नाम जीवन है।
जो मुश्किल में न घबराए, उसे इन्सान कहते हैं।। किसी... ।2।
यह दुनियाँ एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रोकर।
जो गिरकर फिर संभल जाए उसे इंसान कहते हैं।। किसी... ।3।
अगर गलती रूलाती है तो यह राह भी दिखाती हैं।
बशर गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती हैं।
जो गलती करके पछताए उसे इंसान कहते हैं। किसी.... ।4।
अकेले ही जो खा-खाकर सदा गुजरान करते हैं।
यूं भरने को तो दुनियाँ में पशु भी पेट भरते हैं।
'पथिक' जो बाँट कर खाए, उसे इंसान कहते हैं। किसी.... ।5।

(6) जगत् में समय बड़ा बलवान्

सबके सर पर राज करे हो निर्धन या बलवान। जगत....
पल में राज पलट जाते हैं, तख्तोताज उलट जाते हैं।

घटने वाले बढ़ जाते हैं, बढ़ने वाले घट जाते हैं।
पल में क्या से क्या हो जाये, हर कोई हैरान।।1।। जगत...
कल था मस्त जो रंगलियों में, रंग महल फूलों कलियों में।
आज उसी को हमने देखा, भीख मांगते इन गलियों में।
समय की उँगली पर दुनियाँ में नाचे हर इन्सान।।2।। जगत....
इस समय खुशियाँ लाता है, मानव गाता मुसकाता हैं।
ऐसा दिन भी आता है, जब दिल का बाग़ उजड़ जाता हैं।
पल में आँसू बन बहती है, चेहरे की मुस्कान।।3।। जगत....
'पथिक' दुःख में फँसते देखा,? बीच भँवर के धँसते देखा।
उठी पलक तो लहरों पर ही, खिलखिला कर हँसते देखा।
और उठा कर खुद साहिल पै छोड़ गया तूफान।।4।। जगत....

(7) भजन

जहान में जो घड़ा गया है, आखिर इक दिन वो चूर होगा।
अकड़ने वालों का देख लेना, पड़ा जमीं पर गुरूर होगा।।
बनेगा जैसा अमाल नामा, उसी तरह का मिलेगा जामा।
किताब में जो लिखा गया हैं, जरूर होगा, जरूर होगा। जहान...
जो सुरमा आँखों में खुद लगाया, वहीं न तुझको तो नज़र आया।
भला वो कैसे दिखाई देगा, जो तेरी नज़रों से दूर होगा।। जहान...
भंवर में डूबेंगे और तरेंगे, किया जिन्होंने वही भरेंगे,
तेरा तो होगा न बाल बांका, अगर तू नर बेकसूर होगा। जहान...
बड़ी यह लम्बी है रात काली, क्या सोचता है ओ घर के वाली,
पथिक न जब तक दिया जलेगा, कभी न कमरे में नूर होगा। जहान..

(8) चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो

कण कण में बसा प्रभु देख रहा चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कोई उसकी नज़र से बच न सका चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण कण में बसा प्रभु.....
यह जगत रचा है ईश्वर ने जीवों के कर्म करने के लिए।
कुछ कर्म नए करने के लिए जो पहले किए भरने के लिए।
यह आवागमन का चक्र चला चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण कण में बसा प्रभु....
इनसान शुभाशुभ कर्म करे अधिकार मिला है ज़माने में।
कर्मों में स्वतंत्र बना है मगर परतंत्र सदा फल पाने में।
है न्याय प्रभु का बहुत कड़ा चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण-कण में बसा प्रभु......
सब पुण्य का फल तो चाहते हैं पर पुण्य कर्म नहीं करते हैं।
फल पाप का लोग नहीं चाहते जिस में दिन रात विचरते हैं।
मिलता है सभी को अपना किया चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो।
कण कण में बसा प्रभु......
इस दुनियाँ में कृत कर्मों का फल हरगिज़ माफ़ नहीं होता।
जब तक न यहाँ भुगतान करो यह दामन साफ़ नहीं होता।
रहे याद 'पथिक' यह नियम सदा चाहे पुण्य करो चाहे पाप करो
कण कण में बसा प्रभु......

(9) पत्थर के देवता

देखो दीवाने लोग भी कैसा कमाल करते हैं।
पत्थर को ईश्वर की जगह पर इस्तेमाल करते हैं।
खुद ही बना लें मूर्ति ख़ुद बैठ कर पूजा करें,
पूछो तो कहदें आप यह कैसा सवाल करते हैं।

मन्दिर का फाटक बंद कर ताला लगा दें रात को,
समझें इसे परमात्मा पर देखभाल करते हैं।
इतने बड़े संसार का रखता है ख़ुद ख़याल जो,
कितने ग़ज़ब की बात है उसका ख़यला करते हैं।
पत्थर के हैं ये देवता फिर इनसे कैसा मांगना,
क्या कभी जड़ पदार्थ भी कभी देकर निहाल करते हैं।
चाहे मिलें सौ नेमते चाहे इन्हें कुछ न मिले,
न तो करें यह शुकरिया न ही मलाल करते हैं।
है 'पथिक' सच्ची बात पूजा ठाकुरों की लोग ये,
बुद्धि को अपने आप से बाहर निकाल करते हैं।

(10) धर्म की महिमा

धर्म की महिमा अपार। धर्म पर ठहरा संसार।
धर्म की रक्षा करो। धर्म है सब का आधार।
धर्म का रुतबा बड़ा धर्म का ऊँचा मुकाम।
धर्म ईश्वर का नियम धर्म कुदरत का निज़ाम।
धर्म को समझो ज़रा धर्म पर कर लो विचार....
धर्म तो इनसान की ज़िन्दगी का नाम है।
धर्म तो भगवान का इक अमर पैग़ाम है।
वक्त पड़ने पर सदा धर्म पर होना निसार....
धर्म को पहचानते लोग सब रहते यहाँ।
फिर मज़हब मत पंथ को धर्म क्यों कहते यहाँ।
धर्म को आकाश से रख दिया नीचे उतार....
दुश्मनों के ख़ौफ से धर्म डर सकता नहीं।
तीर से तलवार से धर्म मर सकता नहीं।
आग में पड़ कर सदा आ गया सदा आ गया इस पे निखार.....

जब कभी संसार में धर्म को मारा गया।
मिट गई सब ताकतें दबदबा सारा गया।
देख लो इतिहास में हैं मिसालें बेशुमार.....
जब यहाँ कर्त्तव्य को धर्म समझा जाएगा।
तब चमन उजड़ा हुआ झूमेगा मुसकाएगा।
'पथिक' छाएगी यहाँ हर तरफ़ फिर से बहार......

(11) जाकर देख लिया

काशी जा कर देख लिया मथुरा जाकर देख लिया।
कहीं पे मन की मैल न उतरी ख़ूब नहा कर देख लिया।
पता नहीं वह कहाँ रहता है।
यहाँ पे है कि वहाँ रहता है।
घंटा डफ घड़ियाल मजीरे झाँझ बजा कर देख......
वस्त्राभूषण भी पहनाए।
शयन जागरण भी करवाए।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ाया तिलक लगा कर देखा.....?
जिस वस्तु को हाथ लगाया।
किसी पे अपना नाम न पाया।
सब कुछ उसका दिया हुआ था नज़र उठा कर देख....
मन में प्रश्न उठा इक ऐसे।
जड़ वस्तु हो चेतन कैसे।
पत्थर की मूरत के आगे शीश झुका कर देख.....
यह मजबूर उमरिया तरसी।
अमृत की इक बूंद न बरसी।
'पथिक' मिला आनन्द प्रभु का ध्यान लगा कर देख.....

(12) दान की महिमा

ऐ दो हाथों वाले मानव श्रम से न घबराया कर।
सौ सौ हाथों की ताकत से धन को ख़ूब कमाया कर।
ऐ दो हाथों वाले मानव....
सौ हाथों की तरह कमाकर। बाँटो हाथ हज़ार उठाकर।
मानव जीवन सफल बना लो दान भावना को अपना कर।
देश काल और पात्र देखकर निज कर्त्तव्य निभाया कर।
ऐ दो हाथों वाले मानव.....
होवे तेरा दान निराला। अंधकार को हरने वाला।
सद्‌विद्या की वृद्धि होवे फैले चारों और उजाला।
शुभ कर्मों की शुभ सुगन्ध से जीवन को महकाया कर।
ऐ दो हाथों वाले मानव......
ख़ुशियों से भरपूर रहेगा। सदा चमकता नूर रहेगा।
बना रहेगा यश का भागी अपयश कोसों दूर रहेगा।
ऐ दो हाथों वाले मानव.....
सदा पवित्र कमाई करना। परोपकार भलाई करना।
मेहनत से पीछे मत हटना जग से नष्ट बुराई करना।
'पथिक' समझकर बात वेद की औरों को समझाया कर।
ऐ दो हाथों वाले मानव.....

(13) औरों के वासते

ख़ुदग़र्ज़ बन के यूं ही जीवन के दिन बिताए।
है ज़िन्दगी वही जो औरों के काम आए।
ये चांद ये सितारे औरों के वासते हैं।
संसार के नज़ारे औरों के वासते हैं।
कुदरत ने सभी ख़जाने औरों पे ही लुटाए।
है ज़िन्दगी वही जो ....

औरों के वासते ही नदियों का बहता पानी।
पेड़ के फल बढ़ाएं औरों की ज़िन्दगानी।
बादल न अन्न खाते खेतों में जो उगाए।
है ज़िन्दगी वही जो.......

विद्वान् को न देता नहीं मित्र को खिलाता।
वह नर जो अन्न खाता उस का विनाश लाता।
खाता है जो अकेला समझो वह पाप खाए।
है ज़िन्दगी वहीं जो.......

पापों से मुक्त करता है यज्ञ कर के खाना।
लेकिन है पाप केवल अपने लिए पकाना।
क्यों न 'पथिक' यह जीवन उपकार में लगाए।
है ज़िन्दगी वही जो.....

(14) रुपैया

यहाँ बाबा बड़ा न भैय्या सब से बड़ा रुपैया।
इसी के सारे रिश्ते नाते सब का यही रवैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैय्या..........

गोल रुपैया चांदी का हो या काग़ज़ का नोट।
छोटा सा है फिर भी इसकी बहुत बड़ी है ओट।
इसके आगे थम जाती है वेगवती पुरवैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैय्या.......

किसी तरह से मिले रुपैया यत्न करें दिन रैन।
पल दो पल के लिए भी देखा नहीं किसी को चैन।
धन की वर्षा से भी मन की भरती नहीं तलैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैय्या.......

पास रुपैया हो तो सारे बन जाते हैं यार।
लेकिन ख़ाली जेब देख कर देते हैं दुत्कार।
आज ढूँढता फिरे सुदामा मिलता नहीं कन्हैया।
यहाँ बाबा बड़ा न भैय्या........
'पथिक' रुपैया के चक्कर में चला आज का दौर।
कहीं देखलो बना आदमी कठपुतली के तौर।
नाच रहा है बिना ताल के ता थैय्या ता थैय्या।
यहाँ बाबा बड़ा न भैय्या......

(15) दुनियाँ रंग रंगीली

दुनियाँ रंग रंग़ीली है यह दुनियाँ रंग रंगीली है।
अन्दर इसके कूड़ा कर्कट बाहर से चमकीली है।
1. यहाँ समझदारी से हर कर्त्तव्य निभाना पड़ता है।
बड़े ग़ौर से देखभाल के पांव टिकाना पड़ता है।
दुनियां रंग रंगीली है यह.........
2. मिलें यहीं सत्पुरुष यहीं पर बुरे लोग भी मिलते हैं।
जिस टहनी पर कांटे उगते वहीं फूल भी खिलते हैं।
कहीं तो उपजाऊ धरती और कहीं पथरीली है।
दुनियां रंग रंगीली है यह.......
3. कभी गगन पर गहरे दुःख की घोर घटाएं छाती हैं।
कभी चन्द्र सूरज की किरणें नव जीवन बरसाती हैं।
आने वाले हर मौसम की हो जाती तबदीली है।
दुनियां रंग रंगीली है यह........
4. लोग जिसे कहते हैं दुनियाँ क्या क्या रंग दिखाती है।
होनी होने से रह जाती है अनहोनी हो जाती है।
'पथिक' किसी ने राज़ न जाना ऐसी छैल छबीली है।
दुनियां रंग रंगीली है यह.......

(16) माता पिता का ऋण

हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं।
इनके तो एहसान हैं इतने गिना सकते नहीं।
यह कहाँ पूजा में शक्ति यह कहाँ फल जाप का।
हो तो हो इन की कृपा से खातमा संताप का।
इनकी सेवा से मिले धन ज्ञान बल लम्बी उमर,
स्वर्ग से बढ़ कर है जग में आसरा माँ बाप का।
इनकी तुलना में कोई वस्तु भी ला सकते नहीं।
हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं।
देख लें हम को दुःखी तो भर लें अपने नैन ये।
इक हमारे सुख की खातिर तड़पते दिन रैन ये।
भूख लगती प्यास न और नींद भी आती नहीं,
कष्ट हो जन पे हमारे हो उठें बेचैन ये।
इन से बढ़ कर देवता भी सुख दिला सकते नहीं।
हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं।
पढ़ लो वेद और शास्त्र का ही एक यह भी मर्म है।
योग्यतम सन्तान का यह सब से उत्तम कर्म है।
जगत् में जब तक जिये सेवा करें माँ बाप की।
इनके चरणों में यह तन मन धन लुटाना धर्म है।
यह 'पथिक' वह सत्य है जिस को झूठा सकते नहीं।
हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं।

(17) तोते उड़ जाना

उड़ जाना कर लईं यत्न हज़ार तोते उड़ जाना।
इस पिंजरे दे नौ दरवाज़े।
धुर तो जिस दिन पए आवाज़े।
रूप हवा दा धार तोते उड़ जाना। उड़ जाना कर लईं....

हरियल तोता बड़ा निराला।
पिंजरा मिलेया सब तों आला।
मिले न बारम्बार तोते उड़ जाना। उड़ जाना कर लईं...
चुग के अपना इक इक दाना।
करके ख़त्म हिसाब पुराना।
अन्त उड़ारी मार तोते उड़ जाना। उड़ जाना कर लईं...
आख़िर पिंजरा ख़ाली होना।
मुड़ एह पंछी हथ नहीं औना।
रख लईं ज़न्दरे मार तोते उड़ जाना। उड़ जाना कर लईं.....
न एह तेरा न एह मेरा।
समझ मुसाफिर रैन बसेरा।
मिल जुल के दिन चार तोते उड़ जाना। उड़ जाना कर लईं....
सदा 'पथिक' शुभ कर्म कमाओ।
उस परमेश्वर दे गुण गाओ।
करो प्रभु नाल प्यार तोते उड़ जाना। उड़ जाना कर लईं....

(18) मानव तू अगर चाहे

मानव तू अगर चाहे दुनियाँ को झुका देना।
बस ईश्वर के दर पर सिर अपना झुका देना।।
राजी हो प्रभु जिसने वह काम सही होगा।
भगवान् जो चाहेगा दुनियाँ में वही होगा।
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना।।
रक्षक है अनाथों का दुनियाँ का सहारा है।
भव पार किया उसको जिसने भी पुकारा है।
उसे अपना बना करके उलझन को मिटा देना।।

धरती और सागर के रत्नों को जो पाना हो।
आकाश में उड़ना हो पाताल में जाना हो।
डोरी परमेश्वर को पहले पकड़ा देना।।
चाहेंगी सदा तुझको खुशियाँ और आशाएँ।
चूमेंगी चरण - तेरे सब और सफलताएँ।
जीवन को 'पथिक' उसकी राहो पै लगा देना।।

(19) जिस आदमी को सिर झुके

जिस आदमी का सिर झुके भगवान के आगे।
सारी दुनियाँ झुकती है उस इन्सान के आगे।
खुले आकाश में उड़ती पतंगें साथ में डोरी
उसे क्या डर भला जिसकी प्रभु के हाथ में डोरी
ताकत फीकी पड़ती उस बलवान के आगे।।1।।
बसे वह देवता बरकर जमाने के ख्यालों में
उसी के नाम के चर्चे अन्धेरों में उजालों में
सूरज भी क्या चमकेगा उसकी शान के आगे।।2।।
बड़े से बड़ा लालच उसे फिसला नहीं सकता
मुसीबत के दिनों में वो कभी घबरा नहीं सकता।
उसको ठहरा पाओगे हर तूफान के आगे।।3।।
वह सारे इम्तहानों में हमेशा पास होता है
'पथिक' जीवन की राहों में कभी ना उदास होता है
मंजिल खुद आ जाती है उस मेहमान के आगे।।4।।

(20) कण-कण में जो रमा है

कण-कण में जो रमा है हर दिल में समाया
उसकी उपासना ही कर्त्तव्य है बताया।।

दिल सोचता है खुद वह कितना महान् होगा।
इतना महान् जिसने संसार है रचाया।।

देखे ये तन के पुर्जे करते हैं काम कैसे।
जोड़ों के बीच कोई कब्जा नहीं लगाया।।

एक पल की रोशनी से सारा जहान् चमका।
सूरज का एक दीपक आकाश में सजाया।।

अब तक ये गोल धरती चक्कर लगा रही है।
फिरकी बनाके कैसी तरकीब से घुमाया।।

कठपुतलियों का हमने देखा अजब तमाशा।
छुपकर किसी ने सबको संकेत से नचाया।।

हर वक्त बनके साथी रहता है साथ सबके।
नादान 'पथिक' उसको तू जानने न पाया।।

(21) दयानन्द के सैनिक

जब चारों ओर जहालत थी।
इस देश की बिगड़ी हालत थी।
सब ओर अविद्या फैली थी।
जीवन की चादर मैली थी।
जब धर्म के ठेकेदारों का।
अंग्रेज़ के अत्याचारों का।
आतंक सभी पर छाया था।
ग़ैरत को पसीना आया था।
होती थी शादी बचपन में।
लड़के बरबाद लड़कपन में।
जो लड़की विधवा होती थी।
जीवन भर बैठी रहती थी।
करते नफ़रत जिन भाइयों से।
वे जा मिलते इसाइयों से।
या मुसलमान बन जाते थे।
कबरों पर शीश झुकाते थे।
तब ऋषि दयानन्द आया था।
वेदों का बिगुल बजाया था।
अज्ञान के ताले तोड़ दिए।
बहमों के भांडे फोड़ दिए।
हर पर्वत से टकराया था।
सागर को भी आज़माया था।
मुँह मोड़ दिया तूफ़ानों का।
दिल मोम किया चट्टानों का।
कोई आज भी बाकी रहता हो।
जो वेद अनर्गल कहता हो।

जब जी चाहे वह आ जावे।

अपना हर भरम मिटा जावे।

हम दयानन्द के सैनिक हैं।

और देश धर्म के रक्षक हैं।

हम नहीं किसी से डरते हैं।

रक्षा अपनी ख़ुद करते हैं।

जो टेड़ी आँख दिखाएगा।

हम को हानि पहुँचाएगा।

मिट्टी में उसे मिला देंगे।

और नाम निशान मिटा देंगे।

कह देते हैं मक्कारों से।

बेईमान से ग़द्दारों से।

इस देश के पहरेदार हैं हम।

हर वक्त 'पथिक' तैयार हैं हम।

(22) ख़ुदग़र्ज़ी के दिलों .....

ख़ुदग़र्ज़ी के दिलों में तूफान नज़र आते हैं।

अपनों में भी पराए नुक्सान नज़र आते है।।

अपना ही उल्लू सीधा दुनियाँ में जो करते,

अपने लिए है जीते, अपने लिए हैं मरते।

हेवां है दरअसल वो इन्सान नज़र आते हैं। ख़ुदगर्जी....

खिलते हैं झाड़ियों में गुल बेमिसाल अक्सर,
सच है गुदड़ियों में मिलते हैं लाल अक्सर।
दुनियाँ की ठोकरों में गुणवान नज़र आते हैं। ख़ुदगर्जी....
कुछ लोग लखपती हैं पर हैं कंगाल दिल के,
कुछ रखते हैं चार तिनके पर हैं विशाल दिलके।
मुझ को तो ऐसे निर्धन धनवान नज़र आते हैं। ख़ुदगर्जी....
जब भूख प्यास हैं पर देती नहीं दिखाई,
आँखों की पथिक ऐसे नहीं ईश तक रसाई।
अन्दर के पट खुलें तो भगवान् नज़र आते हैं। ख़ुदगर्जी....

(23) चमकेंगे जब तलक

चमकेंगे जब तलक़ यह, सूरज व चाँद तारे।
हम हैं ऋषि दयानंद तक तक ऋणी तुम्हारे।।
भारत की जब यह नैय्या, मंझधार में पड़ी थी।
तू ने ही बन के केवट, पहुँचा दिया किनारे। चमकेंगे....
हम को पिलाया अमृत, ख़ुद ज़हर पी गया तू।
तू ने हमारी खातिर, सब कष्ट थे सहारे। चमकेंगे....
क़ातिल को अपने स्वामी, जीवन का दान दे तू।
तेरी जान के भी दुश्मन, तुम्हें जान से थे प्यारे। चमकेंगे....
ते वो दिया था जिसने, लाखों के दिये जलाये।
दी रौशनी 'पथिक' वो, घर जगमगाये सारे।। चमकेंगे....

(24) प्रभु का ध्यान

उसके चरणों में तो हुआ ध्यान तुम्हारा ही नहीं।
तुझ को धन प्यारा है भगवान तो प्यारा ही नहीं।।
क्यों सुनेगा भला परमात्मा आवाज़ तेरी।
क्या हुआ कितने ही मैदान अगर मार लिए।
अपने इस मन को तो अब तक तूने मारा ही नहीं।
यह हवा आज तो उल्टी ही जमाने में चली।
भले इंसान का दुनियाँ में गुजारा ही नहीं।
वो क्या उस पार किनारे पै भला पहुँचेगा।
जिसने मंझधार में किश्ती को उतारा ही नहीं।
तू है जिसने कभी उसको ना 'पथिक' याद किया।
वो है जिसने कभी तुझको तो बिसारा ही नहीं।

(25) उठो दयानंद के.....

उठो दयानंद के सिपाहियों समय पुकार रहा है।
देश द्रोह का विषधर फन फुंकार रहा है।।
उठो विश्व की सूनी आँखें काजल मांग रही हैं।
उठो अनेकों द्रुपद सुतायें आंचल मांग रही हैं।
मरघट को पनघट सा कर दो जग की प्यास बुझा दो।
भटक रहे हैं जो मरुस्थल में उनको राह दिखा दो,
गले लगा लो उनको जिनको जग दुत्कार रहा है।। उठो.....

तुम चाहो तो पत्थर को भी मोम बना सकते हो।
तुम चाहो तो खारे जल को भी सोम बना सकते हो,
तुम चाहो तो बंजर में भी बाग़ लगा सकते हो,
तुम चाहो तो पानी में भी आग लगा सकते हो।
जातिवाद जग की नस-नस में ज़हर उतार रहा है। उठो....
याद करो क्यों भूल गये जो वचन ऋषि को दिया था,
शायद वायदा याद नहीं जो अपने कभी किया था।
वचन दिया था ओम् पताका कभी न झुकने देंगे।
लहू शहीदों का गद्दारों को धिक्कार रहा है। उठो.....
कैसे आग बुझा पाओगे, आग ये बहुत लगी हैं।
उजली-उजली दिखने वाली हर चादर मैली हैं।
लेखराम का लहू पुकारे आँख जरा तो खोलो,
एक बार मिलकर सारे ऋषि दयानंद की जय बोलो।
वेद ज्ञान व्यथित सूर्य अब तुम्हें निहार रहा है।। उठो....

(30) जीत-हार

कहीं पर जीत होती है कहीं पर हार होती है।
यही है ज़िन्दगी प्यारे जो दिन दो चार होती है।
जो पेड़ों को लगाते हैं सभी तो फल नहीं खाते,
यहाँ प्रबन्ध भी कोई चीज़ आखिरकार होती है।
किसी भी काम में जब तक न हो मरजी विधाता की,
बड़ी कोशिश करे कोई मगर बेकार होती है।
कभी खिलवाड़ फूलों से कभी आकाश से बातें,
कभी तूफान में नैय्या पड़ी मंझधार होती है।

यह बचपन ही सहारा है जवानी और बुढ़ापे का,
अजी यह नींव है जिस पर खड़ी दीवार होती है।
यह जीवन एक नदिया है तो सुख दुख दो किनारे हैं,
ये दोनों साथ रहते हैं जहाँ जलधार होती है।
यह दौलत नाव ही समझो जो आती और जाती है,
कभी इस पार होती है कभी उस पार होती है।
'पथिक' मंज़िल पे सब पहुँचें कोई आगे कोई पीछे,
कि हर इनसान की जग में अलग रफ़्तार होती है।

(27) तेरा ठौर ठिकाना

पीपल के पत्ते के ऊपर तेरा ठोर ठिकाना है।
क्या जाने किस वक्त टूट कर मिट्टी में मिल जाना है।
क्या जाने किस वक्त टूट कर........
पका हुआ ख़रबूजा जैसे स्वयं छोड़ दे डाली को।
ऐसे ही तुम छोड़ के जाना इस दुनियाँ मतवाली को।
मृत्यु का बन्धन कट जावे अमृत पद को पाना है।
क्या जाने किस वक्त टूट कर......
उत्तम मध्यम अधम पाश को परमेश्वर ढीला कर देवे।
व्रत नियमों के परिपालन से दामन में ख़ुशियां भर देवे।
हो जायें अपराध रहित नर जीवन शुद्ध बनाना है।
क्या जाने किस वक्त टूट कर........
हँसना गाना मौज मनाना खाना पीना सोना है।
नियत समय तक इन सबसे संबंध सभी का होना है।
अन्त काल के महागाल में ही हर हाल समाना है।
क्या जाने किस वक्त टूट कर........

यह काया तो भस्म बनेगी आख़िर इसका अन्त यही है।
अग्नि वायु जल सभी छोड़ दें वेद में सच्ची बात कही है।
'पथिक' सिमर ले ओम् नाम को गर मीठा फल पाना है।
क्या जाने किस वक्त टूट कर.......

(28) बन्दे मन के गन्दे

बन्दे मन के गन्दे चले निष्फल सांस तुम्हारे।
दिन तो कटे धन की धुन में और नींद में रात गुज़ारे।
बन्दे मन के गंदे...........

नैन नशे में चूर रहें। पग सत्संग से दूर रहें।
हाथ करें न दान कभी। कान सुने नहीं ज्ञान कभी।
धर्म कर्म व्यवहार नहीं। मन में दया उपकार नहीं।
जिह्वा मधुर वचन नहीं बोले कड़वे बहुत उचारे।
बन्दे मन के गंदे.......

धन दौलत जो पास तेरे। नौकर चाकर दास तेरे।
बहुत है कारोबार तेरा। इतना बड़ा परिवार तेरा।
दफ्तर और मकान सभी। बाग़ बग़ीचे शान सभी।
इक दिन छोड़ के सब जाना है दोनों हाथ पसारे।
बन्दे मन के गंदे......

जिसने तुझे हैं जन्म दिया। उस को कभी न याद किया।
विषयों में इतना फूल गया। परम पिता को भूल गया।
उसके बिना कोई ठौर नहीं। 'पथिक' सहारा और नहीं।
परमेश्वर की शरण में आजा तज कर सभी सहारे।
बन्दे मन के गन्दे.......

(29) माने न माने इनसान

दुनियाँ बनाने वाला, दुनियाँ मिटाने वाला,
सब का है दाता भगवान। माने न माने इनसान।
रंग रंग के फूल खिलाए, सूरज और चाँद बनाए,
सागर धरती व आसमान। माने न माने इनसान।
आँखें न हाथ उसके न कोई आकार देखो।
न ही औज़ार कोई न कोई आधार देखो।
फिर भी यह रचना उसकी अद्‌भुत संसार देखो।
पतझड़ दिखलाने वाला, बादल बरसाने वाला,
सब का है दाता भगवान। माने न माने इनसान.......
चलती न रिश्वतखोरी उस के दरबार कोई।
अपना बेगाना उसका न रिश्तेदार कोई।
सुनता है वह तो सबकी कर ले पुकार कोई।
सज्जन हंसाने वाला, दुर्जन रुलाने वाला,
सब का है दाता भगवान। माने न माने इनसान.....
निर्जन भयानक बन से चाहो गर पार जाना।
तप और भक्ति के द्वारा मुक्ति के द्वार जाना।
उलझन सुलझाने वाला, मार्ग दिखलाने वाला,
सबका है दाता भगवान। माने न माने इनसान........

(30) तेरी पूजा

मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ
जब कभी तेरे मंदिर में आया करूं।
हे प्रभु मुझ को इतना बता दो जरा
कौन सी भेंट सेवा में लाया करूं।
मूर्ति को तो घड़ता है यह आदमी
और फूलों को भगवान बनाता है तू।
इस तरफ आदमी की है कारीगरी
उस तरफ सारे जग का विधाता है तू।
किस तरह फूल जो कि हैं तेरी कृति
आदमी की कृति पर चढ़ाया करूं।
आदमी ने बना ली तेरी मूर्ति
तेरी सूरत कहीं नज़र आती नहीं।
उम्र भर इस को यूं ही खिलाते रहो
मूर्ति तो कोई चीज़ खाती नहीं।
मूर्ति तुझे किस तरह मैं रिझाया करूं।
मानता हूँ कि तू मूर्ति में भी है
इसके बाहर भी तो तू ही मौजूद है।
घर के बाहर ही बैठा मिले तू अगर
फिर अन्दर से बुलाना तो बेसूद है।
'पथिक' है मूर्ति में ही यह मान कर एक देशी
तुझे क्यों बनाया करूं।

(31) क्या होगा

करम खोटे तो ईश्वर के भजन गाने से क्या होगा।
किया परहेज न कुछ भी दवा खाने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर...........

समय पर एक ही ठोकर बदल देती है जीवन को,
जो ठोकर से भी न समझे तो समझाने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर............

समय बीता हुआ हरगिज़ कभी न हाथ आएगा,
लिया चुग खेत चिड़ियों ने तो पछताने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर............

मुसीबत तो टले मर्दानगी के ही थपेड़ों से,
मुक़द्दर पर भरोसा कर के सो जाने से क्या होगा।
करम खोटे तो ईश्वर............

तू खाली हाथ आया है व खाली हाथ जाएगा,
'पथिक' मालिक करोड़ों का भी कहलाने से क्या होगा
करम खोटे तो ईश्वर.............

(32) दयानंद और आर्य समाज

जब ऋषि दयानंद आया। अंधकार यहाँ था छाया।
भटक रहे थे भारतवासी सत्य मार्ग दिखलाया रे.......
जब ऋषि दयानंद आया......

फैल चुकी थी घोर अविद्या वेद नज़र से दूर हुआ।
जुल्मों सितम और व्यसनों से था देश मेरा भरपूर हुआ।
सोए हुओं की नींद खुली जब वेद का बिगुल बजाया रे।
जब ऋषि दयानंद आया........

कहीं मुसलमां कहीं ईसाई जाल बिछा कर बैठे थे।
फंसे हुए चिड़ियों की तरह हम शीश झुका कर बैठे थे।
काट दिए भ्रम जाल ऋषि ने हम को आज़ाद कराया रे।
जब ऋषि दयानंद आया.........

ऋषि ने तो इस इस देश पे अपना तन मन धन सब वार दिया।
हमने उसे बदले में ज़हर इक बार नहीं कई बार दिया।
हंस हंस पी गया ज़हर के प्याले अमृत हमें पिलाया रे।
जब ऋषि दयानंद आया........

चोर उचक्के बने चौधरी सत्य धर्म थे मौन यहाँ।
ऋषि दयानंद न आते तो हमें बचाता कौन यहाँ।
वैदिक धर्म 'पथिक' रखवाला आर्य समाज बनाया रे।
जब ऋषि दयानंद आया........

(33) वैदिक स्वरूप

ईश्वर को ढूंढने का वैदिक स्वरूप क्या है।
अनजान है यह दुनियाँ कुछ भी नहीं पता है।
तप त्याग भावना से निष्काम कर्म करना।
ऊँचे चरित्र वाला इनसान देवता है।

जब हो प्रभु से मिलना इच्छा हो दर्शनों की।
इस का सही तरीका सन्ध्या उपासना है।
अन्तःकरण की शुद्धि कर के शरीर निर्मल।
उसके समीप जाना ऋषियों का रास्ता है।
एकान्त शान्त मन हो घर या नदी किनारे।
हो उस का जप निरन्तर कण कण में जो बसा है।
यम नियम का निभाना कर्त्तव्य नित्य जानो।
इसके बग़ैर कोई रास्ता न दूसरा है।
आसन लगा के बैठो व प्राणायाम करना।
फिर प्रत्याहार होकर निर्विघ्न धारणा है।
तब ध्यान मग्न हो के ऐसी लगे समाधि।
यह भी न 'पथिक' सूझे संसार चीज़ क्या है?

(34) गीत प्रभु जी दे गाया करो

व्यर्थ समय न गंवाया करो। गीत प्रभु जी दे गाया करो।
इक पल वी परमेश्वर नूँ दिल यों कदे न भुलाया करो।
व्यर्थ समय न गंवाया करो..........

हक जीवन दा लै के आया दुनियां ते हर प्राणी।
हर दिल अन्दर प्रभु वसदा ए सत्पुरुषां दी वाणी।
दिल न किसे दा दुखाया करो। गीत प्रभु जी दे गाया करो।
व्यर्थ समय न गंवाया करो..........

मानव मानव एक बराबर ईश्वर दे सब बन्दे ।
ख़ुदग़र्ज़ां ने आन बिछाए मज़बां दे सब फन्दे ।
सब मत भेत मिटाया करो । गीत प्रभु जी दे गाया करो ।
व्यर्थ समय न गंवाया करो..........

हुन्दा आया हो के रहवेगा परमेश्वर दा भाणा ।
जो मिलदा ए वण्ड के खा लौ जग तों कीह लै जाणा ।
कल्लेयां कदे वी न खाया करो । गीत प्रभु जी दे गाया करो ।
व्यर्थ समय न गंवाया करो..........

तूं वी मुसाफिर मैं वी मुसाफिर सिर ते रात हनेरी ।
'पथिक' कहे जो मंजिल तेरी ओहिया ई मंजिल मेरी ।
भुल्लेयां नूं राह दिखाया करो । गीत प्रभु जी दे गाया करो ।
व्यर्थ समय न गंवाया करो..........

(35) संसार ते आ के

संसार ते आके बन्देया रब नूं तूं क्या भुलाया ।
गुणगान प्रभु दा कर लै मौका सुनहरी आया ।
संसार ते आ के बन्देयां...........

तूं जन्म जन्म कुरलाया । फिर मानस चोला पाया ।
विषयां दे आखे लग के चोले नूं दाग़ लगाया ।
संसार ते आ के बन्देयां...........

तैनूं माया ने भरमाया। तूं लालच खूब बधाया।
माया दे भरे ख़जाने पर अजे सबर न आया।
संसार ते आ के बन्देयां...........

तूं प्यार जिन्हां नाल पाया। ते मेरा मेरा लाया।
मतलब दे साथी सारे किस ने है साथ निभाया।
संसार ते आके बन्देया...........

तैनूं बड़ा 'पथिक' समझाया। क्यों सुत्तेयां वक्त गंवाया।
तद औनगे होश ठिकाने जद मौत बुहा खड़काया।
संसार ते आके बन्देयाा...........

(36) मैं तेरे प्रेम की धुन

मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ जब कभी तेरे मंदिर में आया करूं।
हे प्रभु मुझ को इतना बता दो जरा कौनसी भेंट चरणों में लाया करूं।
मूर्ति को तो घड़ता है यह आदमी और फूलों को भगवान बनाता है तू।
इस तरफ आदमी की हैं कारीगरी उस तरफ सारे जग का विधाता है तू।
किस तरह फूल जो कि है तेरी कृति आदमी की कृति पर चढ़ाया करूं।
मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ........

आदमी ने बनाली तेरी मूर्ति तेरी सूरत कही नज़र आती नहीं।
तू जो खाता नहीं है प्रभु इसलिए मूर्ति भी कोई चीज़ खाती नहीं।
मूर्ति को खिलाना बेकायदा हुआ फिर तुझे किस तरह मैं रिझाया करूं।
मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ......

मानता हूँ कि तू मूर्ति में भी है, इसके बाहर भी तो तू ही मौजूद है।
घर के बाहर ही बैठा मिले तू अगर फिर अन्दर से बुलाना तो बेसूद है।
'पथिक' है मूर्ति में हो यह मान कर एक देशी तुझे क्यों बनाया करूं।
मैं तेरे प्रेम की धुन में गाता हुआ........

(37) गाये जा गाये जा

गाये जा गाये जा भगवान की महिमा गाये जा।
सुबह शाम इस मन मन्दिर में झाड़ू रोज लगाये जा।।
तरह-तरह के खेल हैं इसमें दुनियां एक तमाशा है,
कहीं खुशी है कहीं गर्मी है आशा कहीं निराशा है।
चाहे यह रूलाये तुझे, चाहे यह हँसाये बस।।
अपना फ़र्ज निभाये जा।
चिन्ता और चिता इस जग में एक समान कहाती है,
एक जिन्दे को एक मुर्दे को दानों सदा जलाती हैं।
रहा जो दुःखाये वहीं दुःखडे मिटाये सब।
चिन्ता दूर भगाये जा।
कौन हमेशा रहा जगत में, किसका सदा ठिकाना हैं,
बाँध ले अपना बिस्तर बाबा यह तो देश बेगाना है।
दुनिया सराय कोई आये कोई जाये।
सबको यह 'पथिक' बताये जा।

(38) खेवट

तू खेवट बन के आया एह डुबदा देश बचाया।

टंकारे वालेया ओ वेदां वालेया।

छड सुख सारे तू नस आया।

भारत माँ दा फाह गल लाया।

तेरे वरगा मां दा जाया।

कोई होर न एथे आया। टंकारे वालेया......

तरसन अखियाँ होंट प्यासे।

हौके हांवां चारे पासे।

तक आया देन दिलासे।

बरतावन सब नूँ हासे। टंकारे वालेया......

मां बांगू ठण्डियां तेरियां छावां।

कर दित्तियां सब दूर बलावां।

तेरे तों बलिहारी जावां।

मैं जिन्दड़ी घोल घुमावां। टंकारे वालेया......

जी करदा ए मस्त बहारां।

'पथिक' तेरे कदमां तों वारां।

मेरे दिल दियां खड़कन तारां।

तेरे पर उपकार हज़ारा। टंकारे वालेया.......

(39) आर्य समाज

जग में जिए सबके लिए देव दयानंद का यह आर्य समाज।
दुनियाँ कहे, करता रहे, आर्य समाज सारी दुनियाँ पे राज।
धारण जब से नाम किया, पल भी नहीं आराम किया।
सबकी नज़र हैरान हुई जीवन में वह काम किया।
धरती पे जिसकी मिसाल नहीं आज। जग में जिए सब.........
तूफ़ानों से लड़ता रहे, चीर के सागर बढ़ता रहे।
सह न सके अन्याय कभी, जुल्म के आगे अड़ता रहे।
बंधा रहे सर पे सफलता का ताज। जग में जिए सब........
फर्ज़ में दिन और रात है क्या, सांझ है क्या परभात है क्या।
पर उपकार की राहों में इस जीवन की बात है क्या।
प्यारी इसे जान से वतन की है लाज। जग में जिए सब........
दुःखियों का ग़मखार है यह, देश का पहरेदार है यह।
भारत के दुश्मन के लिए दो धारी तलवार है यह।
करता है 'पथिक' यह सब का इलाज। जग में जिए सब.......

(40) दिल में रहता है

वह सब के दिल में रहता है दिल में ही पाओगे।
गर बाहर जाओगे तो धोखा खाओगे।
वह सब के दिल में रहता है ....
सृष्टि को बनाता है और खुद ही चलता है।
दुनियाँ का रक्षक है सब का वह दाता है।
उस की यह माया है, कण-कण में समाया है।
यह सब अपने दिल को तुम कब समझाओगे।
वह सब के दिल में रहता है ....

तीर्थ पर जाने में, मल मल के नहाने में।
फल फूल चढ़ाने में खुद को भटकाने में।
कुछ भी न हाथ लगा और जीवन बीत गया।
तब तलियां मल मल के रोते रह जाओगे।
वह सब के दिल में रहता है ....
जितने भी प्राणी हैं सब का मन-मन्दिर है।
ईश्वर हर प्राणी के मन्दिर के अन्दर है।
इनकी जो सेवा है फल मीठा मेवा है।
अनजान 'पथिक' समझो वरना पछताओगे।
वह सब के दिल में रहता है ....

(41) प्रभु तेरी शरण

प्रभु तेरी शरण तज कर, शरण पाने कहाँ जायें।
दिये दुःख दर्द दुनियाँ ने, तो दीवाने कहाँ जायें।।
अगर भक्तों की भक्ति का, भवन निर्माण हो जाये।
हमारी हर तमन्ना का सफर आसान हो जाये।।
बहुत उलझी पड़ी उलझन को सुलझाने कहां जाये।
प्रभु तेरी शरण तज कर.................
सुना है काम आती है तुम्हारे नाम की दौलत।
तेरे दर पर जमाने की, भला किस काम की दौलत।।
मिले मस्ती तेरे दर पर, तो मस्ताने कहाँ जाएं।
प्रभु तेरी शरण तज कर ....
जहाँ पर फूल हंसता है, वहाँ भंवरे भी आते हैं।
जहाँ दिलवर बसे उनका, वहीं वो दिल लगाते हैं।
शमा जलती हो महफिल में, तो परवाने कहाँ जाये।।
प्रभु तेरी शरण तज कर ....

यही है आखरी मंजिल यही आखरी ठिकाना है।
यही है देव घर अपना, यही मंदिर सुहाना है।
'पथिक' तेरे उपासक है, भजन गाने कहाँ जायें।
प्रभु तेरी शरण तज कर ....

(42) जब तक जग में

जब तक जग में शुभ कर्मों का, संचित सामान नहीं होगा।
तब तक भव पार उतरने का, परा अरमान नहीं होगा।।
अच्छे व बुरे सब कर्मों से, जाने पहचाने जाएँगे।
जग में है कौन भला ऐसा, जिसका इम्तिहान नहीं होगा।।
दुनियाँ में लाख हवन संध्या और पूजा पाठ करे कोई।
जीवन में शुद्धाचरण बिना, हरगिज कल्याण नहीं होगा।।
जीवन की सुन्दर खेती में, जो बोओगे सो काटोगे।
मिर्ची का बीज अगर बोया, बदले में धान नहीं होगा।।
दर्शन उस विश्व विधाता के, होंगे तो इसी दिल में होंगे।
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे में, बैठा भगवान् नहीं होगा।।
करने का समय यही प्यारे, करले कुछ नेक कमाई तू।
वर्ना फिर मानव जीवन को, मिलना आसान नहीं होगा।।
बिल्ली को देख कबूतर तो, कर लेगा आँखें बंद पथिक।
तू तो इंसान कहाता है, इतना नादान नहीं होगा।।

(43) टंकारे दा चन्न

टंकारे विच चन्न चढ़ेया सारी दुनियाँ ते चानन होया।
कि स्वामी दयानंद आ गया चन्न बदलां च मुखड़ा लुकोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया..........

इट्टां रोड़े सुट्टे हूंज के जो सी पंडेयां पुजहारियां खिलारे।
पुट्टियां विदेशी झाड़ियां बन्ने मज़हबां दे ढा दित्ते सारे।
कि पधरा मैदान हो गया रहया टिब्बा ते न कोई टोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया..........

पीसदे सी जदों देश नूं गोरी चमड़ी ते हैट वाले बाबू।
धीन तों गुलामी फड़ लई कीता फिरदियां जहालतां नूं काबू।
ते पैरां नाल भार बन्न के डूँहगे सागरां च सुट्ट के डुबोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया...........

एकता दी सुई ढूंढ के धागा लै के वैदिक धर्म वाला।
कट्टे कीते मोती खिलरे गुन्दी आर्य समाज रूपी माला।
कि मोतियां दे भाग जाग पए ऐने प्यार नाल उसने पिरोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया..........

लाया खुद हथीं अपनीं इक वृक्ष बड़ा ही सुहावां।
देवे जो 'पथिक' सब नूं मिट्ठे फल ते संघनियां छांवां।
जमाने विच अज फैलेया जेहड़ा बीज सी बम्बई विच बोया।
टंकारे विच चन्न चढ़ेया..........

(44) इक ब्रह्मचारी

स्वामी दयानंद इक ब्रह्मचारी भारत मां दा जाया।
विरजानन्द दी कुटिया विचों विद्या पढ़ के आया।
स्वामी दयानंद इक ब्रह्मचारी ....
गुरु चरणों विच भेटा कीती लौंगा दी इक थाली।
गुरुवर ने कोई लौंगां बदले मंगी चीज निराली।
तन मन अपना गुरु चरणां विच ओसे वक्त चढ़ाया।
स्वामी दयानंद इक ब्रह्मचारी ....
कुम्भ दे मेले हर की पौड़ी गंगा जी के कंढे।
लोकां विच जहालत वेखी मौजां लुटदे पंडे।
दिल भर आया अंखियाँ विचों छम छम नीर बहाया।
स्वामी दयानंद इक ब्रह्मचारी ....
किधरे बैठी विधवा रोवे किधरे अछूत विचारे।
किधरे मुसलमानां ने किधरे पोपां जाल खिलारे।
वेख के अपने देश दी हालत सीने दर्द जगाया।
स्वामी दयानंद इक ब्रह्मचारी ....
सर्दी गर्मी भुखां सह के फट्ट जिगर दे सीते।
इट्टां रोड़े पत्थर खाधे ज़हर प्याले पीते।
फिर किते जाके 'पथिक' असाड़ा डुबदा देश बचाया।
स्वामी दयानंद इक ब्रह्मचारी ....

(45) वेदा वालेया फ़कीरा

वेदां वालेया फ़कीरा तेरा वेखेया वतीरा
विच कंडेयां दे वस्सदा गयों ते फुल्लां वाँगूं हसदा गयों।
शिवरात आई चुहा दे गया दिखाई

ऐवें निकी जही कहानी इक बन गई।
सच्चा शिव पाना नाले मौतनूँ हराना।
एहो गल तेरे दिल विच ठन गई।
छड्ड दित्ते आपे धन दौलतां ते मापे।
तूं ते जंगलां च नस्सदा गयो।
ते फल्लां वांगू हसदा गयो।
बन के लंगोटी लै के वेदा वाली सोटी
तूं पाखंड देयां भंडेयां नूं भन्नेयां।
सुन के दलीलां मथा टेकेयां वकीलां,
तैनूं राजे महाराजेयां मन्नेयां।
सच्च दा नजारा तिन्नां लोकां विच न्यारा
सारी दुनियां नूं दसदा गयों।
ते फुल्लं वांगू हसदा गयो।
पर उपकार विच वेद प्रयार विच
ज़िन्दगी नूं हस के गुजारेया।
झखड़ां तूफ़ाना विच घेर बियाबानां विच
किसे वेले हिम्मत न हारेया।
'पथिक' उठाया पिछे पैर न हटाया।
भावें औकड़ां च फसदा गयों।
ते फुल्लं वांगूं हसदा गयो।

(46) सत्यार्थप्रकाश

सत्यार्थप्रकाश करोड़ां तपदे दिलां नूं ठार गया।
दयानंद लिख अमर ग्रंथ कर दुनियाँ ते उपकार गया।
इक वारी जिन्हें एहदा अमृत पी लिया।
पादरियां मौलाणेयां ते पंडितां नू कीलेया।
धर्म देश ते जाति दे हर दुश्मन नू ललकार गया। सत्यार्थ........

चौदां समुल्लासां विच लाईयां ख़ूब तौणियां।
पारे वांगुं कम्ब गईयां पोपां दियां छौणियां।
तर्क युक्तियां तीर चला के सब दा नशा उतार गया। सत्यार्थ......
लेखराम उत्ते एहदा रंग गूढ़ा चढ़ेया।
गुरुदत्त एम०ए० ने अठारह वारी पढ़ेया।
स्वामी सर्वदानंद एस तों जीवन अपना वार गया। सत्यार्थ ....
शास्त्रां ते वेदां दियां गल्लां एहने दस्सियां।
झूठियां पुराणा दियां गप्पां एथों नस्सियां।
पंथाइयां दा कूड़ा कर्कट झाड़ू वांग बुहार गया। सत्यार्थ ....
बाइबल ते क़ुरान दा वी पन्ना पन्ना फोलेया।
हक ते सच्चाई वाली तकड़ी ते तोलेया।
परख वेद कसवटी उत्ते सच्चो सच्च पुकार गया। सत्यार्थ ....
बावरोले भरमां दे वहमां दी धुम्मन घेरी ने।
धूड़ो धूड़ कीता सी पाखण्डां दी हनेरी ने।
'पथिक' ज्ञान दी वर्षा करके सब दा रूप निखार गया। सत्यार्थ...

5. सेवक

(1) भगवान् खरीदे जाते हैं

हे मित्रो! धन के बदले अब विद्वान् खरीदे जाते हैं।
धन वाले शासन करते हैं, गुणवान खरीदे जाते हैं।।
न जिनको धर्म का ज्ञान है कुछ, ऐसे भोले इन्सान हैं जो।
मन मोहक मज़हबी नारों से, नादान खरीदे जाते हैं।।
जड़ की पूजा नित करने से, है जिनकी बुद्धि मलीन हुई।
ईश्वर की उपासना करने को, पाषाण[1] खरीदे जाते हैं।।
मज़हबों ने जाल बिछाया है, बहकाया और भरमाया है।
अज्ञान के वश में ला करके, इन्सान खरीदे जाते हैं।।
है निराकार वह परमेश्वर, पर शहरों के बाज़ारों में।
मिट्टी, पत्थर, संगमरमर के, भगवान् खरीदे जाते है।।
सिगरेट चाय मद्य मांस आदि मादक वस्तुओं का सेवन है।
स्वास्थ्य की बरबादी के अब तो सामान खरीदे जाते हैं।।
उपदेश सुनाते हैं मिथ्या, जो बैठे मज़हब की वेदी पर।
धन के बदले इन लोगों के, व्याख्यान खरीदे जाते हैं।।
मन में कुछ होता है 'सेवक' वाणी से सुनते हैं ये कुछ।
ऐसे ईमान फरोशों[2] के, ईमान खरीदे जाते हैं।।

(2) यदि सुख पाना है

करें यज्ञ और दान यदि सुख पाना है।।
यज्ञ कर्म अति श्रेष्ठ है प्यारे, श्रद्धा से जो जीवन में धारे।
करें सदा कल्याण, यदि सुख पाना है।।
वेद शास्त्र सब यही बताते, ऋषि मुनि भी सभी सुनाते।
यज्ञ है सुख की खान, यदि सुख पाना है।।

---

1. पत्थर, 2. धर्म विक्रेताओं।

आत्मवत् व्यवहार करें हम, प्रेम भरा सत्कार करें हम।
सबका करें सम्मान, यदि सुख पाना है।।
काम क्रोध से मन को मोड़ें, लोभ मोह के पाश को तोड़ें।
तजें मिथ्या अभिमान, यदि सुख पाना है।।
सत्य धर्म को धारण कर लें, शुभ कर्मों से जीवन भर लें।।
सुनें लगाकर कान, यदि सुख पाना है।
आत्म-सत् चित् अजर अमर है, आनंद की जो इस में कसर है।
शरण आए भगवान्, यदि सुख पाना है।।
जोड़ प्रभु से अपना नाता, जो है सच्चा पिता और माता।
उसे ही रक्षक मान, यदि सुख पाना है।।
जड़ मूर्त भगवान् नहीं है, जो पूजता बुद्धिमान नहीं है।
कह रहे वेद पुराण, यदि सुख पाना है।।
दीन दुःखियों के कष्ट निवारें, दया धर्म जीवन में धारें।
बने सच्चे इन्सान, यदि सुख पाना है।।
प्रभु का है हृदय में बसेरा, मन हो वश मिले प्रीतम तेरा।
क्यों फिरता हैरान, यदि सुख पाना है।।
प्रभु रमा कण-कण के अन्दर, भटके काशी मथुरा मन्दिर।
बात 'सेवक' की मान, यदि सुख पाना है।।
करें यज्ञ और दान, यदि सुख पाना है।।

(3) मौत से प्यारो डरना क्या?

जब सब ने ही इक दिन मरना है।
तो मौत से प्यारो डरना क्या?

(1) सभी ऋषि और तपी तपीश्वर, योगी योगीश्वर मुनि मुनीश्वर।
सब ही चले गये सबने है जाना, भय मृत्यु का करना क्या।
मौत से प्यारो डरना क्या?

(2) राजे महाराजे रंक भिखारी, अत्याचारी और अहंकारी।
बच न सका कोई शस्त्र धारी, मौत से किसी ने लड़ना क्या।
मौत से प्यारो डरना क्या?

(3) संत महन्त सब ज्ञानी ध्यानी, मौत न देखे बचपन जवानी।
जब आए बंद होती है वाणी, इसके आगे अकड़ना क्या।
मौत से प्यारो डरना क्या?

(4) क्या कोई विश्व में ऐसा घर है, जिसमें मरा न कोई बशर है।
जो भी है जन्मा उसने है मरना, शोक और ग़म में विचरना क्या।
मौत से प्यारो डरना क्या?

(5) वस्त्र जैसे बदले पुराना, ज़र-ज़र शरीर भी छोड़े ठिकाना।
आत्मा अजर अमर है प्यारे, मृत्यु से इसका बिगड़ना क्या।
मौत से प्यारो डरना क्या?

(6) जब तक जिएँ शुभ कमालें, मानव जीवन सफल बना लें।
धर्म के मार्ग को अपना लें, पापों में पग धरना क्या।
मौत से प्यारो डरना क्या?

(7) मुक्ति का मार्ग अपनाएं, आत्मा प्रभु सम्पर्क में लायें।
'सेवक' भव सागर तर जाएँ, आवागमन में पड़ना क्या।
मौत से प्यारो डरना क्या?

(4) हमेशा याद रख बन्दे !

करें जो प्यार हर प्राणी से वह ईश्वर के प्यारे हैं।
उसी इक ईश्वर की ही यह रचना प्राणी सारे हैं।।
दुखाएं न सताएं न कभी भी प्राणियों का दिल।
वही मानव है जिसने प्राणियों के दुःख निवारे हैं।।
जो काटे प्राणियों को मास खाएं मूक पशुओं का।
पढ़े नमाज, रक्खे रोजा भगत कैसे तुम्हारे हैं।।
देवी की भेंट में जिन्दा प्राणी काटते हैं जो।
भक्त कैसे कहें इनको कर्म से जो हत्यारे हैं।।
जड़ पत्थरों की बनी देवी को माँ कह करके पूजें जो।
जीवित माता पिता के वह नहीं बनते सहारे हैं।।
हमेशा याद रख बन्दे कि फल करनी का पाएगा।
वही प्यारा प्रभु का है कर्म जिसने संवारे हैं।।
करें सत्संग यज्ञ आदि की जीवन हो सफल अपना।
कि पतितों ने भी सत्संग से जीवन अपने सुधारे हैं।।
तू हर वक्त ईश की महिमा का कर कुछ ध्यान ऐ बन्दे।
रचे सागर व पर्वत के अति सुन्दर नजारे हैं।।
अनेकों लोक और सूरज बना कर दी गति उन में।
देखो आकाश गंगा में चमकते चांद तारे हैं।।
कितनी अद्‌भुत लीला विश्व को बांधा नियम में है।
रमे हैं विश्व के कण-कण रहें फिर भी वह न्यारे हैं।।
जीवन हो वेद के अनुसार यदि हम सब का ऐ 'सेवक'।
धर्म आधार से ही तो बनें जीवन उजारे हैं।।

(5) छोड़ दें

तम्बाकू, सिगरेट बीड़ी को पीना पिलाना छोड़ दें।
है यह विष विनाशकारी इसको खाना छोड़ दें।।
इसके सेवन से बने अति रोग जीवन में सदा।
इसको सेवन करके रोगों को बढ़ाना छोड़ दें।।
ये तम्बाकू अति जहरीला और विषैला नाग है।
इस भयानक वस्तु से अपना याराना छोड़ दें।।
कैंसर जैसे रोग भयानक इसके सेवन से बनें।
स्वयं अपने हाथों अपनी मृत्यु लाना छोड़ दें।।
सिर जिगर कमजोर करदे फालिज भी पैदा करे।
दिल की धड़कन और पागलपन बढ़ाना छोड़ दें।।
इसमें 'नीकोटीन' जैसी अति भयानक जहर है।
हाथ अपना ऐसी चीजों को लगाना छोड़ दें।।
खांसी, सिल, तपैदिक, दमा, आँतों में खुश्की ये करे।
इससे पाचन शक्ति को दुर्बल बनाना छोड़ दें।।
इसके जहरीले प्रभाव से दिल भी होता फेल है।
इसके द्वारा मृत्यु अपनी को बुलाना छोड़ दें।।
हुक्का बीड़ी सिगरेटों से मित्रों का स्वागत न हो।।
दावतों में भी इसे देना दिलाना छोड़ दें।।
इसके सेवन से है हानि लाभ तो कुछ भी नहीं।
खुद करें न इसका सेवन और कराना छोड़ दें।।

6. विद्यानंद ''विदेह''

(1)

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन उसे कोई रोग लगा न रहा।
जब ज्ञान की गंगा में नहाया तब, मन में मैल जरा न रहा।।
परमात्मा को जब आत्मा में लिया देख ज्ञान की आँखों से।
प्रकाश हुआ मन में उसके कोई उस से भेद छिपा न रहा।।
हुआ ध्यान में ईश्वर के ....

पुरुषार्थ ही इस दुनियाँ में हर कामना पूरी करता है।
मन चाहा सुख उसने पाया, जो आलसी बन के पड़ा न रहा।।
यहाँ वेद विरुद्ध मत जब फैले, पत्थर की पूजा जारी हुई।
जब वेद की विद्या लुप्त हुई तब ज्ञान का पांव जमा न रहा।।
दुःखदायक है सब शत्रु हैं, ये विषय है जितने दुनियाँ के।
वही पार हुआ भवसागर से, जो जाल में इनके फंसा न रहा।।
यहाँ बड़े-बड़े महाराज हुए, विद्वान् हुए बलवान् हुए।
पर मौत के पंजे में केवल, कोई योगी ही आके फंसा न रहा।।
जीवन के अन्तिम क्षण तक, हे नाथ! सुपथ पर मुझे चलाना।
कभी भूल कर चलूँ कुपथ पर, खींच मुझे तुम पीछे लाना।
नश्वर धन वैभव के कारण, कभी कुपथ पर भटक न जाऊँ।
धन वैभव पाऊँ तो भगवन्! सदा सुपथ पर चल कर पाऊँ।।
धन जन वैभव साथ न आया, साथ न यह मेरे जायेगा।
चलना पड़ा यहाँ से जिस दिन, काम न कुछ मेरे आयेगा।।
क्यों फिर मैं 'विदेह' धन कारण, चलूँ कुपथ कर पाप कमाऊँ।
अग्ने नय सुपथा राये माँ, क्यों न निरन्तर पद यह गाऊँ।।

(2)

बुराई करके मत हँस क्योंकि तेरा भी बुरा होगा।
भलाई करके तू हँस क्योंकि तेरा भी भला होगा।।
तू रख स्मरण सदा जैसा करेगा वैसा फल होगा।
बुराई कर बुराई पा भलाई कर भला होगा।।
बुराई कर नरक में जा, जहाँ रोना ही रोना है।
भलाई करके पद पा जहाँ हँसना ही हँसना है।।
बुराई करके खड्ड में गिरे जहाँ पर नाश निश्चित् है।
भलाई करके ऊपर चढ़ जहाँ अमरता निश्चित् है।।

(3)

ख़ुद ख़ुदा ने ही बनाया जिसको वह इन्सान है।
सर फ़रिश्तों ने झुकाया जिसको वह इन्सान है।।
जो झुके इन्सान इन्सां के लिए इन्सां है वह।
जो न इन्सां को झुके, इन्सां नहीं हैवां है वह।।
खिदमते इन्सान कर इन्सान! तू हैवां न बन।
मज़हबे इन्सानियत अख़्त्यार कर शैतान न बन।।
उस इन्सां से करे इन्सान जो इन्सां है वह।
नफ़रत जो इन्सां से करें इन्सां नहीं हैवां है वह।।

(4)

प्रेम प्रेम सब कोई कहें, प्रेम न चीन्हे कोय।
विरह अश्रु जिन दृग बहे प्रेम जानिए सोय।।
नाम जपन्ती बहुत हैं बहुत जो ध्यानी होय।
जल मछली के सदृश तड़पें बिरले कोय।।
आँख मूंद, आसन लगा, बैठे रहत अनेक।
प्रेम दिवाना पागल बिरला कोई एक ।।
पीते मादक द्रव्य जो ते पीयक नादान।
जो पीते प्रिय प्रेम रस, पीयक तिनको जान।।

(5)

प्रेम भरा कण कण रग रग में, प्रेम रमा है पशु में खग में।
तोड़े न टूटेंगे प्रेम के तार। प्रेम में डूब रहा संसार।।
प्रेम है भरा मातृ स्तन में। प्रेम भरा शिशु की मुस्कान में।
प्रेम के वश में है सब नर नार। प्रेम में डूब रहा संसार।।
प्रेम के तीरों से कौन बचा है? प्रेम की गोद से कौन जुदा है।
प्रेममय सृष्टि सृजनहार! प्रेम में डूब रहा संसार।।

(6)

साधु तो उसको कहिए जो पीर पराई जाने रे।
पर सुख में जो सुखी रहे और पर दुःख में दुःख भावे रे।।
पतित प्राणियों का निशवासर प्रेम सहित उद्धार करे।
सहता रहे शांत हृदय से जग के तीखे ताने रे।।
करे आत्मवत् आदर सबका, सबसे सच्चा प्यार करे।
मन में समता धारण करके भेदभाव बिसराने रे।।
चाहे मान करे कोई चाहे कोई अपमान करे।
हर्ष शोक से ऊपर उठकर चित आनन्द समान रे।।
दुःखी न होवै निज निन्दा से, निन्दक का भी हित चाहे।
सुन निज प्रशंसा "विदेह" जो मन अभिमान न लाने रे।।

(7) रूबाइयाँ

1. जीवन उन्हीं का धन्य है जीते हैं जो सबके लिये।
धिक्कार है उनके लिये, जीते हैं जो अपने लिये।।
जन्म होता है सुजन का विश्व के उद्धार को।
विश्व सेवा विश्व मंगल विश्व के उपकार को।।

2. कहते हैं करते नहीं मुंह के बड़े लबार।
साक्षात वे दस्यु हैं नर हो चाहे नार।।
कहते शुभ, शुभ करें यथाकथन व्यवहार।
साक्षात् वे आर्य हैं नर हो चाहे नार।।

3. जिसकी रूहानियत ने नफ़रत पर काबू पाया।
वह ही हमराज बना राज को उसने पाया।
जिसकी कि आँख खुली उसने ही देखा उसको।
सबमें वह आया नजर है उसे जिसने पाया।।

4. कविता हो मेरी उज्ज्वल, शालीन, श्लील, सुन्दर।
सुन्दर सुभावना का उमड़े सदा समुन्दर।।
कविता से मेरी क्षय हो कश्मल कुवासना का।
प्रशस्त मेरी कविता से पथ हो साधना का।।

7. नंद लाल

(1) न पाया किसी ने तेरा पारावार

न पाया किसी ने तेरा पारावार,
तेरी जय जय करता है संसार सारा।
बनावट है पत्तों की सुन्दर बनाई,
हर इक फूल का रंग है न्यारा-न्यारा।। न पाया ....
न आकाश में दीखे कोई समुन्दर,
कहाँ से उतरती है पानी की धारा।। न पाया ....
सभी जीव जंतु है भर पेट खाते,
कहाँ खोल रखा है तूने भंडारा।। न पाया ....
जो आकाश पर हम नज़र डालते हैं।
चमकता है चांद और सूरज सितारा।। न पाया ....
पहाड़ों की लाईन बनाई है कैसी,
समुन्दर का हम देखते हैं नज़ारा।। न पाया ....
पशु पक्षी हैं तू ने कैसे बनाये,
ये फल-फूल भी करते तेरा इशारा।। न पाया ....
समाया है तू ज़र्रे ज़र्रे में ईश्वर!
कहे 'लाल' सबको तेरा सहारा।। न पाया ....

(2) क्या कीमत है इंसानों की?

इस राम राज की मंडी में क्या कीमत है इंसानों की,
क्या कथा सुनाऊँ मैं भाइयो इन देश भक्त परवानों की?
धोखा फरेब करने वाले बगुले भक्तों की कमी नहीं,
यहाँ निर्धन कुचले जाते हैं और चाँदी है धनवानों की,
हर चीज़ मिलावट वाली है रिश्वत का बाज़ार गरम।

चलते पुरजे हैं सफल यहाँ सुनता न कोई विद्वानों की,
है साइन बोर्ड पर लिखा हुआ यहाँ ताजा मक्खन बिकता है,
अन्दर जाकर देखो होती है बिकरी सिगरेट पानों की।
भारत के प्रेमी देश भक्त हिन्दू ठुकराये जाते हैं,
सुनते हैं टोपी वाले बस फिरकापरस्त बेगानों की।
गउओं की गरदन कटती है लाखों ईसाई बनते हैं,
गिनती बढ़ती जाती है फिर यवनों की और क्रिस्टानों की।
वेदों के मार्ग पर चलकर जो भारत का उद्धार करें,
''नन्दलाल'' जरूरत अब तो है उन वैदिक वीर जवानों की।

(3) चाँदी और नोटों के बदले

चाँदी और नोटों के बदले विद्वान् खरीदे जाते हैं।
धनवान हकूमत करते हैं, गुणवान खरीदे जाते हैं।
है निराकार वह परमेश्वर, पर जयपुर के बाज़ारों में।
मिट्टी पत्थर संगमरमर के भगवान् खरीदे जाते हैं।
कुछ धर्म कर्म का पता नहीं निर्धन मजदूर किसानों को।
रोटी कपड़े के नारों से, नादान खरीदे जाते हैं।
हरिद्वार के पण्डों को देखो जा करके हर की पौड़ी पर।
आपस में करें इशारें और यजमान खरीदे जाते हैं।
नन्दलाल गऊ वध होता है गऊ मांस के बदले बाहर से।
पोडर सुर्खी और सिनेमा के सामान खरीदे जाते हैं।

(4) होता है सारे विश्व

होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से।
जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।
ऋषियों ने ऊँचा माना है स्थान यज्ञ का।
भगवान् का यह यज्ञ है भगवान् यज्ञ का।

जाता है देव लोक में इन्सान यज्ञ से।
जो कुछ भी डालो यज्ञ में खाते हैं अग्निदेव।
इक इक के बदले सौ सौ दिलाते हैं अग्निदेव।
पैदा अनाज करता है भगवान् यज्ञ से।
होता है कन्या दान भी इस के ही सामने।
पूजा है इसको कृष्ण और भगवान् राम ने।
मिलता है राज कीर्ति सन्तान यज्ञ से।
इसका पुजारी कोई भी पराजित नहीं होता।
इसके पुजारी को कभी कोई भय नहीं होता।
होती है सारी मुश्किलें आसान यज्ञ से।
चाहे अमीर है कोई चाहे ग़रीब है,
जो नित्य यज्ञ करता है वह खुश नसीब है।
उपकारी मानव बनता है महान् यज्ञ से।

(5) है अद्‌भुत तेरी यह माया

है अद्‌भुत तेरी यह माया तेरा न अन्त है पाया।
गये सब हार प्राणी, बड़े ज्ञानी व ध्यानी,
कहीं पर्वत की चोटी को यह बदली चूमती है,
यह राहु केतु मंगल का, चक्र किसने चलाया।
किसने चलाया ....
रेशम को फैक्टरी के बिन, कैसे कीड़ा बनाये,
मधुर संगीत कोयल को, कौन आकर सिखाये,
शहद का छत्ता मक्खी ने देखो कैसे सजाया।
कैसे सजाया ....
जमीं के नीचे जल ही देखो कैसे भरा है,
है जल पर भूमि, भूमि पर विश्व सारा खड़ा है,
यह सूर्य चन्द्रमा आकाश को कैसे बनाया।
कैसे बनाया ....

कहे ''नन्दलाल'' नदियाँ नाले हैं, किसने चलाये,
यह फल और फूल मिट्टी से गये कैसे उगाये,
है फूलों की सुगन्ध में प्रभु तू ही समाया।
तू ही समाया ....

(6) इंसान नहीं इंसान रहा

इंसान नहीं इंसान रहा, बन गया है पशु समान।
मानव-मानवता खो बैठा है न रही अपनी पहचान।।
नित्यकर्म का ज्ञान नहीं बड़ों का आदर मान।
राम-भरत और शत्रुघ्न जैसी दीखे अब सन्तान नहीं।।
अब माता-पिता और गुरुजनों का होने लगा अपमान।
वेदों का कुछ ज्ञान नहीं और शुभकर्मों में दान नहीं।
बस एक ही नारा रह गया है रोटी, कपड़ा और मकान।।
मंदिर में नहीं आते हैं, सिनेमा रोज ही जाते हैं।
अंडे मछली मांस है खाते, व्हिस्की खूब उड़ाते हैं।।
युवकों की ऐसी देख दशा, होता है दुःख महान।
द्वार तेरे जो आता है, मुंह मांगा फल पाता है।।
मानव, मानव बन जाये, 'नंदलाल' यही अब चाहता है।
विनती है आपसे एक यही, इंसान बने इंसान।।

(7) है वह इंसान सच्चा

है वह इंसान सच्चा जो किसी के काम आता है।
दुःखी होता दुःखी को देखकर आँसू बहाता है।।
विषय और वासना में ही समय अपना गंवाये जो।
कमाये पाप से दौलत बुराइयों में लुटाये जो।
वह नर इंसानियत के नाम पर धब्बा लगाता है।।
हजारों आदमी बिन औषधि बिन अन्न मरते हैं।

न तन पर उनके हैं वस्त्र न बच्चे उनके पढ़ते हैं।
है वह धनवान सच्चा जो दुःखी के दुःख मिटाता है।।
न भाई-बन्धु और बेटे न पत्नी साथ जायेगी।
कमाई पाप की हरगिज़ न तेरे काम आयेगी।
धर्म है एक साथी अन्त में जो काम आता है।।
धर्म की राह में तन, मन व धन अपना लुटाये जो।
ऋषिवर की तरह संसार भर में नाम पाये जो।
उसी का नाम फिर इतिहास के पन्नों में आता है।।
तेरा बातों से ही 'नन्दलाल' बेड़ा पार न होगा।
केवल गीतों के लिखने से तेरा उद्धार न होगा।
वह होगा पार तन, मन, धन धर्म पर जो लुटाता है।।

8. प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

(1) मधुर वेद वाणी धरा को सुनायें

मधुर वेद वाणी धरा को सुनायें।
सकल विश्व को आर्य फिर से बनायें।
अभी लोग धड़ कर हैं ईश्वर बनाते।
अभी भोग पाषाण को है लगाते।
प्रभु प्रेम की गंग आओ बहायें।। मधुर................
वही ताने बाने तने जा रहे हैं।
अभी पंथ नूतन घड़े जा रहे हैं।
पुनः शुद्धि की घोट घुट्टी पिलायें।। मधुर ....
जो थे तर्क तोपों से स्वामी ने ढाए।
गुरुडम ने हैं दुर्ग फिर से बनाए।।
वही खड्ग खण्डन का फिर से चलायें।। मधुर ....
लुटा जा रहा देश प्यारा है सारा।
हुआ आज आर्त यह भारत हमारा।।
उठो दीनता-हीनता को भगायें।। मधुर ....
है शोषण अभी दीन-दुःखियों का होता।
अभी कर्म-हीनों का पोषण है होता।।
मचल कर उठो युग बदल कर दिखायें।। मधुर ....
सुनो मात हिन्दी ने रोना सुनाया।
कि घर के चिरागों ने घर को जलाया।।
निडरता से कर्त्तव्य अपना निभायें।। मधुर ....

(2) जग को जगाने वाला

जग को जगाने वाला आर्य समाज है।
जग की पुकार है वह युग की आवाज़ है।।
ईश की उपासना का रास्ता दिखा दिया।
जड़ की आराधाना के पाप से बचा लिया।।
ढोंग ढांग जिसके भय से डोल रहा आज है।
ठाकुरों की ठोकरों ने कर दिया बेहाल था।
दम्भियों का और छोर फैला हुआ जाल था।।
जिसने दीन देश जाति की बचाई लाज है।
नारियां भी वेद का पुनीत गान कर रही।
रूढ़ियों कुरीतियाँ हैं अपने आप मर रहीं।।
वेद के प्रकाश का जो कर रहा सुकाज है।
कौन है जो आर्यों की भावना जगा गया।
कौन मौत से हमें जो जूझना सिखा गया।।
श्रद्धानन्द लेखराम प्यारा हंसराज है।
देश हित में वार दी अनेक ही जवानियाँ।
इसने रक्त से लिखी हैं देश की कहानियाँ।।
लाजपत लुटा के आज पा लिया स्वराज है।
कौन भोगवाद से जो विश्व को बचायेगा।
पाप पुण्य क्या है कौन आज यह सुझायेगा।।
मानवीय रोग का तो एक ही इलाज है।
जग को जगाने वाला आर्य समाज है।।

9. धर्मपाल कपूर

(1) रामचरितमानस

रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का सर्वोत्तम महाकाव्य है।
इसमें मात-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी का अनुपम विधान है।
यह प्रत्येक व्यक्ति को मानवता का पाठ सिखाता है।
इस का सार है नेक इन्सान बनो और नेक काम करो।
इसका दैनिक पाठ मानव जीवन में संतोष शांति लाता है।
यह हिन्दू समाज का गौरव एवं सम्मान है।
यद्यपि इसमें कुछ बातें कपोलकल्पित और वेदविरुद्ध भी हैं।
यह कर्म, ज्ञान एवं भक्ति की त्रिवेणी का अनूठा संगम है।
इसमें नवधा भक्ति का सुन्दर विधान है जोकि भक्ति सार है।
चाहे कुछ भी हो यह हमारी जान एवं शान है।
क्योंकि इसमें अमूल्य रत्नज्ञान का भंडार है।
तभी तो यह जन-जन का कंठाहार है।।

(2) गीता

गीता वेदों का सार है और ज्ञान का भंडार है।
यह भक्तों की प्यारी है और सब ग्रंथों से न्यारी है।
परन्तु इसमें कुछ बातें वेदविरुद्ध है फिर भी हमें यह प्यारी है।
वस्तुतः इसका तत्वज्ञान हमारे लिये कल्याणकारी है।
आधुनिक युग में यह मानव समस्याओं का उचित समाधान है।
गीता, ज्ञान, कर्म व भक्ति का सुन्दर समन्वय है।।

10. फुटकर

(1) प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है,
उसे हर पल आनन्द ही आनन्द है।
झूठी ममता से करके किनारा, लेके सच्चे प्रभु का सहारा,
जो उसकी रजा में रजामंद है, उसे हर पल .... ।।1।।
जिसकी करनी में फूलों सी महक है,
जिसकी कथनी में कोयल सी चहक है।
प्रेम-नगरी में जिसकी सुगन्ध है, उसे हर पल ....।।2।।
चुगली निन्दा न जिसको सुहावे,
बुरी संगत की रंगत न भावे।
सत्संगत ही जिसको पसन्द है, उसे हर पल .... ।।3।।
दीन-दुःखियों के दुःख जो मिटाये,
बन के सेवक भला सबका चाहे।
नहिं जिसमें घमण्ड और पाखण्ड है, उसे हर पल ....।।4।।

(2) हिम्मत न हारिये, प्रभु न विसारिये।
हँसते मुस्कराते हुए ज़िन्दगी गुजारिये।।
हँसते मुस्कराते हुए जीना जिनको आ गया।
टूटे हुए दिलों को सीना जिन को आ गया।।
ऐसे देवताओं के चरणों को पखारिये।
उनकी तरह नेक बन के ज़िन्दगी गुजारिये........
काम ऐसे कीजिए कि जिनसे हो सब का भला।
बातें ऐसे कीजिये जिनमें हो अमृत भरा।
मीठी बोली बोल सबको प्रेम से पुकारिये।
कड़वे बोल बोल के न ज़िन्दगी गुजारिये........

मुश्किलों मुसीबतों का करना है जो खात्मा।
हर समय कहिये तेरा शुक्र है परमात्मा,
गिले शिकवे कर के अपना हाल न बिगाड़िये
जैसे प्रभु रखे वैसे ज़िन्दगी गुजारिये...........
शुभ कर्म करते हुए दुःख भी अगर पा रहे
पिछले कर्मों का भुगतान वो भुगता रहे,
आगे मत उठाइये पिछले बोझ उतारिये।
गलतियों से बचते हुए ज़िन्दगी गुजारिये.........
दिल की नोट बुक पे बातें नोट कर लीजिए,
उनके सच्चे सेवक सच्चे दिल से अमल कीजिए
करके अमल बनके कमल तरिए और तारिए।
जग में जगमगाती हुई ज़िन्दगी गुजारिये.............

(3) मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों का खाता,
जैसा कोई कर्म करेगा, वैसा ही फल पाता।
क्या साधु क्या संत गृहस्थी, क्या राजा क्या रानी,
प्रभु की पुस्तक में लिखी है सबकी कर्म कहानी।
बड़े-बड़े वह जमा खर्च का, सही हिसाब लगाता।। मेरे ......
नहीं चले उसके घर रिश्वत, नहीं चले चालाकी,
पुण्य की अपने लेन देन की, रीति बड़ी है बांकी।
बड़ा कड़ा कानून प्रभु का, बड़ी कड़ी मर्यादा,
किसी को कौड़ी कम नहीं देता, किसी को कौड़ी ज्यादा।
इसी लिए तो इस दुनियाँ का नगर सेठ कहलाता।। मेरे ....
करता सही हिसाब सभी का, न्याय-धर्म पे डट के,
उसका फैसला कभी न पलटे, लाख कोई सर पटके।
समझदार तो चुप रह जाता, मूर्ख शोर मचाता।। मेरे ....

अच्छी करनी करियो रे लाला, कर्म न करियो काला,
लाख आँख से देख रहा है, तुझे देखने वाला।
अच्छी करनी करो चतुर नर समय गुजरता जाता।। मेरे ....

(4) ओ३म् का सुमिरन किया करो, प्रभु के सहारे जिया करो।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।
सुर दुर्लभ मानव तन तूने, बड़े भाग्य से पाया।
विषयों में फंसकर क्यों बन्दे, हीरा जन्म गंवाया।।
दुष्ट संग ना किया करो, सज्जनों से गुण लिया करो।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसकी का लिया करो।।
पता नहीं कब रूक जाये यह चलते-चलते स्वांसा।
इक क्षण भर में खत्म होय यह जग का सभी तमासा।।
सुबह शाम रट लिया करो, याद प्रभु को किया करो।
जो दुनियाँ का मालिक है नाम उसी का लिया करो।।
मनुष्य मात्र से प्रेम बढ़ाना सबमें प्रभु समाया।
मिलकर रहना सब हैं अपने, कोई नहीं पराया।।
दुःख ना किसी को दिया करो, द्वेष भाव ना किया करो।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।
सच्चा सुख है प्रभु भक्ति में, बात न समझो झूठी।
वही मोक्ष पद पाते हैं जो, पीते नाम की बूटी।।
ओ३म् नाम रस पिया करो, ''राघव'' भूल न किया करो।
जो दुनियाँ का मालिक है, नाम उसी का लिया करो।।

(5) इक झोली में फूल भरे हैं इक झोली में काँटे रे,
तेरे बस में कुछ भी नहीं, ये तो बाँटने वाला बाँटे रे,
अरे कोई कारण होगा।

पहले बनती हैं तक़दीरें, फिर बनते हैं शरीर,
कोई बहुत ग़रीब है तो कोई बहुत अमीर
अरे कोई कारण होगा।
नाग भी डस ले तो मिल जाये किसी को जीवन दान,
चींटी से भी मिट सकता है किसी का नामोनिशान।
अरे कोई कारण होगा।
धन का बिस्तर मिल जाये पर, नींद को तरसे नैन,
कांटों पर सोकर भी आये किसी के मन को चैन।
अरे कोई कारण होगा।
सागर से भी बुझ सकती नहीं कभी किसी की प्यास,
कभी एक ही बूंद से हो जाती मन की पूर्ण आस।
अरे कोई कारण होगा।

(6) वन-वन में ढूँढ़ा था जिसको वो मन में ही करता मिला।
मैं हार के बाजी जीत गया मुझे प्रिय प्रीतम का प्यार मिला।
झूठ योग में सदियां गुजर गई पर मन चंचल न साध सका।
अज्ञान में था मैं जाग रहा ज्ञानी बन कर न जाग सका।
जीवन की नैया पार हुई जब वेदों का आधार मिला।
वन-वन में ढूंढा था.............
मन्दिर गुरुद्वारों में खोजा, भगवे पहने और संत बना।
चेली चेला अगणित मूंडे, मठधारी महा महन्त बना।
नाटक खेले कई जीवन में, न चैन मिला न करार मिला।
वन-वन में ढूंढा था.............
गंगा जी पर स्नान किया, पर मन की मैल न उतर सकी।
आशाओं की नगरी उजड़ी यह देख के काया सिंहर उठी।
बेचैन भटकती बुलबुल को अब तलक नहीं गुलजार मिला।
वन-वन में ढूंढा था.............

धन धाम ने मेरा वरण किया, पूजा राजे महाराजों ने।
भाषण पर जय जयकार हुई, यूं स्वागत किया हजारों ने।
पर मुझको धन संतोष बिना, जो कुछ भी मिला बेकार मिला।
वन-वन में ढूंढा था.............
ऋषियों के बताये नुस्खे को वैदिक विधि से जब बरत लिया।
बहु लाभ 'हंस' को प्राप्त हुआ, और नीर-क्षीर को परख लिया।
दुर्लभ प्रीतम का दर्शन था अब उसका है दीदार मिला।
वन-वन में ढूंढा था.............

(7) सीता राम सीता राम कहिए
जाहि विधि राखे ताहि विधि रहिए
राम नाम मुख में और राम सेवा हाथ में
तू अकेला नहीं प्यारे राम तेरे साथ में
विधि का विधान जान हानि लाभ सहिए
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए।
किया अभिमान तो फिर सान नहीं पाएगा
होगा प्यार वो ही जो श्रीरामजी को भाएगा
फल आशा छोड़ शुभ काम करते रहिए
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए।
ज़िन्दगी की बागडोर सौंप हाथ दीना नाथ के
महलों में राखे चाहे झोंपड़ी में वास दे
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिए
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए।
आशा एक राम की और आशा छोड़ दे
रोम रोम अंग अंग राम संग रंगिए
काम रस त्याग प्यारे राम रस पगिए
सीता राम सीता राम सीता राम कहिए
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिए।

(8) पाके सुन्दर बदन कर प्रभु का भजन, दुनियाँ फानी का कोई भरोसा नहीं।
जो आया यहाँ, उसको जाना पड़ा, ज़िंदगानी का कोई भरोसा नहीं।
बालापन खेल और कूद में खो गया फिर बुढ़ापे का आसार आने लगा।
इस सुघड़ बेला में, कर कमाई भली, नौजवानों का कोई भरोसा नहीं।
अरबों वाले गये, खरबों वाले गये, कितने गोली व गोले रिसाले गये।
कितने राजा गये, कितनी रानी गई राजधानी का कोई भरोसा नहीं।
श्रेष्ठ जीवन बना कर सभी का भला तेरे जीवन में सुख शांति आ जायेगी।
गर करेगा भला, तेरा होगा भला, बद्‌गुमानी का कोई भरोसा नहीं।
खाली हाथों यहाँ से सिकंदर गया सब खजानों की चाबी धरी रह गई।
वैद्य लुक्मान को भी क़ज़ा खा गई ज़िन्दगानी का कोई भरोसा नहीं।

(9) क्या लेकर आया जग में क्या लेकर चले जाओगे।
प्रभुसिमरन और धन कर्मों का नरजीवन ही पाओगे।।
कुटुम्ब, कबीला, सोना, बंगला साथ न तेरे जायेंगे।
इनकी ख़ातिर पाप क्यों करता यश ना तुझे दिलायेंगे।।
समय गंवाया खान पान में जग के जाल में जकड़ा सब।
परमानन्द के पान का वक्त मिलेगा तुझ को कब-कब।।
काम क्रोध को दिया बढ़ावा परहित धर्म कमाया ना।
इस कारण नर जीवन पाकर सच्चे सुख को पाया ना।।
कुछ नहीं बिगड़ा संभल जा अब भी नेक कमाई कर ले तू।
प्रभुसिमर मन उज्ज्वल कर ले, सब से प्रीति कर ले तू।।
झूठी खुशी विषयों में पायी, आनन्द लिया न भक्ति में।
प्रभु नाम जपा ना मानव, व्यर्थ जिया इस जगती में।।

(10) मैं नहीं मेरा नहीं यह तन है उसी का दिया।
जो कुछ मेरे पास है वह धन किसी का है दिया।।
देने वाले ने दिया और दिया इस शान से।
मेरा है यह लेने वाला कह उठा अभिमान से।

मैं और मेरा कहने वाला, मन किसी का है दिया।
जो कुछ भी तेरे पास है वह भी तो रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह जन कह सकता नहीं।
ज़िन्दगानी का मधुबन खिला किसी का है दिया।।
जग की सेवा, खोज अपनी, प्रेम-प्रभु से कीजिए।
ज़िन्दगी का राज है यह जान कर जी लीजिए।
साधना की राह में, साधन किसी का है दिया।।

मानवसेवा ईश्वर पूजा

(11) पाषाण यहाँ पूजे जाते पर ये भूखे भगवान् नहीं।
भूखे मानव छटपटा रहे दो-दो दाने को आज यहाँ,
मन्दिर में मौजें उड़ा रहे पण्डे महन्त महाराज वहाँ,
फल-फूल अन्न सड़ रहे किन्तु बेबस भूखे रो रहे इधर,
संतरंगी परियां नाच रहीं हाला के प्याले पिये उधर,
प्रेयसी के गीत सुने जाते क्रन्दन सुनने को कान नहीं।। 1।।
दिन में दश बार भोग लगते, नहला के जिनको बार-बार,
प्रस्तर प्रतिमायें सोने के आभूषण पहिने चार-चार,
जीवित जर्जर कंकालों को दो बूंद नहीं पानी मिलता,
ये ठिठुर-ठिठुर रह जाते हैं कोई न कफन दानी मिलता,
मखमल पाषाण पहिनते हैं मानव तन को परिधान नहीं।। 2।।
वर्षा सर्दी बीता करती सड़कों पर वृक्षों के नीचे,
कोरी रातें जाया करतीं केवल आँख मीचें-मीचें,
ग्रीष्म की लपटे चलती हैं जिनका उर जला जलाने को,
सन-सन झंझा के झोंके वे दौड़ा करते हैं खाने को,
पाषाणों को प्रसाद बनें पर मानव को स्थान नहीं।।3।।

—लाखन सिंह, भदौरिया

(12) पराई आग में पड़कर कभी दिल को जलाया है?
किसी बेकस की खातिर जान पर जोखिम उठाया है?
कभी आँसू बहाये हैं किसी की बदनसीबी पर?
कभी दिल तेरा भर आया है मुफलिस[1] की ग़रीबी पर?
शरीके दर्द होकर किसी का दुःख बँटाया है?
मुसीबत में किसी आफ़तज़दा[2] के काम आया है?
करोड़ों में सफी बेशक वही इन्सान होते हैं।
जो अपनी ज़िन्दगी में शाने इन्सानी नहीं खोते।।
आदमी बन जो धरा का भार कंधों पर उठाए।
बाँट दे जग को न अमृत बूंद अधरों से लगाए।
है जरूरत आज ऐसे आदमी की सृष्टि को फिर।
विश्व का विष-सिन्ध, पी जाये मगर हिचकी न आए।।

—लाखनसिंह भदौरिया

(13) ये नर तन तुझे जो मिला है, ये गंवाने के काबिल नहीं है।
तेरा हर श्वास अनमोल हीरा, ये लुटाने के काबिल नहीं है।।
पशु जीते जी सेवा कमाए, बाद मरने के भी काम आए।
पर तेरा जिस्म मर कर किसी के, काम आने के काबिल नहीं है।
तू कुकर्मों में लट्टू है ऐसा, खर्च करता है उन पर ही पैसा,
मिले बिनमोल अनमोल सत्संग, उसमें जाने के काबिल नहीं हैं।
झूठ बोले व गप्पे उड़ाए, गन्दे गाने खुशी से तू गाए,
पर तेरी जीभ प्यारे प्रभु के, गीत गाने के काबिल नहीं है।।
जिसने दी तुझको सुन्दर ये काया, तेरे लिए ही सब कुछ बनाया,
ऐसे दाता को तूने भुलाया, जो भुलाने के काबिल नहीं है।।
ग़र न समझा तो रोना पड़ेगा, नर्क में गर्क होना पड़ेगा,
तेरा होगा बुरा हाल ऐसा, जो बताने के काबिल नहीं है।।

---

1. ग़रीब, 2. आपत्तिग्रस्त।

(14) ज़िन्दगी की कहे हर कड़ी, भजन कर ले घड़ी दो घड़ी।
घंटी बज जायेगी कूंच की, मौत तेरे रिहाने खड़ी।।
गर्भ में उल्टा लटका हुआ, तो करे प्रभु से यह अर्चना।
जल्दी बाहर मुझे अब करो स्वर उचारे यही प्रार्थना।।
शीघ्र काटो मेरी हथकड़ी।। भजन कर ले.........
आय बाहर निकल गर्भ से, जाल माया में यू फंस गया,
याद प्रभु की रही न सदा, मोह जंजीर से कसता गया।
भूल करता रहा तू बड़ी।। भजन कर ले.............
यज्ञ संध्या न तूने किया, जीवन विषयों में खोता रहा।
देव दुर्लभ ये नर तन मिला, बीज पापों के बोता रहा।
फसल बोयेगा वैसी खड़ी। भजन कर ले..............
होश आया है अंतिम समय, इंद्रियां जब शिथिल हो गयी।
देख चारों तरफ हो विवश बोल भी सकता मुख से नहीं।
नयनों से अश्रु धारा झड़ी।। भजन कर ले.............
सारा परिवार घेरे खड़ा, मृत्यु शैय्या पर जब तू पड़ा।
चन्द्र अर्थी जब तेरी चली, रुदन सब ने कीन्हा बड़ा।
वेद की यह कहे हर लड़ी।। भजन कर ले..............

(15) काँटे से भी खराब है, जिस गुल में बू न हो।
वीराने के समान है, जिस दिल में तू न हो।।
गूंगी जबां हो जिस पे, तेरी गुफ़्तगू[1] न हो।
जल जाये दिल वह, जिस में तेरी जुस्तजू न हो।।
इन्सां है वह जो, आप सा जाने जहान को।
तफरीक़[2] जिसके दिल में, कभी मैं व तूं न हो।।
कुछ कर ले काम नेक, कि फुर्सत का वक्त है।
हासिल जो बात आज है, शायद वह कल न हो।।
खोले हुए हों हाथ, जब दुनियाँ से हम जुदा।
लिपटी हुई कफ़न में कोई आरजू न हो।।

---

1. बातचीत, 2. फूट।

(16) जब तेरी डोली निकाली जाएगी।
बिन मुहरत के उठा ली जाएगी।
उन हकीमों से कहो यों बोल कर,
करते थे दावा किताबें खोल कर।
यह दवा हरगिज न खाली जाएगी।।
धन सिकन्दर का यहाँ पर रह गया,
मरते दम लुक्मान भी यह कह गया।
यह घड़ी हरगिज न टाली जाएगी।।
होगा जब परलोक में तेरा हिसाब,
कैसे मुकरोगे वहाँ पर ऐ जनाब।
जब बही तेरी निकाली जाएगी।।
ऐ मुसाफिर! हो रहा है क्यों हैराँ,
यह किराये का मिला तुझको मकां।
कोठरी खाली करा ली जाएगी।।

(17) तुम्हारी कृपा से जो आनन्द पाया
वाणी से जाये वह क्योंकर बताया।।
नहीं है यह वह रस जिसे रसना चाखे।
नहीं रूप उसका कभी दृष्टि आया।।
नहीं है वह गुण गंध जो घ्राण जाने,
त्वचा से न जाये छुआ छुआया।
संख्या में आना असम्भव है उसका,
दिशा काल में भी रहे ना समाया।

आत्मोन्नति में तुम्हारी दया से,

मेरी ज़िन्दगी ने अजब पलटा खाया।

सत् चित् आनन्द अनन्त स्वरूप,

मुझे मेरे अनुभव ने निश्चय कराया।

गूंगे की रसना के सदृश 'अमीचन्द'

कैसे बताऊँ कि क्या रस है आया।।

(18) मानव का निर्माण नहीं, तब तक कुछ उत्थान नहीं।
जिसके बनने से सब बनते, उसका बिल्कुल ध्यान नहीं।।
सूर्य चन्द्र की दूरी नापी वहाँ रॉकेट पठाये हैं।
चन्द्रमा के पास पहुँच गये मिट्टी लेकर आये हैं।
कितना ऊँचा काम किया दुनियाँ भर में नाम किया।
कभी कोई मरने ना पाये ऐसा भी इन्तजाम किया।।
मानव का निर्माण नहीं, तब तक कुछ उत्थान नहीं।। 1।।
पक्षियों की तरह उड़ रहा बैठा जहाज हवाई में।
मछली जैसे डूब गया तू सागर की गहराई में।।
चलते जैसे साँप गिजाई, उनकी नकल से रेल बनाई।
नल बिजली टेलीफोन से घर-घर में सुविधा पहुँचाई।।
मानव का निर्माण नहीं, तब तक कुछ उत्थान नहीं।। 2।।
खाई खन्दक भर डाले और पहाड़ भी फोड़ गिराये हैं।
वृक्ष जहाँ पर नजर न आते अब वहाँ बाग़ लगाये है।।
नहर खोदकर लाये पानी, टयूबवैल से धरती छानी।
देश विदेशों की खबरों की सुना रही ट्रांजिस्टर वाणी।।
मानव का निर्माण नहीं, तब तक कुछ उत्थान नहीं।। 3।।

(19) मेरे देवता के बराबर जहाँ में, कहीं देवता ना कोई और होगा।
जमाने में होंगे बड़े लोग पैदा, दयानंद सा ना कोई और होगा।।
चरित्र हैं देखे बड़े ऊँचे ऊँचे, नज़र भर इधर भी जरा देख लेना।
चरित्र मिलेगा ऋषिवर का ऐसा, न देखा सुना ना कोई और होगा।
मेरे देवता के बराबर जहाँ में..........
इधर सिर्फ था ब्रह्मचारी अकेला, उधर था विरोधी यह सारा जमाना।
विजय पाने वाला दयानंद जैसा, न अब तक हुआ ना कोई और होगा।
मेरे देवता के बराबर जहाँ में...........
उठा के जमाने का इतिहास देखो, तो अपनों के लाखों हितैषी मिलेंगे।
मगर दुश्मनों का भी हित चाहने वाला, ऋषि के सिवा ना कोई और होगा।
मेरे देवता के बराबर जहाँ में...........

सत्य बात

(20) बुतों को समझा ख़ुदा किसी ने।
तो संग-ए असवद किसी ने चूमा।।
जबां पर तौहीद[1] के हैं किस्से।
पर अमल सब का है काफिराना।।
इन झूठे मजहबों ने झूठे किस्सों।
को भी हक़ीक़त बना दिया है।।
प्रभु के सत् रूप को भुलाया।
बनाया इसको है इक फसाना।।

---

1. एक ईश्वरवाद, (2) क़ब्रों।

बुतों, मज़ारों[2] को पूजने का।
बनाया मज़हबों ने आशियाना।।
धर्म से गुमराह हुए हैं सब ही।
मज़हब का गाते हैं जो तराना।।

आर्य समाज क्या है?

(21) है यह केवल आर्य समाज, भलाई सबकी चाहने वाला।
ईश्वर का जो वेद ज्ञान, सकल जग में फैलाने वाला।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, आपस में हैं सारे भाई।
मज़हबों ने जो विष फैलाई, इनसे दूर हटाने वाला।।
काटे मज़हबी सब जंजाल, झूठे बहमों के सब ख्याल।
कर दे ज्ञान से मालामाल, तिमिर अज्ञान मिटाने वाला।।
पत्थर पूजा है अज्ञान, इससे मिलता नहीं भगवान्।
अविद्या से हों दुःख महान्, ज्ञान प्रकाश फैलाने वाला।।
छूत छात न करें करायें, जात पात के भेद भुलाये।
सारे अन्धविश्वास मिटायें, सद् उपदेश सुनाने वाला।।
ऋषि दयानंद थे ब्रह्मचारी, देश हितैषी पर उपकारी।
सब दुनियाँ के वन हितकारी, सत् मार्ग दिखाने वाला।।
सबको सुमति दे भगवान्, बनें हम सच्चे सब इन्सान।
सारे विश्व का हो कल्याण, ऐसे भाव सिखाने वाला।।
प्राणि मात्र से प्रेम सिखाता, मजहबी घृणा दूर हटाता।
ओ३म् ईश्वर का नाम जपाता, सेवक हैं गुण गाने वाला।।

पत्थर पूजा

(22) पत्थर दिल ही पत्थर नूं पूजदे ने।
किसी प्रेमी ने प्रेम लगावणा की।।
सच्चा ईश जगदीश करतार छड़ के।
नकली बुतां ते दिल लै आवणा की।।
हत्थी अपने आप ही रब घड़ के।
उसनूं खलक दा खालक बनावणा की।।
मक्खी तक न जो हटा सकदा।
उसनूं प्रभु दा रूप बतावणा की।।
रक्षा अपनी जो न कर सकदा।
उसने किसे दे ताई बचावणा की।।
स्वयं जो आधीन है दूसरे दा।
उसने किसी नूं कुछ दिलावणा की।।
पत्थर खांवदां नहीं न कुछ पींवदा ए।
बुद्धि वालियां भोग लगावणा की।।
चेतन होके करन जो जड़ पूजा।
उन्हां श्रेष्ठ इंसान कहावणा की।।
झूठे पोपां ने किस्से बना रक्खे।
धन्ने पत्थर विच्चों रब पावणा की।।
प्यारे इतनी बात न समझ सकदे।
इसने खावणा और खिलावणा की।।
तड़प-तड़प के देवी प्राण बेशक।
पत्थर देवते नूं तरस आवणा की।।

पंथों में नकली ख़ुदा

(23) असली ईश्वर एक है जिसने रचा संसार है।
पंथों में नकली ख़ुदा की, हो रही भरमार है।।
खुद घड़ें पत्थर की मूरत, शक्ल दें इन्सान की।
कहते हैं अब इससे शक्ति, पूर्ण है भगवान् की।।
इसके आगे हाथ जोड़ें, सिर झुका कर मांगते।
कामना पूरी करेगा, ऐसा नादां जानते।।
क्षीर सागर में कहीं, सुलवा दिया भगवान् को।
चौथे-सातवें आसमां, बिठला दिया भगवान् को।।
सर्वव्यापी ईश्वर को, एक देशी कर दिया।
दूर दुनियाँ से बिठाया, और विदेशी कर दिया।।
कोठरी में बंद कर, बाहर से ताला जड़ दिया।
क्या अजब भगवान् इनका, क़ैद जिसको कर दिया।।
किस कदर अज्ञानता, मज़हबों ने यह फैलाई है यह।
आपकी भी समझ में क्या, बात कुछ आई है यह।।

मौत की शहजादी

(24) सजधज कर जब मौत की शहजादी आएगी।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।
छोटा सा है तू बड़े अरमान है तेरे।
मिट्टी का तू सोने के, सामान है तेरे।।
मिट्टी काया मिट्टी में, जिस दिन समाएगी।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।
पंछी है तू पर ये पिंजरा छोड़ के उड़ जा।
माया महल के सारे बन्धन तोड़ के उड़ जा।।
मौत दिल की धड़कन में जब गुनगुनाएगी।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।
धन दौलत से खाली होगे एक दिन तेरे हाथ।
अन्त समय भगवान भजन जाएगा तेरे साथ।।
उस दिन श्री सतगुरु की वाणी याद आएगी।
न सोना काम आएगा न चांदी आएगी।।
अच्छे किए हैं कर्म जो तूने पाया मानव तन।
पाप में क्यों अब डूबा है यह पापी चंचल मन।।
पाप की नैया ये तुझको जिस दिन डुबाएगी।
न सोना कमा आएगा न चांदी आएगी।।

(25) ओ सारे जहाँ के वाली, तेरी महिमा अजब निराली।
किसी ने तेरा भेद न पाया है, अजब ईश्वर तेरी माया है।।
जड़े नभ में सितारे, बड़े लगते हैं प्यारे,
घड़े वेद कैसे सारे, खड़े किसके सहारे। तू बता........
दिया रवि ने उजाला, रूप चन्द्रमा का आला,
लिया कौन सा ममता, सारा जग रच डाला। तू बता..........
कहीं कड़ीला कड़क, कहीं नभ में भड़क,
अद्भुत रंग रूप दिखाए, यही नहीं समझ में आए।।

कहीं नीला ये गगन कहीं शीतल पवन,
कहीं वन उपवन, कहीं उजड़ा चमन। हे पिता..........
कहीं डालियों में फूल, कहीं फूल काले शूल,
कहीं कन्द कहीं मृत, कहीं कोई नहीं भूल। हे पिता...
कहीं झाड़ दे पहाड़ कहीं बीहड़ उजाड़।
ये सब कुछ कौन रचाए, यही नहीं सझ में आए।।
कहीं नदियों की पार, कहीं सागर अपार,
कहीं रेत के अम्बार कहीं माया के भण्डार हैं यहाँ।
कहीं पक्षियों की डार, कहीं पेड़ों की कतार।
कहीं भंवरों की गुंजार, कहीं स्वरों की झंकार है यहाँ।।
कहीं बैर और प्रीत कहीं प्यार भरे गीत।
ये सब कुछ कौन सुनाए यही नहीं समझ में आए।।
कोई करोड़ों का वाली, कोई जेब से है खाली।
कोई मनाता दीवाली कैसी बात ये निराली।। हे पिता..........
कोई प्रीतम के संग, करे रास और रंग,
कोई भोजन से भी तंग कोई अंग से भी भंग। हे......
कोई सुन्दर सुडौल, कोई कुरुप बेमोल,
हम देख देख चकराये यही नहीं समझ में आए।।

(26) कुछ न बिगड़ेगा तेरा, प्रभु की शरण आने के बाद।
हर खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।
जब तलक़ है भेद मन में, कुछ नहीं बन पाएगा।
रंग लाएगी ये भक्ति, भेद मिट जाने के बाद।।
फूलों से पूछो के उन पर, कैसे छाई है बहार।
कब तलक़ कांटों पे सोया, डाल कर आने के बाद।।
प्रेम की मंजिल में राही, कष्ट आते हैं जरूर।
बीज फलता है सदा, मिट्टी में मिल जाने के बाद।।

कौन करता है किसी को, याद मर जाने के बाद।
सूंघता कोई नहीं है फूल मुरझाने के बाद।।
देख कर काली घटा को, ए भौंरे मत हो उदास।
बंद कलियाँ भी खिलेगी, रात ढल जाने के बाद।।
ज़िन्दगी विषयों में खोई, हरि भजन भी न किया।
होश में आया है इंसा, ठोकरे खाने के बाद।।
जिस खुशी को ढूंढता फिरता है दुनियाँ में सदा।
वो खुशी मिल जाएगी, चरणों में झुक जाने के बाद।।

ललकार

(27) फौलादी सी देह गठीली, ब्रह्मचर्य का तेज लिये।
संन्यासी, ऋषिराज देवगुरु, केसरिया-सा वेश लिये।
मस्तक हिमगिरि-सा उन्नत औ' मन रत्नाकर धीर गहन,
भावों में तूफान उठा-सा, वाणी जैसे मलय पवन।
आकुल मानस के भीतर था मानवता का पुष्प खिला।
चारों वेद करी सुगन्धि का प्रभु से था वरदान मिला।
दीनों के हित प्रेम दया का रूप धरे स्वच्छन्द चला,
ब्रह्मज्ञान ले दानी बनकर, ईश्वर का आनन्द चला।
पापों का साम्राज्य मिटाने, शिवम् शक्ति का बाण चला,
पांवों में पावन गंगा गति लिये हुए कल्याण चला।
त्याग, तपस्या स्वाभिमान, बल, प्रेम, तर्क, उत्साह लिये,
दयानन्द युगपुरुष पधारा जन-जागृति की चाह लिये।
इधर ईर्ष्या, घृणा, मूर्खता घर घर में थे व्याप रहे,
नर्क बना था जन-जन जीवन सदियों से संताप सहे।
पराधीनता ने छोड़ा था सभी सुखों को पंगु बना,
बन्धु-बन्धु के बीच खड़ा था भ्रष्ट चलन का दैत्य तना।
देखी दीन दशा भारत की उनका पौरुष मचल उठा,
रूढ़िवादियों के मरुस्थल में रिमझिम बरसी अमृत घटा।

युग-कल्याणी दृढ़ संकल्पों की उजली सौगात लिये,
भोली जनता को मंत्रों के सच्चे मोती दान किए।
सच है आँखों के आँसू जब मन में बोए जाते हैं,
दुःखों की धरती पर जब सौ-सौ बसन्त उग आते हैं।
युग-युग से कुण्ठित कण्ठों ने वेदों का सहगान किया,
ओ३म् ध्वनि से भारत भर का कोना-कोना गूंज उठा।
घर-घर यज्ञ हुए मानो पावनता का अभियान चला,
हवन कुण्ड की लपटों में जब जन-जन का अज्ञान जला।
अपनापन जागा स्वदेश का स्वाभिमान मनुहार उठा,
हिन्दी-संस्कृत का गौरव भी स्वागत को बलिहार उठा।
दुःखी जातियों ने दुष्टों की एक चाल भी नहीं सही,
दासी बनकर मरने वाली नारी अबला नहीं रही।
पोपों, पण्डों, मुल्लाओं की सारी चालें मन्द हुई।
मन्दिर, मस्जिद, गोरखधन्धों की दुकानें बंद हुई।
पूजने वाली अचल मूर्तियों के सिर चकनाचूर हुए,
ऊँच-नीच के, छूत-छात के मत सभी काफूर हुए।
खण्ड-खण्ड पाखण्ड हुए सब पूर्ण अहिंसक क्रांति जगी,
दानवता मर गई, लाश भी रही देखती ठगी-ठगी।
सूर्य उदित होने पर कैसे रह सकता है अंधकार,
नमस्कार युग के दिनकर को मेरा शत-शत नमस्कार।
दयानंद था एक, अनेकों का उसने उद्धार किया,
तूफानों के चंगुल में से युग का बेड़ा पार किया।
आज अनेकों आर्य बने हम फिर भी मंजिल दूर अभी,
धर्म यही, थामें पतवारें एकजुट हो आज सभी।
भारत की भावी आशाओं! है मेरी ललकार तुम्हें,
आर्य राष्ट्र का स्वप्न सलौना करना है साकार तुम्हें।

—जगदीश साधक

दयानन्द की जय हो

(28) जब घनघोर अविद्या का तम छाया था घर-घर में
थी प्रकाश की किरण न कोई दिखती भारत भर में।
भटक रहे थे सत्पथ भूले नर-नारी सब ऐसे
किसी बड़े बीहड़ जंगल में भेड़-बकरियाँ जैसे।
था समाज प्राचीन रूढ़ियों में कुछ ऐसा जकड़ा।
आगे नहीं खिसक पाता था जन-जीवन का छकड़ा।
लोग लकीरों के फकीर बन पत्थर पूज रहे थे।
ईश्वर की महान् सत्ता को बिल्कुल भूल गए थे।
छुआछूत का भूत सनातन धर्म बना बैठा था
पाखंडी समाज में फिरता मन-ही-मन ऐंठा था।
नीच कहे जाने वालों का कुछ अधिकार नहीं था।
मरते दम तक अत्याचारों से उद्धार नहीं था।
अनगिनती हिन्दू समाज के भोले भाले भाई
रोज विधर्मी बन जाते थे – मुसलमान ईसाई।
विधवाओं को, इस समाज में कोई स्थान नहीं था।
उनके कष्टों पर कोई भी देता ध्यान नहीं था।
नहीं पुरुष से कदम मिलाकर चल सकती थी नारी।
उसके लिए क़ैद थी घर की ही चार दीवारी।
कितने ही अनाथ बच्चे थे फिरते मारे-मारे।
बिना दूध पानी भोजन के वे घर बिना सहारे।
ऐसे समय देश में अपने दयानंद थे आये।
अमर ज्योति वेदों की अपने साथ थे लाये।
ढोंग और पाखंडों के गढ़ खोज-खोजकर ढाए।
अंधकार में भूले-भटकों को सत्पथ पर लाये।
दिया उन्होंने ज्ञान तर्क वह जिसका आश्रय पाकर।

लोग चलें नित स्वाभिमान से अपने शीश उठाकर।
वैदिक आर्य धर्म का डंका होकर निडर बजाया।
आजादी के मूल मंत्र का हमको पाठ पढ़ाया।
कहा उन्होंने अब हम चलकर घर-घर अलख जगाएं
नहीं देश भारत ही, दुनियाँ-भर को आर्य बनाएं।
हम अपने उस उद्धारक को यों ही भूल न जाएं।
मार्ग दिखाया है जो उसने दुनियाँ को दिखलाएं।
एक तान-स्वर-लय से बोले सारी सृष्टि अभय हो।
दयानन्द वेदों वाले की जय हो, जय हो, जय हो।
तूने वैदिक घोष सुनाकर मूर्च्छित देश जगाया था।
लोकार्थ समर्पित जीवन ही है यज्ञ हमें सिखलाया था।
हे ऋषिवर! योगीश्वर स्वामी! तू अभय मंत्र का दाता है।
इस आर्य जाति का गौरव तू, भारत का भाग्य विधाता है।।
तेरे उद्‌बोधन के स्वर से चिर-निद्रित भारत जाग उठा।
धर्मान्धग्रस्त जकड़ा सिकुड़ा भारत चौंका फिर कांप उठा।
आसेतु हिमाचल भारत यह भर स्वाभिमान से जाग उठा।
'हम आर्य बने' 'हम आर्य बने' यह भाव सबों में गूंज उठा।
अब तक जो धर्म-सुधारक थे वे शाखा पल्लवग्राही थे।
तुम मूल सींचते आये थे, तुम पूर्ण विश्व के ग्राही थे।
जो धर्म क्षेत्र में फैले थे, कुश-कंटक उनका उन्मूलन।
कर किया प्रतिष्ठित धरती पर वह वेद-विटप जो चिर नूतन।
आओ, उस अव्यय वेद-विटप की छाया में विश्राम करें।
उस कल्पवृक्ष की छाया में आजीवन श्रम अविराम करें।
अति शीतल इसकी छाया है, सुस्वादु अमृत फल इसका है।
जो अमृत पिलाता दयानंद स्वामी वह वेद कलश का है।
छककर पीओ वह वेदामृत जीयो ऋषि का जय गान करें।

ऋत और तप का जीवन जीकर मानवता का कल्याण करें।
कुश कंटक पथ, गिरि पथ दुर्गम चलकर तूने जो ज्ञान दिया।
उस वेद-सुधा से आर्य भूमि को फिर से जीवन दान दिया।
जो आदिकाल से ऋषियों ने पाया था, उसको सुलभ किया।
हे दयानंद! भर वेदामृत निज कलश विश्व को पिला दिया।
उस अमृत कलश की कुछ बूंदें से दयानंद के दीवाने।
लाए इस काव्य-पुस्तिका में तुम पियो अमृत वह मस्ताने।

–निरंकारदेव 'सेवक'

स्वामी दयानन्द

(29) जब घोर तमिस्रा छाई थी, धर्मान्ध मूढ़ता छाई थी,
जब धर्म चेतना भारत में जड़ बनी हुई पथराई थी,
जब छिन्न-भिन्न बहु शाखाओं में धर्म-लता मुरझाई थी।
तब वेदमूर्ति हे दयानंद! तूने ही ज्योति दिखाई थी।
जय दयानंद! वेदोद्धारक! देशोद्धारक! नमो नमो!
जय ऋषि! मंत्रों के उच्चारक! देशोद्धारक! नमो नमो!
तुम निज कर में ले वेद-दीप घर-घर प्रकाश फैलाते थे,
पाखण्ड-खण्डिनी ध्वजा लिये वेदों का ज्ञान सिखाते थे।
नाना मत सम्प्रदाय-खण्डित जब वेद-धर्म का ह्रास हुआ,
'सत्यार्थ' बताकर वेदों का तुमने तब ज्ञान प्रकाश किया।
हे दयानंद! वेदोद्धारक! जग में तुम प्रणव प्रचारक थे।
ऋषियों के ज्ञान-प्रसारक थे भारत के श्रेष्ठ विचारक थे।

जो मूल धर्म था आर्यों का, उन वेदों के हम अभिमानी।
बस नाम मात्र से परिचित थे, थे हम वेदों के अज्ञानी।
परिचित हम नहीं मूल से थे, केवल पुराण-पथ-अनुगामी।
तुमने मूल बता करके सार्थक निज नाम किया स्वामी।।
वह दयानंद ही इस युग में वेदों का त्राता, दाता है।
ऋषि दयानंद ही वेदों का ब्रह्मा अध्वर्यु उद्गाता है।।
तूने ही प्रथम स्वदेश और स्वधर्म हमें बतलाया था।
तूने ही हमें विलुप्त ज्ञान ऋषियों का पुनः सुनाया था।।

—डॉ० श्रीवास्तव 'शेखर'

महर्षि महिमा

(30) राम, कृष्ण की मातृभूमि भूली थी अपने ऋषियों को,
यम, नियम कही थे बचे नहीं सर चढ़ा लिया था विषयों को।
वेद ज्ञान का लोप हुआ, अज्ञान अंधेरा छाया था,
ढोंग, गुरुडम, रूढ़िवाद ने भीषण उत्पात मचाया था।
वेदों में रखा ही क्या पोंगापंथी यूँ कहते थे,
जादू, टोना बतला-बतला जनता को ठगते रहते थे।
गैरों का दास बना भारत अपनी किस्मत को रोता था।
जो चक्रवर्ती रहा कभी वह कायर बन कर सोता था।
जगती के नभ-मण्डल पर अधर्म के बादल छाये थे,
भटक रही थी मानवता जिस वक्त दयानंद आये थे।
गुरु विरजानंद के चरणों में योगी ने वह शिक्षा पाई,
कि सोया भारत जगा दिया करामात अनूठी दिखलाई।

सुप्त तर्क फिर जाग उठा पाखण्ड धरा का चूर हुआ,
सदियों से जो तम छाया था सब पलक झपकते दूर हुआ।
था पोंगापंथी सब सहम गये मतवादों की जड़ उखड़ गई,
भूत प्रेतों की बस्ती आनन फानन में उजड़ गई।
ईश्वर-विश्वासी ऋषिवर ने, हुंकार भरी ऊँचे स्वर से,
रुण्डा, मुण्डा, चामुण्डा सब भागी दुब दबा करके।।
ऋषि से प्रेरणा पा करके फिर क्रांति पथ पर वीर बढ़े,
उड़ गये होश फिरंगी के जब देश भक्त रणधीर बढ़े।
यह फल है ऋषिवर के तप का जो मातृभूमि आज़ाद हुई।
उजला सा प्रभात मिला, रात अंधेरी बीत गई।
दुनियाँ कहने पर विवश हुई, भारत जग का वह कौना है,
जिसकी तुलना में देखें तो शेष विश्व बस बौना है।
भारत को उसका गौरव दे फिर वह संन्यासी चला गया,
क्या घटित अचानक हुआ, अरे, इतिहास ठगा सा खड़ा रहा।
उसको खोकर धरती रोई, अम्बर ने आँसू टपकाये,
मानों युग दिशा विहीन हुआ कि कौन रास्ता बतलाये।
हम मानस-पुत्र हैं ऋषिवर के हम अपना फर्ज़ निभायेंगे।
जो मिशन अधूरा छोड़ा है उसे पूरा कर दिखलायेंगे।

—प्रो० ओम कुमार आर्य

(31) अखिलाधार अमर सुख धाम एक सहारा तेरा नाम।
कैसी सुन्दर सृष्टि बनाई सूर्य चन्द्र को ज्योति जगाई।
कैसी अद्‌भुत वायु बहाई एक से एक विलक्षण काम।
सुन्दर सरस सुधासम पानी, अमृत अन्न खायें सब प्राणी।
गुण गावें ज्ञानी और ध्यानी भजें निरंतर आठों याम।
यत्र तत्र रंग रूप निराला, पुष्प पुष्प में गंध बिसाला।

फल फल पृथक् प्रेम रस निराला लीला तेरी ललित ललाम।
सज्जन सद्गुण गरिमा गावें, धर्म धुरीण ध्यान में लावें।
कुटिल सुचील कुपात्र न पावें है जगदीश आपका धाम।
आप अमर सत्पथ के स्वामी, मैं अमर असत्यपथगामी।
एक नाम के दोनों नामी, मैं गुण रहित आप गुणग्राम।।

(32) जमाने को जगाया है ऋषि ने ख़्वाबे गफ़लत से।
किया आज़ाद भारत को गुलामी से जहालत से।
यतीमों और ग़रीबों की मिटा दी कुलफत सारी।
मिलाया बिछड़े भाइयों को ऋषि ने खास हिकमत से।
सबक तौहीद का फिर से जमाने को पढ़ाया है।
जमाना हो गया कायल ऋषिवर की सदाकत से।
ऋषि ने घर बघर जाकर बजाया वेद का डंका।
जला डाले थे खिरमन कुफ्र के अन्वार बाहदत से।
हक़ीक़त महर्षि को मतलाए चश्मे बसीरत से।
दिया पैग़ाम दुनियाँ को ऋषिवर ने मोहब्बत से।
कराया अहले दिल को आशना राजे मुहब्बत से।
हजारों आँधियां उठीं मगर फिर भी हैं हम जिंदा।
ऋषिवर के अगर दर्शन मुझे होते तो क्या होता।
तसव्वुर में ही झुक जाता है सर जोशे अक़ीदत से।
यह है जजबात ''मुजरिम'' के ऋषिवर का मोहब्बत में।
नहीं तो काम क्या इसको फसाहत से बगालत से।

सरफरोशी की तमन्ना

(33) सरफरोशी की तमन्ना[1] अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल[2] में है।
रहबरे राहे मुहब्बत[3] रह न जाना राह में,
लज्जते सहरानवर्दी[4] दूरिए मंजिल[5] में है।
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ए आसमाँ
हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है।
अब न अगले बलबले[6] हैं अब न अरमानों[7] की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत[8] अब दिले बिस्मिल[9] में है।
आज मक्तल[10] में यह कातिल कह रहा है बार-बार,
क्या तमन्नाये-शहादत[11] भी किसी के दिल में है।
ऐ शहीदे मुल्को-मिल्लत[12] मैं तेरे ऊपर निसार[13],
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर[14] की महफिल में है।

—रामप्रसाद बिस्मिल

---

(1) सर कटाने की आकांक्षा, (2) कातिल के हाथों में, (3) प्रेम की राह के सूत्रधार, (4) जगह-जगह मारे फिरना, (5) लक्ष्य की दूरी, (6) जोश-हिम्मत, (7) आकांक्षाओं, कामनाओं (8) प्रबल इच्छा, (9) अधमरा, जख्मी, (10) फांसीगृह, (11) धर्म या देश पर बलिदान, (12) देश और समाज (13) न्यौछावर, (14) दुश्मनों में।

ओम् नाम के हीरे मोती

(34) ओम् नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली-गली।
ले लो रे कोई ओम् का प्यार आवाज़ लगाऊँ गली-गली।
माया के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा।
धन-दौलत और रूप खजाना, धरा यहीं रह जायेगा।
सुन्दर काया माटी होगी चर्चा होगी गली-गली।। 1।।
मित्र प्यारे सगे संबंधी, इक दिन तुझे भुलायेंगे।
कल तक जो अपना कहते थे अग्नि में तुझे जलायेंगे।
दो दिन का यह चमन खिला है, फिर मुरझाए कली-कली।।2।।
क्यों करता है मेरी-मेरी तज दे इस अभिमान को।
छोड़ जगत् के झूठे धंधे जप ले प्रभु के नाम को।
गया समय फिर हाथ न आये, तब पछताए घड़ी-घड़ी।। 3।।
जिसको अपना कह करके, तू इतना इतराता है।
छोड़ दे बन्दे साथ विपद में कभी नहीं कोई जाता है।
दो दिन का यह रैन बसेरा, आखिर होगी चला-चली।।4।।

(35) ये तो प्रेम की बात है ऊधो बन्दगी तेरे बस की नहीं है।
यहाँ सर दे के होते हैं सौदे, आशिकी इतनी सस्ती नहीं है।
प्रेम वालों ने कब तक पूछा उनकी पूजा में पाबन्दी नहीं है।
यहाँ पलपल में होती है पूजा, सर उठाने की फुरसत नहीं है।
जो असल में है मस्ती में डूबे उन्हें परवाह क्या ज़िन्दगी की।
जो उतरती है चढ़ती है मस्ती वो हक़ीक़त में मस्ती नहीं है।।
जिनकी नज़रों में है श्याम प्यारे, वो रहते हैं जग में न्यारा।
जिनकी नज़रों में मोहन समाये वो नजर फिर तरसती नहीं है।।

(36) सब से ऊँची प्रेम सगाई।
दुरयोधन के मेवा त्यागे साग विदुर घर खाई।
प्रेम बिबस अर्जन रथ हाँक्यो भूल गये ठकुराई।
जूठे बेर शबरी के खाये प्रेम बिबस रघुराई।।
कैसी प्रीत बढ़ी वृन्दावन गोपीय नाच नचाई।
सूर कहे श्याम सुनो केहि विधि करौं बढ़ाई।।

आदत बुरी

(37) आदत बुरी सुधार लो बस हो गया भजन।
मन की तरंग मार लो बस हो गया भजन।।
आये कहाँ से हो और जाना कहाँ है तुम्हें।
मन में यही विचार लो बस हो गया भजन।।
दृष्टि में तेरे दोष हैं दुनियाँ निहारती।
समता का अंजन आज लो, बस हो गया भजन।।
नेकी सभों के साथ जितनी बने करो।
मत सिर बदी का भार लो, बस हो गया भजन।।
कटुता मन से त्याग दो मीठे वचन कहो।
वाणी का स्वर सुधार लो, बस हो गया भजन।।
अच्छे बुरे जो भी तुम्हें कर्मों का फल मिलें।
हँसकर सभी गुजार लो बस हो गया भजन।।

(38) ईश्वर प्रकृति के कण-कण में समाया फिर हमने क्यों मन्दिर, मस्जिद बनाया।
अज्ञानियों ने वेद विद्या को बिसराया, अपने स्वार्थ में पुराण क़ुरान घड़वाया।
बिन वेद सच्चा ज्ञान नहीं मिल पाता, इसको कोई क्यों.......
पृथ्वी, सूरज, चाँद और तारे ये सब टिके प्रभु की शक्ति के सहारे।
उसी ने उत्पन्न किये जड़ चेतन सारे वह देख रहा सब पाप पुण्य हमारे।

जो यह नहीं जानता वही पाप कमाता, इसको कोई क्यों......
गहरे समुन्द्र, नदियां और नाले ये सब औषध अन्न के देने वाले ।
ईश्वर इन सब के रखवाले, लूट खसूट का मन से ख्याल मिटा ले ।
कोई मर के साथ कुछ नहीं ले जाता, इसको कोई क्यों......
क्यों डूब रहा अंधविश्वास में, वह तो बैठा है तेरे हृदयकांश में ।
काम, क्रोध, मोह न जाने दे पास में, वह तो रम रहा एक-एक सांस में ।
क्यों नहीं चित्त वृत्ति निरोध को अपनाता, इसको कोई क्यों......
अज्ञानता में फंस जीवन खो रहे अनमोल, शुद्ध मन से अपने अन्तः करण टटोल
दयानंद खोल गये पाखण्डियों की पोल, व्यर्थ में पीट रहे अवतारवाद का ढ़ोल
ईश्वर कभी जन्म मरण के बंधन में नहीं आता, इसको कोई क्यों....
कोई चादर चढ़ा रहा मजार पर, कोई पाप धो रहा गंगा की धार पर ।
कोई लम्बा लेट रहा मन्दिर के द्वार पर, कोई चुन्नी चढ़ा रहा तुलसी की डार पर
बिना भोगे कोई पाप नहीं कट जाता, इसको कोई क्यों...........
ईमानदारी और मेहनत से धन जोड़, पाखंड छोड़ ईश्वर से नाता जोड़ ।
पत्नी भी अंत में लेती है नाता तोड़, गोती नाती भी चल देते हैं मुखड़ा मोड़ ।
कह चौहान पाप-पुण्य कर्म ही साथ में जाता, इसको कोई क्यों ....

—लालचंद चौहान

जीवन में मधुमास

(39) जीवन में मधुमास को भर लो कलियों के मृदुहास को भर लो ।
शैशव के उल्लास को भर लो सूर्य चन्द्र के हास को भर लो ।
अपने ही उद्योग का फल है कर्म करो तो कर्म सफल है ।
बैठे केवल मन में सोचो तब तो जीवन ही निष्फल है ।
क्या मिलता है चिन्ता करके? अब तक सोचो क्या पाया है?
चिन्ता में जो समय खो दिया अब तक लौट नहीं पाया है ।
फिर क्यों यह दुष्चक्र सहेड़ा इसको परे किनारे कर दो ।
आंगन के फूड़े की भाँति झाड़ फूंक कर बाहर कर दो ।
चिन्तन की आदत को डालो चिन्तन से जीवन मिलता है ।

अपना मन जो खिलता ही है औरों को भी मन खिलता है।
मुंह लटका कर यदि चलोगे मूर्ख ही तुम सदा रहोगे।
स्वयं सदा ही दुःखी रहोगे औरों को भी दुःखी करोगे।
इसलिये कहता हूँ तुझसे हँसना और हँसाना सीखो।
जीवन की बगिया के अन्दर फूलों सा मुस्काना सीखो।

—ब्रह्मचारी राम प्रकाश

सात्विक तप का फल

(40) मुठ्ठी बांधे आए थे और हाथ पसारे जाएंगे।
जाते-जाते इस सृष्टि को देकर ही कुछ जाएंगे।
धरती के उपकारों का हम बदला शायद दे न सके।
कुछ न कुछ तो इस ऋण को हम चुकता करके जाएंगे।
बहुत मिला है सुख लोगों से जिसको भूल न सकते हम।
इस संसार के सुख में हम भी वृद्धि करके जाएंगे।
प्यार असीमित पाया जग में जिसकी थाह न मिल पाई।
इसी प्यार का सम्बल ले पर लोक में सुख से जाएंगे।
अब तक हमने जीवन भर में विजय पताका फहराई।
आगे भी हम काल अश्व पर आरोहण कर जाएंगे।
सृष्टि वालों यह न समझना व्यर्थ में काल विनाश किया।
अपने सात्विक तप का फल हम सबको देकर जाएंगे।

—ब्रह्मचारी राम प्रकाश

पैसे बिन लंगड़ा जीवन

(41) पैसा सब की जान है पैसा ही भगवान है।
पैसा है तो खुश है दुनियाँ वरना सब श्मशान है।
पैसे से ही खेल खिलौने, पैसे से मखमल के बिछोने।
बिन पैसे जीवन का उजला रस्ता भी सुनसान है।
पैसा सब की जान है ....

पैसे से ही रिश्ते नाते, रूठै हुए भी सब मन जाते।
सब कुछ लुट जाने पर भी, ये पैसा सुख की खान है।
पैसा सब की जान है ....
पैसा क्या-क्या नाच नचाए, कभी हंसाए कभी रुलाए।
बीबी बच्चे दोस्त यार सब पैसे की संतान है।
पैसा सब की जान है ....
शादी की औलाद हुई और पाल पोस कर बड़ा किया।
सुख दुःख में सोचो तो पग-पग पर पैसा वरदान है।
पैसा सब की जान है ....
खूब कमाया पैसा घर खुशियों से माला माल हुआ।
बच्चों संग मिल बाँट के खाया इन पर सब क़ुर्बान है।
पैसा सब की जान है ....
बेटी तो थी धन पराया उसको इक दिन जाना था
धूमधाम से विदा किया पैसे की निराली शान है।
पैसा सब की जान है ....
बेटे की शादी की घर में बिना दिवाली दिए जले।
यूं ही महकती रहे ज़िन्दगी सब का ये अरमान है।
पैसा सब की जान है ....
हुए रिटायर मिला जो पैसा, मांग बहू बेटे की बढ़ी।
करो तमन्ना इनकी पूरी बीबी का फरमान है।
पैसा सब की जान है ....
मांगे पूरी करते करते जब ठन ठन गोपाल हुए।
औरों के मोहताज हुए अब कोई न करता ध्यान है।
पैसा सब की जान है ....
पैसे बिन लंगड़ा है जीवन चार कदम भी चल न पाए।
सभी किनारा कर जाते हैं न इज़्ज़त न मान है।
पैसा सब की जान है ....

कैसे जीवन की कशती को कोई पार लगाएगा।
'शमस' भंवर में डूबेगी जब पैसा ही प्रधान है।
पैसा सब की जान है ....

—बलराम खोसला 'शमस'

(42) सबके गुण अपनी हमेशा गलतियाँ देखा करो।
ज़िन्दगी को हू-बहू तुम झलकियां देखा करो।।
हसरते महलों की गर, तुमको सताएं आन कर।
कुछ ग़रीबों की भी जाकर, बस्तियाँ देखा करो।।
खाने से पहले अगर तुम, हक पराया सोच लो।
कितने भूखों की है इनमें, रोटियाँ देखा करो।।
आ दबाये गर कहीं तुम को सिकन्दर का गुरूर।
हाथ ले खाली आते-जाते, अर्थियाँ देखा करो।।
ये जवानी की अकड़ सब, खाक में मिल जाएगी।
जल चुके जो शव हैं उनकी अस्थियाँ देखा करो।।
विषयों की विषपान कर, झूठे नशे में चूर हो।
प्रभु नाम का इक जाम पीकर मस्तियाँ देखा करो।।
ज़िन्दगी में चाहते हो सुख अगर अपने लिए।
दूसरों के ग़म में अपने, सिसकियाँ देखा करो।।

(43) प्रभु दर्शन पाने आये थे, प्रभु दर्शन पाना भूल गये।
वेदों की डगर पर जाना था, उस पथ पर जाना भूल गये।।
मानव जीवन को पाकर भी, ये उलझन हमसे न सुलझ सकी।

अन्तर्यामी का मन अंदर, हम ध्यान लगाना भूल गये।।
यम-नियमों के साधन द्वारा, अपने को निर्मल कर न सके।
ऋषियों की भाँति ज्योति से, ज्योति को मिलाना भूल गये।।
अपनी ही अविद्या के कारण, भगवान को समझा दूर सदा।
खूब खेले पापाचारों में, शुभ कर्म कमाना भूल गये।।
भूलें सुलझाने को देश की फिर प्रभु भक्त दयानंद आये थे।
ऐसे उपकारी योगी की, आज्ञा को निभाना भूल गये।।

(44) मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यही विनती है पल-पल, क्षण-क्षण, रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।।
चाहे वैरी कुल संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।। 1।।
चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर मन न डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।। 2।।
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे कांटों पर मुझे चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।। 3।।
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
यही काम बस आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारी भक्ति में।। 4।।

(45) परमपिता से प्यार नहीं शुद्ध रहे व्यवहार नहीं।
इसीलिए तो आज देख लो सुखी कोई परिवार नहीं।
अन्न फूल फल मेवाओं को समय-समय पर देता है।
लेकिन है आश्चर्य यही बदले में कुछ नहीं लेता है।
करता है इन्कार नहीं भेदभाव तकरार नहीं।
ऐसे दानी का ऐ मानव माने तू उपकार नहीं। परमपिता......
मानव चोले में न जाने कितने यंत्र लगाये हैं।
कीमत कोई आँक सका ना ऐसे अमूल्य बनाये हैं।
अंग कोई बेकार नहीं पा सकता कोई पार नहीं।
ऐसे कारीगर का बन्दे माने तू उपकार नहीं। परमपिता......
अग्नि, जल और वायु का वह लेता नहीं किराया है
गर्मी, सर्दी और वायु का कैसा चक्र चलाया है।
लगा कोई दरबार नहीं सिपह कोई सालार नहीं।
कर्मों का फल दे सभी को रिश्वत की सरकार नहीं। परमपिता...
सूर्य, चन्द्र, तारों का न जाने बिजलीघर कहा बना हुआ।
पल भर को न धोखा देवे कहाँ कनैक्शन लगा हुआ।
खम्भा कोई तार नहीं लगी कही दीवार नहीं।
ऐसे शिल्पकार का नरदेव करता तू विचार नहीं। परमपिता.....

(46) पहले खो दिया है बचपन, फिर खो दी जवानी।
तेरे सामने बुढ़ापा, फिर है खत्म कहानी।।
क्या है तेरा यहाँ पर, मत देख झूठे सपने।
जिनके लिए मरता कहाँ है वो तेरे अपने।।

क्यों सोच कर रहा है इतनी बड़ी नादानी। तेरे ....
क्यों माया के लिए तू करता है बेईमानी।
इस पे न रख भरोसा माया है आनी जानी।
तेरे साथ न चलेगी एक भी तो कौडी कानी। तेरे..........
मझधार में पड़ी है जीवन की तेरी नैय्या।
यह पार कैसे होगी सोचा कभी क्या भैय्या।
नैय्या का बन खवैय्या गर पार है लगानी। तेरे ....
मदहोश हो रहा है पाओ पसार करके।
इक दिन पड़ेगा जाना सब कुछ विसार करके।
रख याद न चलेगी तेरी कोई शैतानी। तेरे ....

(47) मेरी डोली लेके चले हो बोलो, बन्धु इधर उधर।
लोग खड़े जाने पहचाने राह में, मेरी इधर-उधर।
कैसी गलती की है तुम्हारी शान में, मैंने पहली बार।
शर्मिन्दा हूँ जाते-जाते छोड़के तुमको बीच डगर। मेरी ....
मजबूरी मेरी तो देखो, बोल नहीं कुछ पाता हूँ।
अंतिम विदा कहूँ मैं कैसे, बेबस हो रह जाता हूँ।
जाने की जल्दी है मुझको, लम्बा मेरा दूर सफर। मेरी ....
किस की यह आवाज़ है आई टप टप आँसू गिरने की।
लुटा सिंधुर चुड़ियां टूटी, सजन सिलौनी साजन की।
शायद याद आ गई उनकी, प्रथम मिलन की प्रथम सहर। मेरी....

बचपन बीता जिसकी गोद में, माँ रोती तो सुबक सुबक।
पिता भाई सब चिलाते हैं, बहनें रोती हुबक हुबक।
इनको कह दो राह न रोकें, मुझको जाना दूर नगर। मेरी ......
आखिर मुझको ले ही आए, जहाँ पे मुझको आना था।
अपने देश में आ ही पहुँचा वह तो देश बेगाना था।
लकड़ी के इस ढेर पे रखकर होते हो क्यों तितर बितर। मेरी....
चिता में मुझे आज बैठाकर तुमने मेरा भला किया।
तोड़ के बंधन पिंजरे के पक्षी को क़ैद से रिहा किया।
तुम क्या जानो भोले भाले, कौशिक आज हुआ है अमर। मेरी....

(48) उठ करले भजन भगवान का तेरी जीवन का तो यही सार है।
बिना बन्दगी भजन भगवान् के तेरा जीवन यूं ही बेकार है।
जन्म मिला अनमोल ये हीरा, माटी में क्यों तूने खो दिया।
जिस मार्ग पे जाना तुझे, उसी मार्ग में काटों को बो दिया।
ये न सोचा कि झूठा संसार है और झूठी ये मौज बहार है।
ये दुनियाँ तो मेला चन्द रोज का आखिर को यहाँ अंधकार है।
इस दुनियाँ की मोह ममता में तूने प्रभु को भूला दिया।
विषय विकारों बद कर्मों में जीवन सारा लुटा दिया।
जिस नैय्या पर तू असवार है, वही नैय्या तेरी मझधार है।
बिना धर्म के लिये पतवार के कभी होगा न बेड़ा पार है।
भूखा मरे कोई प्यासा मरे, पर तुझको किसी का फिक्र नहीं।
सत्य, अहिंसा, दया-धर्म का तेरी जुबां पर जिक्र नहीं।
सारी बीती उमरिया झूठ में बेईमानी से किया व्यापार है।

जरा मन में तो अपने सोच ले तूने कौन सा किया उपकार है।
पाप करें और चाहे भलाई, ऐसा कभी नहीं हो सकता।
औरों को दुःख देगा तो खुद भी सुख से कभी नहीं सो सकता।
वैसा काटेगा जैसा बोयेगा, यहाँ कर्मों का खुला बाज़ार है।
इन कर्मों के जीते जीत है और कर्मों के हारे हार है।
दुनियाँ में रहकर जीते जो मन को, वह प्राणी सबसे बलवान है।
छड तूं बदीयों को नाहर तेरी इसी से कल्याण है।

(49) ये जन्म मिला प्रभु जपने को, तू ने यूं ही लुटा के रख दिया।
क्यों विषय विकारों में फंस कर, बेकार बना कर रख दिया।
मस्तक से कभी ये सोचा न तू क्या करने को आया है।
आँखों ने देखा बाहर ही भीतर को भुलाके रख दिया। क्यों ......
इस मुंह से कभी सच बोला न हाथों से पूरा तोला न।
तेरा रास्ता तेरे ऐबों ने दुश्वर बनाके रख दिया। क्यों ......
कानों से सुना न प्रेम गीत गर सुन पाये तो निन्दा ही।
फिर क्यों तड़फे प्रभु दर्शन को, जब प्रभु भुला के रख दिया।
ये टांगे दौड़ती जाती हैं, गर नाच रंग कहीं होता है।
जहाँ प्रभु का गायन होता है, चलना ही भुलाके रख दिया।
इन हाथों से था दान दिया, जो आज लक्ष्मी से खेले।
धन से दुःखियों की सेवा को, हाय आज भूलाके रख दिया।
ये अंग संग साथी सारे, टी.आर. ये यौवन खिला हुआ।
तूने अपने ही आमालों से बेकार बनाके रख दिया।

(50) बैठ अकेला दो घड़ी, कभी तो ईश्वर ध्याया कर
मन मन्दिर में गाफिला झाडू रोज लगाया कर।
सोने में रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बर्बाद तू प्राणी करता अपना आप रहा।
बिस्तर से उठ प्रेमी सत्संग में भी आया कर। बैठ.......
बारम्बार जन्म का पाना, बच्चों वाला खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का होता जब तक मेल नहीं।
नर तन पाने के लिए उत्तम कर्म कमाया कर। बैठ......
पास तेरे है दुःखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या?
भूख प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या?
पहले सब से पूछ कर तू भोजन खाया कर। बैठ......
वीर जिनेश्वर जग हितकारी, जीवन का जिसने ज्ञान दिया।
अंधकार में पड़े जगत् का कर कृपा कल्याण किया।
वीर प्रभु का नाम तूं प्रातः समय नित गाया कर। बैठ......

(51) कर मुहब्बत हर किसी से, दिल दुखाना छोड़ दे।
बस इबादत है यहीं जंगल में जाना छोड़ दे।
गर चुभे कांटा किसी के, दर्द तूं महसूस कर।
मत तसव्वुर गेर अपना बेगाना छोड़ दे। कर......
हो किसी का फायदा, नुकसान तेरे से अगर।
जान भी कुर्बान करदे दिल चुराना छोड़ दे। कर.......

सेवा पहले मुल्क की, फिर सेवा अपनी कौम की।
फर्ज कर अपना अदा तू भाग जाना छोड़ दे। कर......
मेरा मेरा कर सभी, दुनियाँ से आखिर चल दिए।
झूठा यह संसार इसमें दिल लगाना छोड़ दे। कर ....

(52) जो गैरों की भलाई के लिए जर जर को लुटाते हैं,
वही जरदार बनते हैं, सखी दिल वो कहलाते हैं।
जो दम वालों के दम करें अपना दम देकर बचाते हैं।
उन्हीं का दम गनीमत है, वही हमदम कहाते हैं। जो ......
मुसीबत सर पे आती है तो आने दो न कुछ परवाह।
जो कांटो से नहीं डरते, वहीं फूलों को पाते हैं। जो.....
हिना वह रंग लाती है, जो पिसकर चोट खाती है।
वृक्ष के फूलते-फलते है, जो सिर को कटाते हैं जो ....
गुलों में महक उनकी फूलों में जायका उनका।
जो मिलकर मिट्टी में निशा अपना मिटाते हैं जो ....
ख़ुदा उनको नहीं मिलता, खुदी के जो हैं मतवाले।
ख़ुदा वो खुद ही बनते हैं, ख़ुद को जो मिटाते हैं। जो .....
यह तूं और मैं सदाकत से गिरती रुहें दुनियाँ को।
वो पाते हैं सदाक़त जोकि तू मैं को मिटाते हैं। जो ....
जो गैरों के लिए मरते हैं वो मर कर भी जिन्दा हैं।
जो अपने वास्ते जीते हैं, वो मुर्दा कहाते हैं। जो ....

धर्म पर जान जो देते उन्हें कब मौत आती है।
अमर होते हैं वो ज्योति अमर पदवी को पाते हैं। जो ....

(53) दोहे

1. अपने को जाने नहीं, मानव उसे न मान।
जाने अपने आप को, मानव उसको मान।।
2. भीतर बाहर है वही, देख सके तो देख।
जो भी तुझको दीखता, सब में उसको देख।।
3. मूरख को नित दीखता, चंदा में भी दाग़।
दीखता है गुणवान को, पत्थर में भी आग।।
4. केवल कथनी से कभी, ना बनती पहचान।
कथनी करनी एक बने, तभी दिलाती मान।।
5. गर चाहे आनंद तू, अपने भीतर खोज।
बाहर भटके नहिं मिले, तेरे मन की मौज।।
6. जो कुछ तेरे पास है, मान ईश आभार।
दिया नहीं जो ईश ने, उसका दुःख बेकार।।
7. अहं बढ़े जिस ज्ञान से, वह नहि सच्चा ज्ञान।
अहं भगाये ज्ञान जो, उसको सच्चा जान।।
8. उसका उसको सौंप कर उसमें मन रम जाये।
अहं भाव सब दूर हो, परमपिता को पाय।।
9. विद्या बढ़ती दान से, दान बिना घट जाय।
पानी खड्डे में खड़ा, पड़ा पड़ा सड़ जाय।।

10. जितना तेरे पास है, कर उतना स्वीकार।
जिसकी तुझको आस है, मत करना तक़रार।।

11. मैं और मेरा ईश्वर, दोनों भीतर साथ।
मैं भटकूँ बाहर फिरूं छोड़े उसका हाथ।।

12. गिरगिट रंग बदलता, लोमड़ी बदले खाल।
आदत पर जीवन भर नहीं बदलती चाल।।

13. जो गुण सब के देखता, हंस बन मोती खाय।
दोष ढूंढता जो सदा, कौआ कूड़ा पाय।।

14. रखो ना द्वेष भावना, मन को करो उदार।
मानो पूरे विश्व को, अपना ही परिवार।।

15. पति पत्नी का स्वभाव, जीवन की बुनियाद।
पति पत्नी पूरक बने, तब हो घर आबाद।।

16. घाव लगे तलवार से, समय संग भर जाय।
पर वाणी का घास तो, भूले नहीं भुलाय।।

17. जैसा तेरा आचरण, वह तेरी पहचान।
वेश्या कितनी सुंदर पर ना पाती मान।।

18. केवल कपड़ों से कभी ना मिलता सम्मान।
यह तो तेरा आचरण, देता है पहचान।।

19. शिक्षा का तो मूल यह, हो चरित्र निर्माण।
यदि चरित्र ना बन सके, उसे अशिक्षा जान।।

20. देने को तैयार है, हर कोई उपदेश।
पर कोई लेता नहीं सुना हुआ उपदेश।।

21. जैसे भौरा फूल से, करता रस का पान।
वैसे ही विद्वानों से लो शास्त्र का ज्ञान।।

22. जो विद्या तो जानता, उपयोग न कर पाय।
वह गधा बोझ से लदा, फिरता बोझ उठाय।।

23. केवल भगवा पहन कर, संत नहीं बन पाय।
सबके हित की सोचता, संत वही कहलाय।।

24. नदी न पीती नीर निज, पेड़ फल नहीं खाय।
सूरज जले प्रकाश दे, काम और के आय।।

25. जो बस अपनी सोचता, कभी कुछ नहीं पाय।
पर हित की जो सोचता, उसको सब मिल जाय।।

26. मन जिसका टिकता नहीं राह नहीं वह पाय।
मकड़ी जाले में फंसी बाहर निकल न पाय।।

27. पर हित में जो भी जिये, वह जीवन जी पाय।
अपनी खातिर सोचता, जीवन ना कहलाय।।

28. धन सम्पत्ति रिश्ते सभी, साथ कभी न जाय।
करम फले की पोटली, तेरा साथ निभाय।।

29. सहना करना ज्यादति, दोनों ही है पाप।
विरोध अत्याचार का करते रहना आप।।

30. हक तो तुझ को याद है, कभी नहीं मिल पाय।
हक पाना तू चाहता है, लड़कर उनको पाय।।

31. मात-पिता की सेवा में, चारों तीरथ होय।
मात-पिता को भूलकर, सुख ना पाता कोय।।

32. मन में जैसी भावना, भाव वही मुख आय।
लाख छिपाये ना छिपे, बिन बोले वाह जाय।।

33. तेरे कामों से बने तेरी इक पहचान।
अच्छे कामों से सदा, मिलता है सम्मान।।

34. नियति जिसे तू कह रहा वह करमों का भोग।
आज करे सो कल भरे, नियति करम का योग।।
35. राम नाम तू जप रहा, भीतर बैठे राम।
बात राम की मान ले, होते सारे काम।।
36. जैसा भी कर कर्म तू, यह तेरे आधीन।
किन्तु फलों के भोग में, सभी ईश आधीन।।
37. जो जाता हरि शरण में, उसका बेड़ा पार।
जो उस पर संशय करे, वही घिरे मझधार।।
38. सेवा जो निष्काम है, है उत्तम आचार।
जो फल की आशा करे वह समझो व्यापार।।
39. अलग-अलग पथ देखकर पथिक हुए हैरान।
मंजिल सबकी है वही इतना निश्चित् जान।।
40. इस कण-कण में वह बसा, दिखे नहीं आकार।
इसलिये कहते उसे, निराकार करतार।।
41. करे चित्र की वंदना, भक्त न उसको जान।
जो चरित्र को पूजता, उसको ज्ञानी मान।।
42. जो दुःख में आकुल नहीं, नहिं सुख में हरषाय।
सुख दुःख से जो दूर है, वह योगी कहलाय।।
43. करते पर उपकार जो, होता उनका नाम।
जग में पूजित है सदा मानव के शुभ काम।।
44. जो धन पेटी में पड़ा, वह तो है बेकार।
पर हित में जो धन लगे, उसका बेड़ा पार।।
45. शिल्पी पत्थर काटता, कहे उसे भगवान्।
ईश नहीं वह बन सके, पत्थर है बेजान।।
46. यदि तेरा यह आचरण, नहिं धरम अनुसार।
मूरख ऐसे धर्म को, दीजे तुरत बिसार।।

47. जो अपना हित भूलकर सोचे सबकी बात।
ऐसा ही नर जगत् में सदा संत कहलात।।

48. ज्ञाता चारों वेद का, था रावण विद्वान्।
किन्तु उसे भी ले मरा, उसका ही अभिमान।।

49. काम न ऐसे कीजिए, जिससे हो अपमान।
काम करो ऐसे सदा, जिससे हो सम्मान।।

50. जगत् समूचा घूम कर, बैठा थक कर चूर।
किन्तु मंजिल न पा सका, था खुद से मैं दूर।।

51. दिल का टुकड़ा दे दिया, करके कन्यादान।
बोल पिता क्या दे सके, इससे बढ़कर दान।।

52. हिन्दी भाषा देश की, इस बिन गूंगा देश।
पर भाषा के प्रेम ने किया स्वदेश विदेश।।

53. पत्थर के भगवान पर, सभी चढ़ाते फूल।
पर पीड़ित की राह से, चुने न कोई शूल।।

54. सोया वो फुट पाथ पर दिन भर करके काम।
जीवन तो मजदूर का मजबूरी का नाम।।

55. गीदड़ कूकर लोमड़ी कागा उल्लू स्यार।
चुनती है जनता जिसे, वही रचे सरकार।।

—नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
(विवेक सतसई)

(54) हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकरु सुधारि।
बरनऊं रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु क्लेश विकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।

जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।। 1।।

राम दूत अतुलित बल धामा।

अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।। 2।।

महावीर विक्रम बजरंगी।

कुमति निवार सुमति के संगी।। 3।।

कंचन बरन बिराज सुबेसा।

कानन कुण्डल कुंचित केसा।। 4।।

हाथ बज्र आरु ध्वजा बिराजै।

कौंधे मूँज जनेउ साजै।। 5।।

शंकर सुवन केसरी नन्दन।

तेज प्रताप महा जग वन्दन।। 6।।

विद्यावान गुनी अति चातुर।

राम काज करिबे बो आतुर।। 7।।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।

राम लखन सीता मन बसिया।। 8।।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।

विकट रूप धरि लंक जरावा।। 9।।

भीम रूप धरि असुर सँहारे।

रामचन्द्र के काज सँवारे ।। 10।।

लाय सजीवन लखन जियाये।

श्री रघुबीर हरषि उर लाये।। 11।।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।। 12।।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।

अस कहि श्रीपति कंठ लगायै ।। 13।।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।। 14।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोबिद कहि सके कहाँ ते।। 15।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।। 16।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना।
लंकेश्वर भये सब जग जाना।। 17।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।। 18।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं।। 19।।
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।। 20।।
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।। 21।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना।। 22।।
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपे।। 23।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै।। 24।।
नासें रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।। 25।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।। 26।।
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा।। 27।।
और मनोरथ जो कोई लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै।। 28।।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।। 29।।
साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।। 30।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता ।। 31।।
राम रसायन तुम्हारे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।। 32।।
तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुःख बिसरावै।। 33।।
अन्त काल रघुवर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।। 34।।
और देवता चित न धरई।
हनुमत सेई सर्व सुख करई ।। 35।।
संकट कटै मिटे सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।। 36।।
जय जय जय हनुमान गौसाई।
कृपा करहु गुरुदेव की नाई।। 37।।
जो सत बार पाठ कर कोई।
छुटहि बंदि महासुख होई।। 38।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।। 39।।
तुलसी दास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।। 40।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

—तुलसीदास

(55) आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करें।। ॐ।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का ।। प्रभु०।।
सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ।।
माता-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।। प्रभु०।।
तुम बिन और न दूजा, असा करूँ जिसकी।। ॐ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।। प्रभु०।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।। प्रभु०।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता।। ॐ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।। प्रभु०।।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति।। ॐ।।
दीनबन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे।। प्रभु०।।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ।।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।। प्रभु०।।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ॐ।।
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा।। प्रभु०।।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा।। ॐ।।

—श्रद्धाराम फुलोरी

(56) यज्ञ-प्रार्थना

यज्ञ स्वरूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।। 1।।
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे शोक-सागर से तरें।। 2।।
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दे संसार को।। 3।।
नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें।। 4।।
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की।। 5।।
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हो शुभ-गंध को धारण किए।। 6।।
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेम-पथ विस्तार हो।
इदं न मम का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।। 7।।
हाथ जोड़ झुकाएं मस्तक वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणारूप! करुणा आपकी सब पर रहे।।8।।

—पं० लोक नाथ तर्क वाचस्पति

(57) मुश्किल है

जिस देश में गंगा-दर्शन से, पाप सभी धुल जाते हैं।
उस देश में बढ़ते अपराधों पर, रोक लगाना मुश्किल है।
जहाँ हज़ारों मत-पंथों की, थोक दुकानें चलती हों।
वहाँ एकता के गीतों पर, ढोल बजाना मुश्किल है।
जहाँ हाथों की रेखायें ही, क़िस्मत के फैसले करती हैं।
वहाँ कर्मशीलता, पौरुष का, पाठ पढ़ाना मुश्किल है।
जहाँ सोमनाथ महादेव खुद, नेत्र तीसरा खोलता है।
वहाँ आक्रमणकारी दुष्टों को, सबक सिखाना मुश्किल है।
जिस देश में ईश्वर ग्वाला बनकर, गोपियों के संग रमण करे।
वहाँ चरित्र की उज्ज्वलता के, दर्शन पाना मुश्किल है।
जहाँ सात दिवसीय भागवत्, से मोक्ष द्वार खुल जाता है।
वहाँ वेदों के अध्ययन का, शौक जगाना मुश्किल है।
साधारण जन बनकर ईश्वर, जिस देश में पूजे जाते हैं।
उस देश में सच्चे ईश्वर का, स्वरूप बनाना मुश्किल है।
जिस देश में त्यागी संन्यासी, धन के ढेरों पर सोते हों।
उस देश में भोले भक्तों को, सन्मार्ग दिखाना मुश्किल है।
जिस देश के नेता अधिकारी, ईश्वर बेचकर खाते हैं।
दुनियाँ के नक्शे में उसकी, पहचान बनाना मुश्किल है।

अंकुर अरोड़ा,
आदर्श नगर, रोहतक

(58) सत्यार्थप्रकाश

प्राणों से भी बढ़कर प्यारा है, सत्यार्थप्रकाश

मोह महातम हरने वाला, ज्ञान उजाला करने वाला।
भव्य-भावना भरने वाला, दिव्य ज्योति का सितारा।
शुभ सन्मार्ग दिखाया इसने बुद्धिवाद जगाया इसने।
गुरुडम का गढ़ ढाया इसने जग में निर्भय भाव प्रकाश।
सोता देश जगाया इसने, आर्ष प्रवाह बहाया इसने।
स्वावलम्बन सिखाया इसने, सत्य धर्म बताया इसने।
वैदिक धर्म ध्वजा फहराह बलिवेदी पर शीश चढ़ाएं।
मरते-मरते गाते जाएं सत्यार्थप्रकाश हमारा।
अजर-अमर-अक्षय है विचारों की ध्रुव धारा।

—डॉ० हरिशंकर शर्मा

लेखक द्वारा प्रकाशित एवं निःशुल्क वितरित पुस्तकों की सूची :–

1. रामचरितमानससार
2. गीतासार
3. उपनिषद्सार
4. सत्यार्थप्रकाशसार
5. भक्ति
6. सुखीजीवन
7. आत्मबोध
8. वेदवाणी
9. वैदिकसाहित्य
10. अमृतवाणी
11. महर्षि दयानंद
12. स्वामी विवेकानंद
13. शरणागति
14. वैदिक रामायण
15. क्या आप जानते हैं ?

लेखक द्वारा अप्रकाशित पुस्तकों की सूची :–

1. वैदिक उपनिषद्वाणी
2. वैदिक दर्शनवाणी
3. वैदिक महाभारत
4. वैदिक गीता
5. अमर धर्मग्रंथ
6. अमर नीतिग्रंथ
7. पुराणपरिचय
8. ईश्वरसिद्धि
9. राष्ट्रभाषा हिन्दी
10. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम
11. महावीर हनुमान
12. योगिराज श्रीकृष्ण
13. आदिशंकराचार्य
14. आचार्य चाणक्य
15. दस गुरु
16. आर्यसमाज के महामानव
17. स्वामी रामतीर्थ
18. संस्कार
19. शेर-ओ-शायरी
20. गीतांजलि
21. आर्यसमाज
22. ओ३म्
23. गायत्रीरहस्य
24. ज्ञानामृत
25. यज्ञ
26. संत
27. संतवाणी
28. सामान्य हिन्दी (भाग I-II) (सब कक्षाओं के लिये)
29. **Great Thoughts**
30. **General English (Part I to V) (For All Classes)**